मेरा हिन्दी साहित्य में योगदान



डाक्टर दयाल "आशा"

मेरा हिन्दी साहित्य में योगदान

लेखक

डॉ. दयाल कोटूमल धामेजा "आशा"

पूर्व प्राचार्य एवं सिन्धी भाषा विभाग अध्यक्ष,

चाँदीबाई हिमथमल मन्सुखाणी कालेज,

उल्हासनगर – ४२१००३.

निवास स्थान

स्वामी शान्तिप्रकाश निवास

निजधाम मार्ग, उल्हासनगर – ४२१००५

प्रथम संस्करण : नवम्बर २०१७ मूल्य : २००/–

प्रकाशिका

डॉ. शीला आहूजा

शेराँवाली पैलेस, ४०२,

उल्हासनगर – ४२१००२

सादर समर्पित

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज
राष्ट्रीय कवि श्री हून्दराज दुखायल
एवं
आचार्य डॉ. सी एल प्रभात
के श्री चरणों में

दयाल "आशा"

आर्शीवाद

साहित्य सिन्धोरधिकानि रत्ना, न्यादाय भाषा शुचि सिन्धु देशात् ।
ग्रन्थो दयालु कवि प्रणीतः, सदा समाजस्य हिताय भूयात् ।।
सिन्धी भाषा महारत्नं, हिन्दी भाषा ऽऽ मयायुतम् ।
भारतांगण सौलभ्यात् लोक मौलिषु राजते ।।

महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी विद्यानन्दजी महाराज उदासीन

टाईप सेटिंग

कु. मीरा चावला, उल्हासनगर, फोन : 9822117383

*

प्रिंटिंग व कवर

श्रीमती शोभा राम लालचन्दाणी,
माहीम, मुम्बई – १६
फोन : 9322510668

प्रकाशिका की ओर से

डॉ. दयाल आशा सिन्धी और हिन्दी साहित्य जगत् के शिरोमणी रचनाकार हैं। कर्म से योगी, श्रीमती चाँदीबाई हिम्मथमल मनसुखाणी महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य, स्वभाव से संत, सिन्धी लेखकों में मूर्धन्य, प्रसिद्ध समाज सेवी डॉ. दयाल आशा, बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वे महाराष्ट्र राज्य सिन्धी साहित्य अकादमी परिषद् के कार्याध्यक्ष रह चुके हैं।

डॉ. दयाल आशा ने सिन्धी में ६४ पुस्तकें लिखी हैं। हिन्दी में उन्होंने १७ पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा उन्होंने २ पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया है। उनकी साहित्यिक सेवाओं को सम्मानित करते हुए भारत सरकार ने उन्हें १९६८–६९ में सम्मानित किया। राष्ट्रीय सिन्धी विकास परिषद् ने भी उन्हें एक लाख रुपये की राशि देकर सम्मानित किया है। अनेक संस्थाओं तथा महाराष्ट्र राज्य सिन्धी अकादमी की ओर से उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

सिन्धी और हिन्दी भाषाओं पर एक समान अधिकार रखने वाले डॉ. दयाल आशा जी की यह पुस्तक उनकी हिन्दी रचनाओं पर प्रकाश डालती है। साहित्य अध्येताओं, विद्वानों एवं विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण आलोक ग्रंथ है।

डॉ. दयाल आशा की यह विनम्रता ही है कि हिन्दी में पी.एच.डी करने तथा हिन्दी में १७ पुस्तकें लिखने के बावजूद भी वे स्वयं को हिन्दी का विद्वान नहीं बल्कि एक विद्यार्थी ही मानते हैं। मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. सी.एल. प्रभात के मार्गदर्शन में पी.एच.डी करने के पश्चात डॉ. दयाल आशा ने साहित्य सेवा का कार्य सतत् रूप से किया है। प्रस्तुत पुस्तक "मेरा हिन्दी साहित्य में योगदान" इसी श्रृंखला की अप्रतिम कड़ी है। उनकी महत्त्वपूर्ण रचना 'उपहार' की समीक्षा करते हुए वरिष्ठ समीक्षक श्री राजेन्द्र मिश्र ने सत्य ही लिखा है कि वे सरस्वती के वरद पुत्र, लेखनी के धनी, वाणी के आराधक, साहित्य के साधक, समाज के बंधु एवं राष्ट्रप्रेमी हैं। मेरे गुरु एवं पिता तुल्य डॉ. दयाल आशा की इस कृति का प्रकाशन मेरे लिए परम सौभाग्य का अवसर है।

डॉ. शीला आहुजा

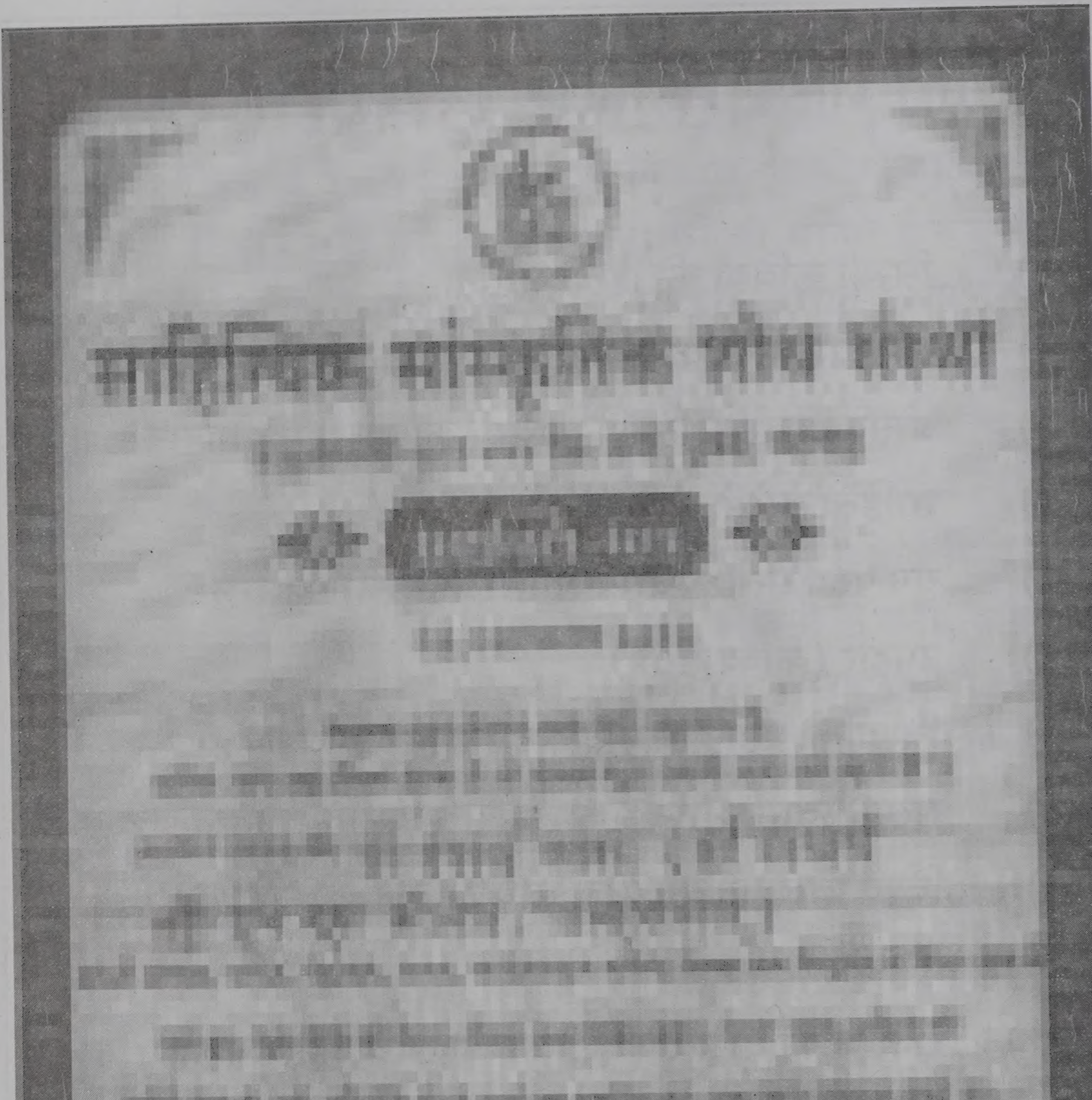
उप प्राचार्या एवं एसोसिएट प्राध्यापिका,

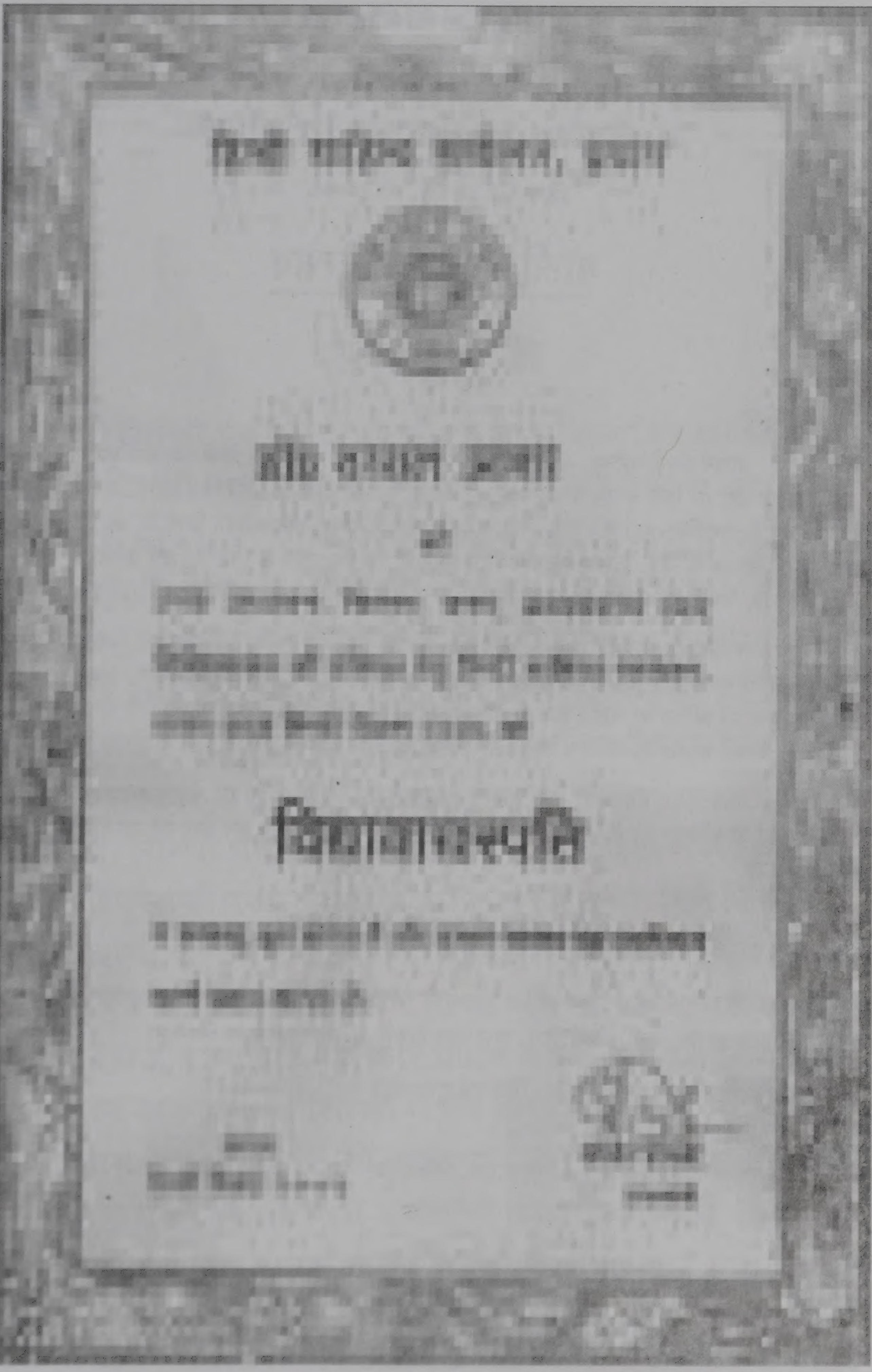
श्रीमती सी.एच.एम. महाविद्यालय,

उल्हासनगर

मेरी हिन्दी कृतियां

१) सिन्धी कवियों की हिन्दी साधना
२) स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज व्यक्तित्व एवं काव्य दर्शन
३) बीसवीं शती के सिन्धी कवियों का हिन्दी में योगदान
४) साहित्य सुरभि
५) युग पुरुष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज
६) उपहार (काव्य संग्रह)
७) विश्व की महान विभूति दादा जशन वासवाणी
८) सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सचित्र जीवन झलकियां
९) विश्व विख्यात युग पुरुष साधु टी.एल. वासवाणी
१०) सिन्धी संत
११) दादा जशन वासवाणी जीवन की सचित्र झलकियां
१२) सिन्ध के कबीर स्वामी टेऊँराम महाराज एवं उनके परम्परा के संत कवि
१३) परिगुंठित पुष्प
१४) आओ मिलकर गाएं – बाल गीत
१५) स्वामी देवप्रकाश जी महाराज जीवन चरित्र
१६) वंदना के स्वर (भक्ति काव्य)
१७) स्वर्ण विचार – हिन्दी अनुवाद स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज
१८) आज का विचार – हिन्दी अनुवाद दादा जशन वासवाणी




विद्यावाचस्पति

भारतीय भाषा परिषद, डोंबिवली.

१८, अंबिका निवास, मॉडेल इंग्लिश स्कूल के पीछे, पांडुरंग वाडी,
डोंबिवली (पूर्व)-४२१ २०१.
फोन : ८८ ३६ २१, ८८ ३० ५८.

बोली-बरखा महोत्सव

श्री. दयाल आशा

महोदय,

आपने अपनी प्रतिभा, अध्यवसाय, श्रम, संकल्प तथा समर्पण से सिंधीभाषी होते हुए भी हिंदी की, एवं हिंदी के रुप में राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा की जो अपूर्व सेवा की है, समाज उससे लाभान्वित हुआ है। हिंदी साहित्य में आपने जो प्रचुर एवं श्रेष्ट लेखन किया है, वह देश एवं समाज के लिए, जनसाधारण के लिए शुभकारी एवं मंगलकारी है। वह देश की जनता के सुखी, संपन्न एवं प्रसन्न भविष्य के निर्माण के पथ का दिशानिर्देशक मंगलदीप है।

साहित्य के साथ ही आपने शिक्षा के क्षेत्र की जो दीर्घकाल तक महती सेवा की है, वह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से आपने ज्ञान, संस्कृति एवं सुरुचि के निर्माण, प्रचार, प्रसार एवं प्रतिष्ठा का महान कार्य सुसंपन्न किया है। अपनी विनम्रता तथा सौम्यता के माध्यम से आपने समाज को व्यक्तित्व के श्रेष्ठ रुप के दर्शन कराये हैं।

आपकी इन सेवाओं के आगे समाज नतमस्तक है। यद्यपि आपके इस महान अवदान का कोई भी प्रतिदान हो ही नहीं सकता, तथापि कृतज्ञता ज्ञापन स्वरुप हम आप को अपने इस मंचसे

सारस्वत सम्मान

से विभूषित करते हुए अत्यंत प्रसन्न हैं। इस अवसर पर सविनय प्रणामपूर्वक हम आपके स्वस्थ, सुखी, कर्मशील, सृजनरत दीर्घायु की मंगल कामना करते हैं।

। आपके गुणमुग्ध प्रशंसक, मित्र एवं शुभाकांक्षी !

(आलोक भट्टाचार्य)	(एस.एस. विश्वामित्र)	(डॉ. उषा. यादव)
अध्यक्ष	संयोजक	महासचिव

हिंदी दिवस २००२, डोंबिवली.

स्वानुभूति

सिन्धी एवं हिन्दी भाषाएं मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। मैं सिन्धी भाषी होते हुए भी वर्षों से हिन्दी के साथ जुड़ा हुआ हूँ। मेरी मातृभाषा सिन्धी मेरी एक आंख है तो राष्ट्र भाषा हिन्दी मेरी दूसरी आँख है। सिन्धी भाषा में मैंने करीब ६४ पुस्तकें लिखी हैं। सिन्धी साहित्य में आजीवन योगदान के लिए भारत सरकार के राष्ट्रीय सिन्धी विकास परिषद् ने सन् २०१२ में एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान कर सन्मानित किया, इसके पूर्व भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, सिन्धी भाषा विकास परिषद विभिन्न वर्षों में मेरे विभिन्न सिन्धी पुस्तकों पर पुरस्कार प्रदान कर मुझे सन्मानित किया है। प्रियदर्शनी की ओर से मुझे २५ हज़ार रुपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। डॉ. राम बख्शाणी ने भी मुझे २० हज़ार रुपये का ईश्वरी बाई बख़्शाणी पुरस्कार प्रदान कर सन्मानित किया है। साहित्य अकादमी ने सिन्धी में मेरे आजीवन बाल साहित्य में योगदान के ५० हज़ार रुपये पुरस्कार प्रदान कर सन्मानित किया है। महाराष्ट्र राज्य सिन्धी अकादमी की ओर से मार्च २०१६ में मुझे जीवन गौरव एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान कर

सन्मानित किया। दो बार मुझे स्वर्ण पदक, एक बार उल्हासनगर में और दूसरी बार पिम्परी में देकर सन्मानित किया गया। मुझे सन् १९८३ में उल्हासनगर में मिस्त्री में तोलकर वह मिस्त्री बांटी गई। सितम्बर २०१६ में मुझे शिवशक्ति सखी संत आसूदाराम आश्रम लखनऊ में सिक्कों से तोला गया। राष्ट्रपति जायलसिंघ ने राष्ट्रपति भवन में मुझे शील्ड प्रदान करके सन्मानित किया। समाज सेवा के लिये मुझे विभिन्न नगरों में सन्मानित किया गया।

हिन्दी भाषा में मेरी १९ पुस्तकें प्रकाशिति हुई हैं। उनमें से मुझे चार पुस्तकों पर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। सन् १९७८ ई. में भारत सरकार के केंद्रीय हिन्दी निदेशालय ने 'सिन्धी कवियों की हिन्दी साधना' और १९८६ में फिर 'साहित्य सुरभि' पुस्तक के लिये पुरस्कार प्रदान किये। सन् १९८८ में साहित्यक कुंभ में माता कुसुम कुमारी हिन्दीतर भाषी साधक पुरस्कार प्राप्त विद्वान 'बीसवीं शती के सिन्धी कवियों का हिन्दी में योगदान' पुस्तक के लिये पुरस्कार दिया।

सन् २००१ में महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी ने मुझे काका कालेलकर पुरस्कार तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री विलासराव देशमुख द्वारा दिया गया। उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ की ओर से मेरे हिन्दी साहित्या योगदान के लिए सन् २००१ में मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महावीर भाई के हाथो सौहृद पुरस्कार प्रदान कर सन्मानित किया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से सन् २००६ में मुझे 'विद्या वाचस्पति' की उपाद्धि प्रदान की गई। विभिन्न वर्षों में अणुव्रत

समिति की ओर से मुझे दो बार तुलसी सारस्वत सम्मान पुरस्कार प्रदान कर सन्मानित किया गया ।

विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया, उस कवि सम्मेलन में मैंने काव्य पाठ किया । जयहिंद कालेज - मुम्बई, सोम्या कालेज - विद्याविहार मुम्बई के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. वंशोधर ने कवि सम्मेलन आयोजित किया, उस कवि सम्मेलन में भी मैंने भाग लिया, सरस्वती कुमार दीपक ने महात्मा गांधी स्मारक मुम्बई की ओर से कवि सम्मेलन आयोजित किया उस में भी मैंने भाग लिया । अन्य कई हिन्दी कवि सम्मेलनों में मैंने कविता पाठ किया । हिन्दी दिवस के उपलक्ष में मध्य रेल्वे मुम्बई के हिन्दी सम्मेलन में भी भाग लिया । १७ फरवरी १९८८ में नासिक में अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन में भी मैंने काव्य पाठ किया ।

विभिन्न अवसरों पर मेरे लेख ‘नवभारत टाइम्स’, ‘जन सत्ता’, ‘नव भारत’, ‘आज का आनंद’, अभ्युदय’, ‘दिल का द्वार खोल’, ‘प्रेम प्रकाश संदेश’, ’सिन्धु केसरी’, स्वामी शान्तिप्रकाश संदेश’, मेहरान’ ‘कल्याण’ आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं । मैंने कई बार हिन्दी संगोष्टियों में भाग लिया है ।

आकाशवाणी मुम्बई, विविध भारती, आकाशवाणी पुणे, आकाशवाणी जयपुर से मेरी हिन्दी वार्ताऐं प्रसारित हुई हैं । मेरे हिन्दी भजन मेरी आवाज में आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों व विविध भारती से प्रसारित होते हैं । मैं गीतकार के साथ साथ गायक भी हूँ ।

मुम्बई से प्रकाशित नवभारत टाइम्स ने २८ मार्च १९९३ अंक में मेरे संबंध में लिखा :- पुरस्कार योग्यता का एक पैमाना भी है और प्रसिद्धि की ओर एक डग भी। परन्तु योग्यता व प्रसिद्धि दोनों पाकर भी न इतराने वाले कम ही होते हैं। उल्हासनगर के चाँदीबाई हिम्मतमल मनसुखाणी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दयाल "आशा" भी इनमें से एक हैं। डॉ. आशा को उनकी पुस्तक "ॿारो अचो त ॻायूं" के लिए राष्ट्रीय शिक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने पुरस्कृत किया है।

संस्कृत व सिन्धी के उद्भट् विद्वान भारतीय संत परम्परा के ध्वज वाहक, प्रवचनकर्ता, लेखक, समाजसेवी डॉ. "आशा" के कई परिचय हैं।

प्राचीन ऋषिकुल परम्परा में उनकी अदम्य निष्ठा उनके आचार - व्यवहार में अनुप्रमाणित है। वे जनता-जनार्दन परिषद के संस्थापक सदस्य तथा देश भर की दानदात्री संस्थाओं में प्रमुख पदों से जुड़े हैं।

महानगर ही नहीं, देश भर में फैले सिन्धी समाज के स्नेह और सम्मान के पात्र डॉ. दयाल आशा निर्धन विद्यार्थियों, बेसहारा महिलाओं व अनाथ बच्चों की आशा हैं।

मैं हिन्दी का विद्वान नहीं, एक विद्यार्थी हूँ, हिन्दी का सेवक हूँ। राष्ट्रीय लिपि देवनागरी का समर्थक हूँ, मैंने स्वान्तः सुखाय साहित्य का सृजन किया है। मैंने हिन्दी में करीबन १७ पुस्तकें लिखी हैं और दो पुस्तकें हिन्दी में अनुवाद की हैं, उनका संक्षेप में सर्वेक्षण प्रस्तुत करता हूँ।

सिन्धी कवियों की हिन्दी साधना

उपर्युक्त ग्रन्थ मेरा शोध प्रबंध है। मुम्बई विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग अध्यक्ष श्रद्धेय डॉ. सी.एल. प्रमात मेरे मार्गदर्शक थे। मेरे शोध ग्रन्थ का नया विषय था, इस लिए मुझे बहुत ही परिश्रम करना पड़ा। खोज करने के लिए मुझे अहमदाबाद में श्री बूलचन्द राजपाल के पास गया। वे सिन्ध में 'सिन्धु पत्रिका के सम्पादक थे। मैंने सिन्ध में प्रकाशित 'सिन्धु' पत्रिकाओं से उपर्युक्त विषय के सम्बंध में जानकारी प्राप्त की। मैं ब्रजभूमि भी गया वहाँ ब्रह्मलीन महाराज बसंतराम ने भक्ति साधना करते हिन्दी में 'कृष्णायन' की रचना की। मैंने इस काव्य ग्रन्थ का अध्ययन किया। सिन्धी भाषी होते हुए भक्त बसंतराम महाराज ने शुद्ध हिन्दी काव्य की रचना की। यह ग्रन्थ अति अमूल्य देन है। मैं डेकन कालेज पुणे में डॉ. प्ररसो गिदवाणी के पास भी गया। उनसे भी कुछ जानकारी प्राप्त की। उनके अप्रकाशित शोध ग्रन्थ का भी अध्ययन किया।

उल्हासनगर में सद् ग्रहस्थी संत टीजाराम ब्रजवाणी के पास सन् १९०४ में प्रकाशित एक पुस्तक थी जिस में संत रोहल, उनकी परम्परा के कवियों की वाणी थी। उसका भी मैंने अध्ययन किया। डॉ. दशरथराज की पुस्तक संत रोहल की बाणी का भी अनुशीलन किया। मैं सामग्री एकत्रित करने के लिए विभिन्न पुस्तकाल्यों में गया।

रात के १-२ बजे तक विभिन्न पुस्तकों व ग्रन्थों का अध्ययन कर शोध प्रबंध लिखता था। मेरे मार्गदर्शक डॉ. सी.एल. प्रभात मेरा मार्गदर्शन करते रहे। चांदीबाई मन्सुखाणी कालेज, उल्हासनगर में पढ़ाकर फिर दुपहर को मैं मुम्बई विश्व विद्यालय मुम्बई में अपने मार्गदर्शक के पास जाता था। डॉ. रामसकल शर्मा, डॉ. दशरथसिंघ, डॉ. कपूर भी मेरा उत्साह बढ़ाते रहे। शोध प्रबंध लिखना बड़ी कठिन तपस्या थी। उन दिनों यू जी सी की ओर से कोई सुविधा नहीं थी। आज कल तो पी एच डी करने के लिए दो वर्ष छुट्टी मिलती है। कुछ ईर्षालु मेरे मार्गदर्शक के पास जाकर मेरे विरुद्ध कान भरते थे कि वे मुझे निराश करें, किन्तु मेरे मार्गदर्शक बड़ी निष्ठा के साथ मुझे उत्साहित करते मार्गदर्शन करते रहे। प्रभु की अनुकम्पा, गुरूदेव स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं दादा जशन वासवाणी के आशीर्वाद से सफलता मिली, मुझे पी एच्छ डी की उपाधि से सन्मानित किया गया। यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ।

मेरे सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने उपर्युक्त ग्रन्थ के लिए आशीर्वाद देदे हुए लिखा :-

सिन्धी संतों की हिन्दी के प्रति सहज ममता रही है।

मध्य युग से लेकर आज तक लगातार सिन्धी संत महात्मा कीर्तन - भजन के अवसर पर सिन्धी पदों के साथ एक दो हिन्दी पद या दोहे गाते आ रहे हैं । कुछ सिन्धी संत कवियों ने सिन्धी के साथ हिन्दी में भी काव्य रचना की है । संतों ने प्रांत या भाषा का भेद कभी स्वीकार नहीं किया । लोक कल्याण की व्यापक भावना से अभिभूत इन संतों की हिन्दी वाणी का विवेचनात्मक अध्ययन, मेरे परम प्रिय दयाल आशा ने अपने शोध-प्रबंध 'सिन्धी कवियों की हिन्दी साधना' में प्रस्तुत किया है । संतों महात्माओं के प्रति दयाल आशाजी के मन में अगाध प्रेम एवं श्रद्धा है । इन्होंने सिन्धी संतों के जीवन-वृत्त के साथ साथ उनके काव्य का दार्शनिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन भी किया है । मैं दयाल आशाजी को धन्यवाद देता हूँ कि इन्होंने विस्मृत कवियों की देन को प्रकाश में लाया है ।

सिन्ध के कतिपय संतों की ज्ञान-समन्वित राग-भावना को निर्गुण भक्ति कह सकते हैं, जिसका उन्होंने हिन्दी काव्य द्वारा सिन्ध में संचार कर अपने परवर्ती निर्गुणी संतों का पथ प्रशस्त किया । कुछ सिन्धी संत कवियों ने भगवान श्री कृष्ण का लीलागान भी किया है । उनके पदों में राधा एवं कृष्ण के लीलावर्णन में हिन्दी के कृष्ण-काव्य परंपरा की झलक मिलती है ।

सिन्धी संतों की हिन्दी वाणी के अध्ययन की कतिपय उपलब्धियों का इस शोध-प्रबंध में समावेश है, जो हिन्दी साहित्य में स्थान पाने योग्य है ।

मुझे आश है कि परमात्मा की अनुकम्पा एवं संतों की

कृपा से दयाल आशाजी दीन दुखियों की सेवा करते हुए साहित्य-गगन में भी उदीयमान होंगे ।

महान विभूति दादा जशन वासवाणी जी ने आशीर्वाद करते हुए लिखा :-

गोधूलि की वेला थी, वर्षा की बूंदाबूंदी हो रही थी । मैं पूजनीय दादा वासवाणी की श्रीचरणों में एक वाटिका में बैठा था । दादाजी के कमल मुख की ओर देखा । मैंने प्यारे दादाजी से पूछा कि इस समय आप के अन्तःकरण में क्या विचार उठ रहे हैं? दादाजी ने कहा कि अब मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हो रहा कि अब भारत को वक्ताओं की आवश्यकता नहीं, अपितु शान्तचित्त एवं विनम्र कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है, जिनके जीवन में सादगी है और जिनके मन में पिपासा है कि दरिद्र एवं निराश्रितों के विनम्र सेवक बन कर रहें ।

प्राध्यापक डॉ. दया आशा एक ऐसा व्यक्ति है, जो अधिक बातें नहीं करता शांत भाव से कर्तव्य-परायणतापूर्वक कर्म कर रहा है । शांतचित्त एवं विनम्र है । इसके जीवन में सादगी चमक रही है । इस के मन की प्यास है कि दरिद्र-दुखियों की सुश्रूषा में जीवन व्यतीत हो । इसके मनमें विद्यार्थियों एवं ग्रामीणों के प्रति अगाध स्नेह है । कितनी तन्मयता के साथ उनकी सेवा करता है । समय बचाकर सुंदर हृदयद्राविक कविताएँ लिखता है और शिक्षाप्रद साहित्य का सृजन करता है । सिन्धी भाषा एवं हिन्दी भाषा का विद्धान है । मैं हिंदी तो इतनी नहीं जानता हूँ परंतु मैं यह बात तो जानता हूँ कि प्रा. दयाल आशा के मन में मातृभूमि, संतों, दरवेशों की भूमि सिन्ध के प्रति स्नेह है, प्रेम है, श्रद्धा है ।

सिन्ध ने कतिपय कवियों को जन्म दिया है जिनकी विश्व के महान् कवियों के साथ तुलना की जा सकती है। सिन्धी कवियों का उदात्त भावनाओं से ओत-प्रोत संदेश न केवल सिन्ध के लिए है परंतु भारत, निसंदेह संपूर्ण विश्व के लिए है। कुछ सिन्धी कवियों ने हिन्दी में काव्य साधना की है। यह आवश्यक है कि भारत इस विपुल निधि से परिचि हो। इस लिए मैं इस सुंदर ग्रंथ का अभिनंदन करता हूँ। इस पुस्तक से भारतीय जनता को ज्ञात हो कि सिन्धी अन्तःकरण कितना उजागर है; सिन्धी कवियों के गीतों में कितनी अगाध प्यास है परमात्मा के लिए। इस पुस्तक पर सदैव संतों महात्माओं का आशीर्वाद चमकता रहे।''

मेरे मार्गदर्शक डॉ. सी एल प्रभात ने इस ग्रन्थ का आमुख लिखते हुए लिखा है :-

कबीर, सूर, तुलसी, प्रेमचन्द और प्रसाद आदि हिन्दी प्रदेश के महान रचनाकारों ने हिन्दी को साहित्य की श्रेष्ठतम उपलब्धियों से गौरवान्वित किया है, पर उसे अखिल भारतीय अस्मिता देने का श्रेय हिन्दीतर प्रदेश के कवियों और लेखकों को ही है। यदि अहिन्दी प्रदेश के ये संत और मनीषी और वहाँ का जन समुदाय अपनी साधना का अर्घ्य उसे न देते, तो साहित्यिक ऊँचाइयों के बावजूद उसे वह व्यापक राष्ट्रीय व्यक्तित्व नहीं मिलता जिसके कारण वह आज केन्द्र की राजभाषा के पद पर आसीन है। असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के नामदेव, पंजाब के गुरु नानक, गुजरात के भालण, केरल के स्वातितिरूनाल आदि कितने ही नाम हैं, जिन्हें हिन्दी का इतिहास सदैव कृतज्ञता पूर्वक याद रखेगा।

हिन्दीतर प्रदेशों में भी हिन्दी के विकास में सब से अधिक योग पश्चिमांचल का है, जिसके अंतर्गत महाराष्ट्र तथा गुजरात के अतिरिक्त सिन्ध का वह भूभाग भी आता है, जो इस देश की प्राचीनतम सभ्यता के जन्म देने के श्रेय के बावजूद, सांस्कृतिक चेतना की अपनी मूल धरती से टूट जाने के लिए अभिशप्त है और भूगोल की दृष्टि से विच्छिन्न होनेपर भी जहाँ के कर्मठ निवासियों ने अपने सांस्कृतिक उत्तराधिकार को विलुप्त नहीं होने दिया है । यह प्रदेश हिन्दी के संत साहित्य के आदिकाल से ही उसे अपनी रचनात्मकता से संपन्न करता रहा है । कबीर से बहुत पहले यहाँ 'सधना' कसाई नामक संत हिन्दी में अलख जगा रहे थे । (कहा जाता है ये एलोरा की कंदराओं के निकट नामदेव से मिले थे ।) इसमें अतिशयोक्ति नहीं है कि हिन्दी संत काव्य के प्रवर्तन का श्रेय मराठीभाषी नामदेव और सिन्धी भाषी सधना को ही है । ये ही लोग वस्तुतः गोरखनाथ और कबीर के बीच की कड़ी हैं । इन्हीं लोगों ने नाथों और वैष्णवों की अतिवादिताओं के बीच एक ऐसे नये मार्ग का संकेत दिया था, जिसका कमिटमेंट किसी संकुचित सांप्रदायिक आचार-संहिता से नहीं था, जिन्होंने भक्ति, प्रेम और अन्तः साधना की धाराओं को एकत्र कर दिया था और जो मूलतः अपनी अनुभूति की प्रामाणिकता और समाजिक जीवन के रूढ़िहीन मूल्यों से जुड़े थे और सुख-सुविधाओं के लिए समझौता किए बिना संघर्ष कर रहे थे ।

सधान का इतिहास अभी पूरी तरह प्रकाश में नहीं आया है । मुझे प्रसन्नता है कि डॉ. दया आशा ने एक ईमानदार अन्वेषक

की तरह इस संदर्भ में उपलब्ध तथ्यों को निःसंकोच अपनी बात कहने की स्वतंत्रता दी है। पर सधना के पश्चात् सिन्धी रचनाकारों की एक लंबी परंपरा है, जो अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त हिन्दी में भी लिखा करते थे। शाह लतीफ, सच्चल सरमस्त और सामी, संत साहित्य के ही नहीं, समूचे सिंधी साहित्य के 'वृहद्-त्रयी' कहलाते हैं। इनका युग सिंधी काव्य का 'स्वर्णयुग' माना जाता है। सिंधी में इन की वही स्थिति है जो हिन्दी में कबीर, सूर और तुलसी की है। इन तीनों में भी सच्चल सब से अधिक विद्रोही कवि थे। ये प्रेम के पुजारी थे और समाज की विगलित परंपराओं पर कबीर की सी दुर्दम्य मस्ती के साथ आघात करते थे। मधुर वाणी के इस 'डिक्टेटर' ने सौ से अधिक दोहे, सोरठे और पद हिन्दी में लिखे हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि सच्चल की भाषा आज की भाषा (खड़ीबोली) के बहुत निकट है। ''सज्जन प्याला प्रेम का, मुझको पिला दिया'' या 'आज खिर मेरे विरह बारात लाया है' जैसी पंक्तियाँ खड़ीबोली की व्यापक और लम्बी परम्परा का प्रमाण देती है और उन दुराग्राही लोगों के अनर्गल प्रचार का स्पष्ट उत्तर है जो इसके इतिहास को एक दो शती में समेट कर फतवे देते हैं। सिन्धी के और भी बहुत से कवि हैं - रोहल, मुराद, शाहो, गुलामअली, दरयािखान आदि जिनकी रचनाएँ हिन्दी में मिलती हैं। ये लोग कहलाते तो सूफी थे, पर इन्होंने संत सधना और अद्वैत वेदान्त को स्वीकार किया था और साहित्यिक धरातल पर ये राग रागनियों तथा भारतीय छंद-विधान को लेकर चले थे। इन्होंने आदमी के ऊपर लगे जाति, वर्ग, संप्रदाय

के लेबिल फाड़ दिए थे और किताबी ज्ञान की जगह अनुभति की ईमानदारी को स्थापित करते हुए कहा था कि हमें धर्मात्मा बनना है, धर्मशास्त्री नहीं ।

साहित्य और धर्म के मीनारों में ये नहीं रहे । निरंतर अंधेरे और भटकाव की शक्तियों के साथ संघर्ष करते हुए जिंदगी को अपनी शर्त पर जीते रहे । वास्तव में यह कोई मामूली बात नहीं थी । शुद्ध कला की दृष्टि से इनकी रचनाओं का मूल्य कुछ भी हो, जीवन की एक जुझारू प्रगतिशील परंपरा की कड़ी के रूप में इनका महत्त्व कभी कम नहीं होगा ।

यह परंपरा बहुत लंबी है । इस क्षेत्र में दो-चार कवियों पर कुछ काम हुआ था, पर एक विशाल काव्य-धारा अंधकार में पड़ी थी । मैं बहुत दिनों से किसी ऐसे अन्वेषक की तलाश में था जो सिन्धी और हिन्दी दानों का अधिकारी विद्वान हो और समर्पित भाव से इस कठिन कार्य को संपन्न करे । वस्तुतः मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि प्रो. दयाल 'आशा' ने यह कार्य बड़ी लगन औ परिश्रम के साथ पूरा किया है । विनम्रता की प्रतिमूर्ति डॉ. 'आशा' बहुत व्यवस्त, लोक-सेवा और सामाजिक कार्यों में आकंठ डूबे हुए कर्मठ व्यक्ति हैं । फिर भी, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र को इन्होंने कभी उपेक्षित नहीं होने दिया है । सिन्धी पुस्तकों पर प्राप्त अनेक सरकारी और असरकारी पुरस्कार, रेडिओ के कार्यक्रम और प्रकाशित पुस्तकों की लंबी सूची इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के प्रबल प्रमाण हैं । इनका प्रस्तु शोध-प्रबंध भी इनकी समर्पित साहित्यनिष्ठा का ही परिणाम है । यह अपने क्षेत्र का प्रथम ग्रंथ है । इसकी वे सब सीमाएं हैं, जो एक 'पायोनियर

ग्रंथ' की होती हैं, पर इसके द्वारा सिन्ध के हिन्दी-काव्य को विस्तार से और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का पहली बार प्रयास हुआ है और इसका श्रेय डॉ. दयाल आशा को है।

मुझे आशा है कि प्रो. दयाल इस श्रेत्र में अपने शोध कार्य को आगे अवश्य बढ़ाएंगे, और इस धारा के शेष इतिहास को भी शीघ्र ही पूरा करेंगे।

डॉ. सी.एल. प्रभात

भारतीय भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. प्रभाकर माच्छवे ने 'सिन्धी कवियों की हिन्दी साधना' के सम्बंध में लिखा "डॉ. दयाल आशा ने इस शोध ग्रंथ में बड़े परिश्रमपूर्वक और लगन के साथ सिन्ध के १९ शती तक के संतों भक्तों की हिन्दी रचनाओं पर विचार किया गया है, एसा लगता है कि कवि हिन्दू हो या मुस्लिम, दोनों ही हिन्दी को प्यार से अपनाते थे, और कोई तअजूब इस मामले में नहीं था। सधुक्कड़ी भाषा तब एक ही थी, जो कबीर और नानक ने भी प्रयुक्त की थी। इस तरह के ग्रन्थ देश की भावनात्मक एकता और मिली जुली सांस्कृतिक परम्परा के उत्तम प्रमाण हैं। मैं प्रो. दयाल 'आशा' को इस कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

डॉ. राम सकल शर्मा हिन्दी के विद्वान प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग नैशनल कालेज बांद्रा, मुम्बई इस शोध ग्रन्थ के सम्बंध में लिखते हैं, "शोधकर्ता डॉ. दयाल 'आशा' ने अपने ढंग से इस ग्रन्थ में अनेक सत्य तथ्यों का समावेश किया है। अत्यन्त कष्ट साध्य सामग्री के चयन और अनेक

नूतन उद्भावनाओं के साथ उनका यह शोध खोज कार्य कई दृष्टि कोणों से सराहनीय है । उनकी उपलब्धियों और निष्कर्षों को गिनाने की न तो यहां आवश्यकता है, न अवकाश है, फिर भी कतिपय प्रमुख बातों की ओर संकेत करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ । सब से पहले महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इन्होंने सिन्धी संतों, सूफियों की हिन्दी वाणी को हिन्दी मनीषा के साथ जोड़कर अध्ययन की एक नवीन दिशा खोल दी है । और दूसरी बात है, एक स्वर से सूफी कहे जाने वाले सिन्धी शायरों को इन्होंने बड़ी मनोयोग से संत कवि, सगुण भक्त और सूफी शायर के निकष पर रख कर अलग अलग परखा है । उनके इस ग्रन्थ को प्रकाशित होते देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता एवं संतोष का अनुभव हो रहा है ।''

इस ग्रन्थ के पहले अध्याय में मैंने सिन्धी भाषा, सिन्धी की लिपियां, हिन्दी और सिन्धी भाषाओं की एकता, सिन्धी साहित्य एक सर्वेक्षण, सिन्धी साहित्य पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव, सिन्ध प्रदेश में हिन्दी काव्य उद्भव और विकास के कारण सिन्ध की सामाजिक परिस्थितियां, राजनैतिक संदर्भ, धार्मिक स्थिति, आर्थिक परिस्थिति, साहित्यिक कलात्मक पृष्ठभूमि, सिन्ध की हिन्दी कविता, विभिन्न धाराएं, विषयों पर प्रकाश डाला है ।

दूसरे अध्याय में मैंने पहले संत साहित्य का सर्वेक्षण किया है । संत साधना के सम्बंध में विचार व्यक्त किये हैं, फिर सिन्ध के कबीर संत रोहल का जीवनवृत लिखा है, तत्पश्चात उनकी रचनाओं, दार्शनिक मान्यताओं, साधना का स्वरूप, साधना

क निर्देशक गुरू, साधना के सहायक तत्व, रोहल सूफी या संत, उनके काव्य में अलंकार और रस, कला के निष्कर्ष पर, रोहल की सवांद पद्धति का निरुपण करते मूल्यांकन किया है। मैंने कवि रोहल की तुलना संत कबीर से की है। सिन्धी साहित्यकार एवं आलोचक रोहल को रोहल सूफी के नाम से सम्बोधन करते हैं और उन्हें सूफी परम्परा का मानते हैं, किन्तु मैंने उनके मत का खंडन करते हुए प्रमाणित किया कि वे संत परम्परा से जुड़े हुए हैं, उन्होंने भारतीय छन्द शास्त्र के अनुकूल काव्य रचना की है। भाषा भाव शैली व काव्य रूप की दृष्टि से वे संत कवियों की परम्परा से जुड़े हुए हैं। उन्होंने प्रेम से अधिक ज्ञान को महत्त्व दिया है। वे वेदान्त से अधिक प्रभावित हैं। उन्होंने अपने काव्य में वेदांत सूत्रों का निरुपण किया है, उनके काव्य में शान्त रस प्रधान है।

इस ग्रन्थ के तीसरे अध्याय में मैंने संत रोहल के परम्परा के अन्य कवि शिष्य मुराद फकीर, तीन बेटों शाहो, गुलामअली और दरियाखान का जीवन वृत्त प्रस्तुत करते हुए उनके हिन्दी काव्य का विवेचन किया है। उनकी मान्यताओं व दार्शनिक विचारधारा का उल्लेख किया है, उनकी वाणी के संदर्भ देते प्रमाणित किया है कि ये कवि भी अपने गुरु रोहल की भाँति संत परम्परा से जुड़े हुए हैं। मैंने उनकी साधना पद्धति उनके काव्य रूप व कला पक्ष पर प्रकाश डाला है।

चौथे अध्याय में मैंने संत दलपत का जीवन परिचय देते हुए उनके हिन्दी काव्य का विवेचन करते हुए उनके काव्य कला पक्ष के सम्बंध में विचार व्यक्त किये हैं। सिन्धी साहित्यकार एवं

सिन्धी समुदाय इन्हें भी 'दलपत सूफी' के नाम से सम्बोधित करते थे। वे हिन्दू थे, वे भी वेदांत की विचारधारा से प्रभावित थे। उन्होंने अपने काव्य में वेदांत सूत्रों का प्रतिपादन किया है। मैंने प्रमाण देते हुए प्रमाणित किया है कि दलपत, सूफी परम्परा से सम्बंधित नहीं थे किन्तु वे संत परम्परा से सम्बंधित थे। उनके काव्य रूप एवं कला पक्ष पर भी प्रकाश डाला है। इन संत कवियों के काव्य में शब्द अलंकारों एवं अर्थ अलंकारों का सहज समावेश हुआ। इन संतों की वाणी आत्म अनुभूति की वाणी थी। उनका सुधारवादी दृष्टिकोण भी उनके काव्य से प्रतिभासित होता है। इस अध्याय में मैंने सेठ निहालचंद, संत जीवतसिंघ, रोशन अली, भाई ईसरलाल, भोजराज 'भोजल', स्वामी धर्मदास, महाराज नयनाराम आदि संत कवियों के हिन्दी काव्य का साहित्यिक मूल्यांकन किया है। उनके दार्शनिक विचारों एवं कला पक्ष का निरुपण किया है। संक्षेप में उनका जीवन परिचय भी दिया है।

पाँचवें अध्याय में मैंने पहले सगुण भक्ति काव्य धारा के सम्बंध में विचार व्यक्त किये हैं। इस काव्य धारा के मुख्य कवि दीवान सूरसिंह, भाई कलाचन्द, महाराज जयकृष्णदास, महाराज ठाकुरदास शर्मा, पंडित जवाहरलाल शर्मा, महाराज भगवानदास शर्मा हैं, उपर्युक्त कवियों ने हिन्दी में भगवान श्री कृष्ण, प्रभु श्री राम, श्री गुरू नानकदेव महाराज, श्री गणेश, भगवान शंकर आदि देवताओं की स्तुति गाई है। सिन्ध के कवि समन्वयवादी थे, वे श्रीकृष्ण भक्त भी थे तो प्रभु श्री राम के उपासक भी थे और जगदम्बा माता के भक्त भी थे। उनके काव्य का मैंने

विश्लेषण किया है। पहले उनके जीवन का उल्लेख भी किया है। इनके काव्य में शान्त रस प्रधान है। वे भक्ति में समर्पित थे। इनके काव्य में अलंकारों का सहज समावेश हुआ है।

छठे अध्याय में मैंने महाराज बसंतराम का जीवन परिचय दिया है। वे भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। वे सद्गृहस्थी भक्त थे। उनका जन्म हैदराबाद सिन्ध में हुआ। परन्तु साधना भूमि ब्रज भूमि थी। वहां ब्रज में प्रेमा भक्ति वातावरण में रहते उन्होंने 'कृष्णायन' प्रबन्ध काव्य का सृजन किया। 'कृष्णायन' उनकी सर्व श्रेष्ठ कृति है। मैंने कृष्णायन का साहित्यक मूल्यांकन किया है। कृष्णायन रचना की प्रेरणा, उसका वर्णन विषय, उसके नवद्वार, साधना का केंद्र बिन्दु भक्ति, भगवान श्री श्याम सुंदर के शवि का वर्णन, रसेश्वर की लीलाओं का विशुद्ध वर्णन किया है। उनके कला पक्ष पर भी प्रकाश डाला है। मैंने स्वामी बसंतराम की तुलना संत सूरदास से की है। वे सिन्ध के कृष्ण भक्त कवियों में सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी कृति बसंत दोहावली भी उल्लेखनीय है। इस में उनके नीतीपरक दोहे दिये गये हैं। ये दोहे भी जीवन उपयोगी हैं।

सातवें अध्याय में मैंने पहले सूफी काव्य की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की है, उसके बाद सिन्ध के सूफी हिन्दी कवि सचल सरमस्त, मिसरी शाह, सेठ विशनदास, सेठ श्रीचन्द्र का जीववृत्त प्रस्तुत करते हुए उनके सूफी काव्य का विश्लेषण किया है। उनकी प्रेम साधना के सम्बंध में विचार व्यक्त किये हैं। इन कवियों ने पाखंडियों की आलोचना भी की है। उनके भाव पक्ष एवं कला पक्ष पर प्रकाश डाला है।

आठवें अध्याय में मैंने पहले सिन्धी हिन्दी काव्य की सामान्य प्रवृतियों का सर्वेक्षण किया है। दार्शनिक विशेषताएं, भाषा, भाव और रस, कलागत प्रवृत्तियां, काव्य रूप, उपलब्धि एवं सीमाएं और निष्कर्ष दिया है।

सिन्ध प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से हिन्दी की मूल सृजन-भूमि से दूर होते हुए भी भावना, चिन्तन और आध्यात्मिक साधना की कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिन्दी से जुड़ा हुआ है। सिन्धी के कतिपय कवियों एवं सन्तों ने अपनी मातृभाषा (सिन्धी) के साथ-साथ हिन्दी में भी काव्य रचना की है। विदेशी शासन के कारण सिन्धी भाषा एवं साहित्य पर विभिन्न युगों में फारसी, अरबी एवं अंग्रेजी का प्रभाव रहा है, परन्तु उसकी (सिन्धी साहित्य की) अंतश्चेतना इस प्रभाव के बावजूद देश की उसी परम्परा से जुड़ी हुई है, जिससे हिन्दी का अटूट और अनिवार्य सम्बन्ध रहा है।

व्यापारिक दृष्टि से सिन्ध का आदान-प्रदान भारत के अन्य पश्चिमी प्रदेशों से रहा है, जिनमें अंतर्प्रादेशिक व्यवहार एवं व्यापार में अधिकतर हिन्दी का प्रयोग होता था। विभिन्न प्रान्तों के संत और सूफी सिन्ध में आते थे और सिन्ध के संत एवं सूफी भी भ्रमणार्थ भारत के अन्य भागों में जाते थे। इन परिस्थितियों के कारण यह स्वाभाविक था कि सिन्ध के संतों ने अपनी मातृभाषा के साथ राष्ट्र की व्यापकतर भाषा हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

सिन्ध में संत रोहल ने जो हिन्दी संत काव्य का बीज बोया, उनकी शिष्य परम्परा ने उसे अपनी काव्य साधना द्वारा

विकसित किया। संत काव्य रुपी इस वृक्ष ने सिन्धी जाति को आत्म-ज्ञानरूपी फल एवं शांति रूपी छाया प्रदान की। इसलिए अन्य सिन्धी कवियों ने हिन्दी में संत काव्य की रचना प्रारम्भ की। संत काव्य का सृजन दो कारणों से हुआ - "स्वान्तः सुखाय बहुजन हिताय" तथा परम्परा के प्रभाव के कारण। संत काव्य धारा के प्रमुख निर्गुण कवि हैं - संत रोहल, कवि मुराद, शाहो, गुलामअली, दरियाखान, दलपत, निहालचन्द, जीवतसिंह, शाह मिसरी, भाई ईश्वरलाल, स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी ज्वालानन्द महाराज, स्वामी धर्मदास महाराज, विशनदास, भोजल इत्यादि।

संत रोहल का जन्म सिन्ध प्रदेश के थरपाकर जिले के उमरकोट नगर में सन १७३० ई. में हुआ। वे जाति के मुसलमान ज़ंगीजा थे। चार पुत्र थे, शाहो फकीर, गुलाम अली, खुदा बख़्श, दूलह दरियाखान। मुराद फकीर उनका विशेष शिष्य था जो उनकी परम्परा का एक मुख़्य कवि माना जाता है। सन् १७८३ में संत रोहल ब्रह्मलीन हुए। संत रोहल ने सिन्धी, पंजाबी एवं हिन्दी में काव्य-रचना की, परन्तु उनका अधिकांश काव्य हिन्दी में है। उनके दो काव्य संग्रह हैं। (१) "शास्त्र मन प्रबोध" (२) "शास्त्र अधि बुद्धि ग्रंथ" संत रोहल वेदान्त सूत्रों से बहुत प्रभावित है। अनेक स्थलों पर ब्रह्म की एकता, अद्वैतता आदि को निरुपित करते हुए वे इनकी कुछ अनिवार्य विशेषताएँ मिल जाती हैं। संत रोहल कबीर की भाँति सर्वत्र एक ब्रह्म का ही साक्षात्कार करते हैं। वे अपने काव्य में "सर्वखल्विदं ब्रह्म" की ओर संकेत करते हैं।

बाहर अन्तर एक ही पिंड ब्रह्मांड में वास।

सर्व व्यापी आत्मा ज्यों घट महिं आकाश।।

चेतन चंद्र दहूँ सिद झलके पिंड ब्रह्मांड महि सकल चौरासी

जो भिन्न-भिन्न जीव एवं पदार्थ दृश्यमान हैं उनमें वह ब्रह्म ही विद्यमान है। उस परम ब्रह्म ने अनेक रूप धारण किये हैं। वह ब्रह्म अवर्णनीय है --

"एक अनेक किये अब बेख वही ब्रह्म एक हो अखंडहारी"

जीव सम्बन्धी विचार व्यक्त करते हुए कवि रोहल जीव को जाग्रत करते हैं ---

"ब्रह्म ही सरूप तेरो काहे को भुलाना है"

वेदान्तियों की भाँति संत रोहल जगत् को स्वप्न सम मानते हैं ---

एक जग जान जैसों सुपनो तज झूठे की ओट

माया के आवरण के कारण ही जीव को अपने ब्रह्म स्वरूप का भास नहीं होता। रोहल कहते हैं ---

माया सूँ मिलि जड़भयो शुद्ध सरुप न पाय

काल के कूप से विमुक्त होने के लिए आत्मज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है।

जैसे ही आत्मज्ञान की उपलब्धि होगी, माया का आवरण हट जायेगा तो जीव जन्म मरण के चक्कर से मुक्त हो जायेगा और आत्मस्थिति में स्थित रहेगा।

अमर पंथ जब आ मिले - पीछे बहुत आनन्द ।
टूटी फांसी काल की पड़े न माया फंद ।।

संत रोहल काया शोध पर बल देते हुए कहते हैं :-

"जे चाहो प्रभु अपना अहनिस काया सोध"

संत रोहल के समय में सिन्ध में सूफी मत का बहुत ही प्रभाव था, परन्तु संत रोहल सूफियों की प्रेम साधना से प्रभावित न होकर संतों की अंतः साधना, नाथों की हठयोग साधना एवं निर्गुण संतों की ज्ञान साधना से अधिक प्रभावित हुए। संत रोहल ने अपने काल में योग साधना के अंतर्गत षट्-चक्र मूल-चक्र की ओर संकेत किया है --

"खट चक्र खटदेव ही एक कर जान"
"खट चक्र के अंतरे बीसों देव द्वार"

संत रोहल गंगा, (इड़ा) जमना (पिंगला) एवं सरस्वती (सुषुम्ना) नाड़ियों के द्वारा प्राणवायु को त्रिकुटि की ओर ले जाने का आदेश देते हैं :-

गंगा जमना सरसुती, बहे त्रिवेनी तीर ।
जा असनान कियो तहाँ उज्वल भयो सरीर ।।

संत रोहल के मन में अपने गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे गुरु को नतमस्तक प्रणाम करते हैं क्यों कि उनकी संगति एवं अनुकम्पा से ही उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने अभिमान रूपी गढ़ पर विजय पाई।

सत्गुर पाई पड़त हूँ, जिन संग उपजो ज्ञान ।

दया भई दयाल की तब जीत्यो गढ़ अभिमान।।

गुरु की कृपा से ही कवि को अनहद का नाद सुनाई पड़ा।

"अनहद बाजा बाजिया सत्गुरु के प्रसाद"

अज्ञान के अन्धकार को दूर करने के लिए ज्ञान की आवश्यक्ता है। जिसके अन्तःकरण में ज्ञान का प्रकाश होता है, उसे सत्य का भास होता है।

जा घट ज्ञान प्रकाश करे, पुन सो घट नाहिं छिपे कछु छानू।

संत रोहल दार्शनिक विचारों को व्यक्त करते हुए, वेदान्त सूत्रों का ही अपने काव्य में प्रतिपादन करते हैं। वे वेदान्त महाकाव्य "तत्त्वमसि", एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय", "सर्वेखल्विदं ब्रह्म", "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" का अपने काव्य में संकेत करते हैं। उन्होंने ब्रह्म, जीव जगत् और माया सम्बन्धी जो भी विचार व्यक्त किये हैं उनका मूल वेदान्त में है न कि तसव्वुफ में। संत कवियों की भाँति संत रोहल ने भी हठयोग साधना, सहज समाधि, अजपाजाप का वर्णन किया है। उपर्युक्त विषयों के अनुकूल रोहल ने संतों की भाषा का ही प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ --

"तुरीया तट ऊपर बसे अमरापुर को गाम।
तहाँ बिराजे देवता साखी तां को नाम।।"
"जाग्रत स्वप्न सुखोपति तां का साखी एक।
जाके मोहिया सुख मिले भाजे दूख अनेक।।"

रोहल की मातृभाषा सिन्धी थी, फिर भी भारतीय संत

कवियों के संसर्ग में उन्होंने हिन्दी में काव्य रचना की। उन्होंने कबीर की भाँति सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। रोहल ने भाषा की ओर ध्यान न देकर भावों को ही प्रमुखता दी है। तत्कालीन वातावरणनुसार उनके हिन्दी काव्य में अरबी, फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

कवि रोहल की परम्परा के कवि मुराद शाहो, गुलाम अली, दरियाखान भी अपने गुरु रोहल की काव्य विचार-धारा एवं काव्य रूप से प्रभावित हैं। कवि मुराद अद्वैतवाद का समर्थन करते हुए कहते हैं :-

"केवल ब्रह्म तुम आत्मा, सकल अर्थ का मूल।
एही सब सूक्ष्म सो भयो, नाना विधि सूल।।"

ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् जीव - आत्मा स्वयं को सत् चित आनंद रूप समझता है, सब में अपना ही रूप समझता है। मुराद कहते हैं -

सहजानन्दी सुख निदान, कबहुँ न उपजे मान अपमान।
सत् चित् प्रेम आनंद स्वरुप, सब घट देखे अपना रुप।

कवि शाहो वेदान्त महावाक्य "तत्त्वमसि" का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं ---

"आप कू त्याग, तू है ही सोई, तुझ बिन दूजा नाहीं कोई।"
"पिंड ब्रह्मांड में तुम ही रम रहिया, तांहि जान रे भूला।"

शंकराचार्य ने जो माया सम्बन्धी विचार व्यक्त किये हैं कवि शाहो के काव्य में उसकी प्रतिछाया है ----

उपजे खपे सो दीसत माया, ज्यों वृक्ष है एक दूसरी छाया।

संत रोहल के सुपुत्र गुलामअली भी इसी परम्परा के संत कवि हैं। तत्कालीन समय में सूफियों का बड़ा प्रभाव था किन्तु ये कवि जाति के मुसलमान होते हुए भी सूफियों की प्रेम साधना से प्रभावित न होकर निगुर्ण संतों एवं वेदान्त से प्रभावित हैं। कवि गुलाम अली अपने पिता एवं गुरु रोहल की स्तुति गाते हुए कहते हैं :-

"गुरु रोहल राह बताई, घट लख अलख लखाई रहियो है"

कवि गुलाम अली मुसलमान होते हुए भी पैगम्बरवादी एकेश्वरवादी नहीं थे। वे अद्वैततत्व में विश्वास करते थे :-

"बाहर भीतर एक निरंतर व्याप रहियो है प्रीतम प्यारो"

"सभ घट एक ही रम रहियो, जगत् मंहिं जगदीस"

संत रोहल एवं उनकी परम्परा के कवियों ने काव्य रूप की दृष्टि से भारतीय छंद शास्त्र को अपनाया है। उनके काव्य में सहज ही शब्दालंकारों एवं अर्थालंकारों का समावेश हुआ है।

१८ वीं शती के सचल सरमस्त, १९ वीं शती के मिसरीशाह, सेठ विशनदास, सेठ श्रीचंद ने फुटकर पद लिखे हैं। इन कवियों के काव्य में सूफी मत का समावेश है। सूफियों की प्रेम साधना से ये कवि प्रभावित दीख पड़ते हैं। सचल कहते हैं ---

हैरान किया है मुझको हुस्न हैरान किया।

साजन पियाला प्रेम का मुझको पिला दिया ।

तालिब को मन्सूर का अनुकरण करना चाहिए ---

सिर सूलीअ मन्सूर चढ़ मख़्मूर अनलहक कहिया ।

कितनी मुदत है सचू तालिब इसी ख़ुमार का ।

कवि विशनदास पर भी तसव्वुफ का प्रभाव स्पष्ट है । सूफ़ी मन्सूर की भाँति वे भी हक की आवाज़ बुलन्द करते हैं :-

"हमारा हक का होका सदा देवूँ सो घर घर घर,

वो ही मन्सूर जो माने सभी जग जात डर डर डर ।

कोई पीवे तो मैं देखूँ पियाला इश्क भर भर भर।।

कवि श्रीचंद के काव्य में प्रेम तत्व है :-

दिल मुहब्बत ने मारी, जान जाती है सारी,

चैन नहीं है ध्यान नहीं है, दिल मन रहता उदास ।

१९ वीं शती के अन्य सिन्धी कवि जिन्होंने हिन्दी में भी काव्य रचना की है, वे हैं भाई ईसरलाल, कवि दलपतराम, निहालचंद, संत जीवतसिंह, रोशनअली, भोजल, स्वामी धर्मादास, महाराज नयनाराम । ये कवि भी निर्गुण संत परम्परा से प्रभावित हैं । उन पर वेदान्त का प्रभाव स्पष्ट है ।

सिन्धी में १९ वीं शती में कृष्ण भक्ति काव्य धारा भी प्रवाहित हुई । इस सगुण काव्य परम्परा में महाराज भगवानदास, महाराज बसंतराम, दीवान सूरत सिंह, कलाचन्द, जयकृष्णदास, महाराज ठाकुरदास उल्लेखनीय हैं । महाराज बसंतराम ने तो

हिन्दी में 'कृष्णायन' की रचना की, अन्य कवियों ने कृष्ण भक्ति के फुटकर पद लिखे हैं ।

कवि सूरतसिंह का भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अटूट प्रेम उनके काव्य से प्रतिभासित होता है । सूर की भाँति उन्होंने भगवान श्री कृष्णचन्द्र के मनोहर बालरूप का मनोवैज्ञानिक चित्र खींचा है ---

अब गउ चार आए मदन गोपाल लाल,

पीत पीताम्बर लाल कमलिया टेढ़ी-टेढ़ी पगरी मधुरी चाल ।

कवि सूरतसिंह श्रीकृष्ण की बांसुरी की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

''यह तान बन्सी की नाहीं, जान है बेजानों की,

सुधा अमीरस की तान सुरापान की खान ।''

भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी मृतकों में भी जीवन का संचार करती है, इसलिए कवि भगवान से विनय करते हैं :-

''बजाओ बांसुरी में भैरवी की तान को कान,

जो कान में पड़ते ही पड़ जाती बेजान में जान ।''

महाराज बसंतराम सिन्ध के सूरदास थे । ''कृष्णायन'' महाराज बसंतराम की एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृति है । हिन्दी प्रदेश से दूर रहकर ''कृष्णायन'' जैसे बृहद काव्य की हिन्दी में रचना करना उनकी साहित्यिक साधना और प्रतिभा का द्योतक है । महाराज बसंतराम का जन्म वि. स. १९२६ में हैदराबाद सिन्ध में हुआ था । भक्त नाभादास कृत भक्त माला का पारायण

करते - करते उनके मन में सांसारिक प्रपंचो के प्रति वितृष्णा जाग्रत हुई और भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा उत्पन्न हुई। उनके मन में भगवान बाँके बिहारी के प्रति जो अगाध अनुराग था, वह काव्य के रूप में अन्तःकरण से कल-कल करता प्रवाहित हुआ, इसके परिणामस्वरूप "कृष्णायन" का सृजन हुआ। महाराज बसंतराम ने विभिन्न विषयों पर दोहे भी लिखे हैं।

कवि ने भगवान श्रीकृष्ण की अनुपम अद्वितीय लीलाओं का उल्लेख करते हुए भक्ति की महता प्रतिपादित की है।

"तीर्थ यज्ञ व्रत तप शुभ कर्मा बेद पाठ वर्णाश्रम धर्मा।

साधन योग सांख्य अरु ज्ञाना, श्रुति संभव शुभ साधक माना।

किन्तु भक्ति बिन साधन आना, कृष्ण वशी कारक न प्रभाना।"

सूर की भाँति महाराज बसंतराम ने भी भ्रमर गीत लिखे हैं। भ्रमर उद्धव का प्रतीक भी हो सकता है। उद्धव भ्रमर की तरह काले रंग का था। वह गोपियों को ज्ञान और योग की बातें बताकर प्रेम के पथ से विचलित करना चाहता था। भ्रमर को देखकर गोपियों को उद्धव का विस्मरण होता है। वे भ्रमर से कहती हैं :-

"अहो भ्रमर प्रिय मोहन लीला, हम सब गोपी गावन शीला,

किह प्रकार अपि तज सक नाहीं, निश्चय कहैं तिहारे पाही।

रोम रोम लीला रस माहीं, सब भयो है पूरण ताहीं,

तू कारो कारै की कारी बातन ले आयो दुख कारी।।"

महाराज बसंतराम के "कृष्णायन" में तो ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है किन्तु उनके फुटकर काव्य में संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। इनकी भाषा समासयुक्त एवं प्रवाहोत्पादक है। इनके काव्य में छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, वीप्सा, श्लेष, उपमालंकार, रूपक, उदाहरणालंकार एवं दृष्टांत अलंकारों का सहज सुन्दर प्रयोग हुआ है। कवि ने भारतीय छंद शास्त्र एवसं राग-रागनियों के आधार पर काव्य रचना की है।

उपर्युक्त शोध ग्रन्थ पर भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने मुझे पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज व्यक्तित्व एवं काव्य दर्शन

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष थे। मेरा सौभाग्य था कि ऐसी महान विभूति मुझे सत्गुरू रूप में प्राप्त हुए। उनके असीम अनुकम्पा से मैंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की। आज भी उनकी अदृष्ट कृपा से सब काम हो रहा है। उपर्युक्त पुस्तक का प्रथम संस्करण सन १९७८ में प्रकाशित हुआ। चतुर्थ संस्करण स्वामी देव प्रकाशजी महाराज ने सन २००१ में प्रकाशित किया। इस पुस्तक में मैंने में सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का संक्षेप में जीवन परिचय एवं उनके जीवन की कुछ घटनाएं प्रस्तुत की हैं। उनके हिन्दी काव्य का मूल्यांकन करते उनके दार्शनिक विचारों का उल्लेख किया है। उनके हिन्दी काव्य में अर्थ अलंकारों एवं शब्दालंकारों का सहज समावेश हुआ है। वे भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे, उनकी वाणी से प्रतिभासित होता है कि वे सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज, संत कबीरदास, संत सूरदास, श्री गुरू नानकदेव महाराज से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने विभिन्न राग रागनियों के आधार पर काव्य रचना की है। इस पुस्तक में उनके करीबन ५० हिन्दी गीत भजन भी दिये गये हैं।

बीसवीं शती के सिन्धी कवियों का हिन्दी में योगदान

उपर्युक्त ग्रन्थ की भूमिका श्री साधुबेला महंत आचार्य स्वामी गणेशदास जी महाराज ने लिखी है। उन्हों लिखा है :-

लब्धप्रतिष्ठ विंद्वान, लेखक, कवि, गायक, समाज-सेवी, विचारक तथा सन्तसेवी डॉ. दयाल कोटूमल धामेजा 'आशा' एम.ए. पीएच.डी., अध्यक्ष सिन्धी विभाग, श्रीमती चाँदीबाई हिमथमल मन्सुखाणी कालेज, बम्बई द्वारा लिखित नवीन ग्रन्थ "बीसवीं शती के सिन्धी कवियों का हिन्दी काव्य में योगदान" पढ़कर अतिशय प्रसन्नता हुई। डॉ. दयाल आशा बहुमुखी प्रतिभा के धनी और गंभीर शोध-वृत्तिवाले विद्वान हैं। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से समय समय पर आप जो वार्ताएं प्रसारित करते रहे हैं उनसे आपकी विचारशीलता, गहन चिन्तन, अभिव्यक्ति-कौशल और भावप्रवणता का पर्याप्त परिचय मिलता रहा है। आपकी कृतियों की महत्ता का समादार करते हुए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने आपकी "बापूजी बागमां" और "लाल बहादुर शास्त्री" शीर्षक पुस्तकों पर एक एक हजार के दो पुरस्कार दिए, राष्ट्रीय अनुसन्धान परिषद दिल्ली

ने आपकी ''दादा दर्शन'' तथा ''महकंदड़ मुखिड़ियूं'' शीर्षक पुस्तकों पर एक एक हजार रुपए के दो पुरस्कार दिए तथा यूनेस्को ने भी आपके हस्तलिखित ग्रन्थ ''शल अहिड़ा लाल ज़ुमनि'' चौदह सौ रुपए का पुरस्कार देकर आपका सम्मान किया है। स्वभाव से सरल और विनम्र होने के साथ साथ आप महात्मा गांधी की विचारधार से पूर्णतः प्रभावित हैं।

हमारे देश के विभिन्न अंचलों में हिन्दी के ऐसे अनेक सेवकों, लेखकों, कवियों और मनीषियों की वाणियां बिखरी पड़ी हैं जिन्होंने विशाल भारत के साथ सम्पर्क करके उन्नत भारत के जन जीवन को प्रभावित करने के लिए उस हिन्दी का आश्रय लिया जिसकी व्यापक प्रतिष्ठा अनेक सन्त देशभर में कर चुके थे क्योंकि देशभर के विशेषतः उत्तर भारत के जन-मानस तक पहुँचने का आधार वही भाषा थी। इतना सब होते हुए भी न तो भारत सरकार की ओर से और न हिन्दी की सर्वसामान्य संस्थानों की ओर से ही ऐसे लेखकों और कवियों की रचनाओं के संग्रह का कार्य किया गया। इस दृष्टिसे इस ग्रन्थ का और भी अधिक महत्त्व है कि विद्वान लेखक ने अत्यन्त परिश्रम के साथ बीसवीं शती के उन सिन्धी लेखकों और कवियों का प्रामाणिक परिचय दिया है जिन्होंने साम-गान की पावन भूमि सिन्धु प्रदेश में रहकर भी लोक मानस को पुनीत करने के लिए उस लोकवाणी हिन्दी (भाषा, रेखता या हिन्दुई) में रचना की जिसे कुछ समीक्षकों तथा लेखकों ने सधुक्कड़ी भाषा की संज्ञा दी है।

यह सरल, सर्वबोध्य हिन्दी कितनी व्यापक थी इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि सूफी सन्तों ने भी अपने विचार का

प्रचार करने का उसी प्रकार इस भाषा का आश्रय लिया जैसे नामदेव, गुरु नानक, कबीर आदि सन्तों ने लिया था । किसी समय ग्रन्थों के नगर हैदराबाद (सिन्ध) में फुलेली नहर के तट पर सूफी सन्तों का बड़ा विशाल जमावड़ा रहा जहाँ देश विदेश के अनेक सूफी सन्त और फकीर आकर निवास भी करते थे, साधना भी करते थे । देश विभाजन होने तक सिन्ध के पश्चिम में हिंगलाज देवी के मन्दिर में तान्त्रिकों का बड़ा बोल बाला रहा जहाँ अनेक तान्त्रिक साधकों ने भी कई गुह्य साधना ग्रन्थ हिन्दी में लिखे । इस सरल भाषा की महत्ता का दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रमाण यह है कि उदासीन सम्प्रदाय के आचार्य श्री श्रीचन्द्राचार्य जी ने अपने सम्प्रदाय के धर्मग्रन्थ "मात्रा शास्त्र" की रचना इसी भाषा में की जिसकी ओर अभी तक भी हिन्दी के इतिहासकारों का ध्यान नहीं गया है ।

इतना तो सभी विद्वान मानते हैं कि संसार के सर्व प्राचीन संप्राप्त वाड़मय वेदों के ग्रन्थों का दर्शन, सप्तसिन्धु या प्रिसप्त सिन्धु की पुनीत धरणीपर ही आर्य ऋषियों को हुआ था । संपूर्ण याज्ञिक कर्मकांड उसी भूमि में प्रारम्भ हुए और साम-गानके देवी स्वरों का गुंजन भी सर्वप्रथम वहीं हुआ, काल-क्रमसे वह भूमि आज उस महानीय वाड़मय से विहीन हो गई है किन्तु वेदों के उदार मातृत्वका जो गौरव उस धरती ने प्राप्त किया है उसका लोप किसी प्रकार नहीं हो सकता ।

सिन्धु नदी के बीच सद्गुरु श्री स्वामी बनखण्डीजी महाराज ने अपने साधुबेला आश्रम की स्थापना करके अपने शील, त्याग, तप और प्रभाव से उस पुण्य भूमि को पुनः उसका

प्राचीन गौरव प्रदान करने के लिए वहाँ ऐसा पुण्य केन्द्र स्थापित किया जिसके माध्यम से वेद, शास्त्र, पुराण, साहित्य सबका पुनरुद्धार और प्रचार हुआ। संस्कृत और हिन्दी के अनेक विद्यालयों के माध्यमसे हिन्दी और संस्कृत के अध्ययन की सुविधा प्रदान हुई। इस प्रकार साधुबेला तीर्थ उस सिन्धु प्रदेश में भारतीय धर्म, विज्ञान और संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया जिसने भारतीय जन-जीवन में भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रति तथा उसके उदार और उदात साहित्य के प्रति नवीन चेतना और आस्था उत्पन्न कर दी। उस प्रदेश में हिन्दी के प्रचार प्रसार का मुख्य केन्द्र वह साधुबेला तीर्थ ही रहा है।

उसी उदात्त परम्परा से प्रभावित होकर इस ग्रन्थ के लेखक डॉ. दयाल आशा ने समस्त सिन्धु प्रदेश में इतस्ततः बिखरे हुए बीसवीं शती के हिन्दी के लेखकों, कवियों, सन्तों की रचनाओं और वाणियों का परिचय देकर वास्तविक शोध का अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। इससे पूर्व डॉ. दशरथ आसनानी ने "सन्त रोहल की बानी" में कुछ सन्तों का विशेषतः सूफी सन्तों का और उनकी वाणियों का विस्तृत और कौशलपूर्ण परिचय दिया था किन्तु इस ग्रन्थकार ने उसे पूर्णता प्रदान करते हुए वर्तमान युग के समस्त हिन्दी गद्य-पद्यकारों और उनकी हिन्दी रचनाओं का परिचय देकर बड़ा पुण्य और यशस्कर कार्य किया है।

यद्यपि हिन्दी साहित्य के अनेक इतिहास लिखे जा चुके हैं तथापि वे सभी अधूरे, अपूर्ण और भ्रामक हैं क्योंकि जब तक समस्त भारत के सभी अंचलों के हिन्दी लेखकों और कवियों तथा उनकी रचनाओं का पूर्ण और विस्तृत परिचय नहीं मिल जाता

तब तक हिन्दी साहित्य का इतिहास पूर्ण नहीं समझा जा सकता ।

डॉ. आशा ने जिस निष्ठा और धैर्य के साथ इस ग्रन्थ में सिन्ध के बीसवी शती के सिन्धी कवियों के हिन्दी काव्य में योगदान का परिचय देने का जो प्रशंसनीय कार्य किया है उसका समस्त हिन्दी साहित्यिक समाज की ओर से मैं अभिनंदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इससे पूर्व के भी उन कवियों और लेखकों का परिचय देने का प्रयत्न करेंगे जो पहले से हिन्दी में रचना करते चले आ रहे हैं ।

मैं पुन: डॉ. आशा को उनकी इस आशंसनीय कृतिके लिए साधुवाद देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि उनके इस ग्रन्थ का व्यापक समादर और सम्मान होगा ।

मुम्बई से प्रकाशित 'नवभारत टाइम्स' (२५/५/८७) में इस ग्रन्थ की समीक्षा करते हुए मेरे इस ग्रन्थ की प्रशंसा की है ।

''भारत का शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा हो, जिसमें संगठित या फुटकल रूप में हिन्दी लेखन न हुआ हो । भाषावार राज्यों की क्षेणी में आनेवाले अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी साहित्य रचना का इतिहास वैसे तो काफी पुराना है, लेकिन कुछ तो प्रमादवश और कुछ राजनीतिक कारणों से भाषाई सम्प्रदायवाद के हावी हो जाने के कारण इस दिशा में शोध कार्य बहुत आगे नहीं बढ़ सका है, तमिल, कन्नड़, तेलगु, मलयालम, बांगला, असमिया, गुजिराती और मराठीभाषी क्षेत्रों में हिन्दी की स्थिति के बारे में थोड़ी - बहुत जानकारी उपलब्ध है, कई महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य भी हुए हैं, लेकिन सिन्ध (अब पाकिस्तान में) और सिन्धी के लेखकों की हिन्दी-सेवा के विषय में जानकारी नहीं के बराबर है ।

किन्तु वास्तविकता यह है कि अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में भी सिन्धी मनीषियों ने हिन्दी में गद्य और पद्य लेखन किया। डॉ. दयाल आशा ने अपनी पुस्तक बीसवीं शती के सिन्धी कवियों का हिन्दी में योगदान में सिन्धी लेखकों और कवियों की हिन्दी साधना का विशद विवेचन किया है। सिन्ध प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से दूर होते हुए भी भावना, चिन्तन और अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिन्दी से जुड़ा हुआ है। सिन्धी के कतिपय कवियों एवं सन्तों ने अपनी मातृभाषा सिन्धी के साथ-साथ हिन्दी में भी काव्य रचना की। विदेशी शासन के कारण सिन्धी भाषा एवं साहित्य पर विभिन्न युगों में फारसी, अरबी एवं अंग्रेजी का प्रभाव रहा है किन्तु सिन्धी साहित्य की अन्तश्चेतना इस प्रभाव के बावजूद देश की उसी परम्परा से जुड़ी हुई है, जिससे हिन्दी का अदृढ़ और अनिवार्य सम्बन्ध रहा है।

अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में संत रोहल, मुराद, गुलामअली, निहालचन्द, ईसरलाल, रोशनअली, भोजल, महाराज जयकृष्णदास, सेठि विशनदास प्रभोति दर्जनों कवियों और संतों ने सिन्धी भाषी होते हुए भी हिन्दी में काव्य साधना की। बीसवीं शताब्दी में हिन्दी गद्य-रचना करने वाले कोई बीस सिन्धी लेखकों और पचपन कवियों की उपलब्धियों का परिचयात्मक विवेचन डॉ. दयाल आशा ने किया है। सन्दर्भ रूप में सिन्धी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का समावेश हो जाने से काव्य की संप्रेषणीयता सहज और स्वाभाविक हो गयी है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि अपनी मूल भूमि से उखड़कर भारत के विभिन्न हिस्सों में बिखर जाने के बावजूद सिन्धी समाज

किस प्रकार अपनी भाषा और साहित्य को जीवित एवं जीवन्त रखते हुए हिन्दी के माध्यम से भी अपने को पूरे देश की मुख्य धारा से जोड़े रखने के लिए प्रयत्नशील रहा है और अब भी है ।

जिस धैर्य और निष्ठा के साथ डॉ. दयाल आशा ने यह श्रम-साध्य ग्रन्थ रचना की है, उसके लिए वह निश्चय ही साधुवाद के पात्र है ।

उपर्युक्त पुस्तक पर सन् १९८७ ई में मुझे साहित्यिक कुम्भ नाजयाबाद में माता कुसुम कुमारी हिन्दीतर भाषी हिन्दी साधक पुरस्कार प्रदान किया गया । ऐसे पुरस्कार प्रोत्साहित करते हैं । इस ग्रन्थ में मैंने पहले संक्षेप में सिन्धी साहित्य सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है, सिन्धी भाषा के इतिहास पर संक्षेप में प्रकाश डाला है, तत्कालीन परस्थितियों का भी उल्लेख किया है ।

जो सन्त काव्य-धारा सिन्ध में प्रवाहित हुई वह केवल १९वीं शती तक सीमित न रही । बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में भी सिन्ध में कुछ संत एवं सद्गृहस्थी हुए जिन्होंने सिन्धी के साथ हिन्दी भाषा में भी संत काव्य का सृजन किया । ये संत अधिकतर वेदांत, संत कबीर, मीराबाई, श्री गुरु नानकदेव एवं उनकी परम्परा से प्रभावित दीख पड़ते हैं । इन संत कवियों में साधु टी.एल. वासवाणी, स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी अटलराम, स्वामी ग्वालानन्द, स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी परमानन्द, कवि पहिलाजराम, स्वामी बसंतराम महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज उल्लेखनीय हैं ।

साधु वासवाणी महान कर्मयोगी संत, शिक्षा शास्त्री एवं दार्शनिक थे । उनका काव्य संग्रह "नूरी ग्रन्थ" संत काव्य की

अमर निधि है। अधिकतर उन्होंने सिन्धी में काव्य रचना की है किन्तु हिन्दी में भी फुटकर भक्ति परक पद लिखे हैं। साधु वास्वाणी ने ब्रह्म, जीव जगत्, माया सम्बंधी विचार भी व्यक्त किये हैं। उन्होंने ब्रह्म के निर्गुण व सगुण दोनों रूपों का अपने काव्य में उल्लेख किया है। वे श्री श्याम सुंदर को मन मंदिर में पधारने के लिए प्रार्थना करते हैं -

बार बार करूं विनती, मेरे घर मोहन आइ।
धन दौलत कछु न मांगू, अपनी भक्ति लाइ।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की अमूल्य हिन्दी सिन्धी वाणी "प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" में संग्रहीत है। उन्होंने भारतीय छंद शास्त्र एवं राग रागनियों के आधार पर काव्य रचना की है।

स्वामी टेऊँराम महाराज के काव्य में उनके दार्शनिक विचार स्पष्ट मिलते हैं वे अद्वैत सिद्धान्त का समर्थन करते हुए कहते हैं-

ब्रह्म अखण्ड अद्वैत अनामय सत्‌चित् आनन्द राशी है।
कहे टेऊँ सो प्रत्क्ष जानो साक्षी स्वयं प्रकाशी है।।

स्वामी जी ने जगत् असत् का उल्लेख करते हुए विवर्तवाद का संदर्भ दिया है :-

"रज्जू मांहि सांप जैसे भासत हैं भ्रम कर,
भ्रम गये केवल ही रज्जू ही प्रभासे है।
कहे टेऊँ भ्रम माहिं तैसे ये जगत् नाहि,
अज्ञ जग भासे ज्ञानी, भ्रम ही प्रकासे है।।"

स्वामी ग्वालानन्द महाराज स्वामी टेऊँराम महाराज के

छोटे भाई थे। उनकी सारी वाणी ''ग्वालानंद ग्रंथ'' में संग्रहीत हैं। स्वामी ग्वालानंद जी ने भी अपने काव्य में वेदान्त दर्शन का निरुपण किया है।

सदगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के उत्तराधिकारी स्वामी सर्वानन्द महाराज ने हिन्दी में तीन खंड काव्यों, (१) वामन बलि, (२) यमराज और नचिकेता (३) 'कथा राजा शिखर ध्वज और चूड़ाला' की रचना की है। उपर्युक्त तीनों खंड काव्यों में स्वामी सर्वानन्द महाराज ने अपने दार्शनिक विचारों को व्यक्त किया है।

उपर्युक्त काव्यों में शब्दालंकारों व अर्थालंकारों का सहज प्रयोग हुआ है।

प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के वयोवृद्ध संत स्वामी गुरमुखदास जी महाराज के हिन्दी दोहे भी उलखनीय है। विभिन्न विषयों पर लिखे उनके दोहे आज भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रकांड पंडित स्वामी बसंतराम महाराज ने भी हिन्दी में ज्ञान ग्रभित दोहे लिखे हैं। उनके दोहों का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। वे गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

बसंत ज्ञान विज्ञान का, सत्गुरु है दातार।
श्रद्धा से गुरु शरन जा, लेवो ज्ञान भंडार।।

आधुनिक सिन्धी कृष्ण भक्त कवियों में सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश महाराज महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के संस्थापक संत स्वामी टेऊँराम महाराज के धर्मपीठ के उत्तराधिकारी थे। वे प्रतिभाशाली परोपकारी उदारचेता

कर्मयोगी, समाज सुधारक संत थे। वे भगवान श्री कृष्ण के अनन्य उपासक थे। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में काव्य रचना की है।

भगवान श्री कृष्ण के नाम की महिमा गाते हुए स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज कहते हैं :-

जय श्री कृष्ण पांच वरण का मंत्र बड़ा उत्तम है,
गुर कृपा से जिसको मिलिया तिसके दुख निवारे।

'जय श्री कृष्ण' मंत्र की साधना करने से जीव संसार रूपी भवसागर से पार हो जायेगा। जिस को यह मंत्र गुरु कृपा से मिलता है उसके दुख दूर हो जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण की अनुकंपा का उल्लेख करते हुए स्वामीजी कहते हैं :-

बहुत जन्म से पीते आये दूध माता की गोदी में,
ऐसी चाल चली श्री कृष्ण दूध नहीं वह पीता हूँ।
दासोहम् यह मंत्र गुरु का रैन दिवस मैं रटता था,
माखन चोर ने दा हर लीनी, दा बिन अब तो गाता हूँ।
चोरासी लख युनि नगर में फिर फिर चकर लगाते थे।

बीसवीं शती में अन्य सिन्धी कवि जिन्होंने हिन्दी में काव्य सृजन किया है वे हैं श्री गंगाराम, सेठ उद्धवदास, श्री तोलाराम आजिज़, स्वामी अटलराम, डॉ. परमानन्द बदलाणी, श्री लालचन्द पमनाणी, स्वामी भक्त प्रकाश, योगीराज परमानन्द, स्वामी चिद्धानंद, श्री ठारूमल बजाज, श्री फतेहचन्द शर्मा, स्वामी केवलराम, पंडित शीतलदास, श्री साबलदास, श्री जीवणदास,

प्रो. राम पंजवाणी, स्वामी रामकृष्ण, प्राचार्य हरि दिलगीर, कवि देवीदास, कवि वासुदेव, डॉ. अर्जन सिकायल, स्वामी रघुनन्दन प्रसाद, स्वामी गणपति प्रसाद, महाराज हेमन्दास, संत वेद प्रकाश, प्राचार्य तुलसी आनंदाणी, श्री गोर्धन शर्मा, स्वामी नारायणदास उदासी, श्री प्रभदास प्रेम प्रकाशी, श्री खिलूमल गंगवाणी वर्णीत कवियों का संक्षेप में जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का संक्षेप में विवेचन किया गया है ।

विवेचित कवियों के अतिरक्त बीसवीं शती के कुछ अन्य कवि है जिन्होंने हिन्दी में गीत, दोहे भजन लिखकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति की है । सूखा साधुबेला सक्खर के महंत ब्रह्मलीन स्वामी संत प्रसादजी ने हिन्दी में दोहे लिखे हैं । वे परमात्मा की स्तुति गाते हुए कहते हैं :-

भगवान विश्वम्भर प्रभु, विनय करूँ कर जोर ।
तब पद पद्मनि में सदा लगा रहे मन मोरे ।
नन्द नंदन अज दैत्य निकंदन, नरसिंह ईश मुरारी ।
कमल नयन सीता पति सुंदर धरणी धर कंसारी ।

श्री साधुबेला महंत आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज का हिन्दी में खंड काव्य एवं वेदान्त सम्बंधी पुस्तक उल्लेखनीय है ।

ब्रह्मलीन संत स्वामी तिलोकदास महाराज जय बाबा, स्वामी बोद्धराज, संगीताचार्य मास्टर चंद्र ने कुछ भक्ति में गीत लिखे हैं । श्री गोरधन मदहोश के गीतों की एक छोटी पुस्तक 'मदहोश के गैर फिल्मी गीत' प्रकाशित हुई है । नवोदित गीतकार मदहोश के गीतों में उनके जीवन की अनुभूति का

प्रतिफलन प्रतिबिम्बित होता है। एक गीत में वे कहते हैं :-

अपनों ने ही अंधेरे में अपना कारवाँ लूटा।
सपने में न था जो उस पास्बां ने लूटा।
न कोई मंजिल है, न ठिकाना ही रहा है,
न कोई दिन रहे हैं, न वो दिल ही रहा है।
न वो ज़माना रहा है न वो फसाना रहा है।

युवा कवि अशोक कुमार राही के मुक्तक से उनके कवि हृदय की झलक मिलती है -

दूर तक एक भी आता है मुसाफिर न नज़र,
ये भी मालूम नहीं रात है ये या कि सहर,
मेरे अस्तित्व के बस दो ही चिन्ह बाकी हैं,
एक बुझता सा दिया एक उजड़ी सी कबर।

पंडित देवदत्त कुंदाराम शर्मा, डॉ. किशोर वासवाणी, डॉ. सतीश रोहड़ा, श्री जयंत रेलवाणी, श्री लक्ष्मण दुबे, डॉ. लखमीचन्द प्रेम, श्री परसराम 'ज़िया', श्री प्रभुदास ब्रह्मचारी, प्रो. मामतोरा, श्री अजीत किशोर, प्रो. टिलूलाल ठारवाणी, प्रो. भावन वाधवाणी 'बचैन', श्रीमती इंदिरा पूनावाला, श्री बलदेव बुधराणी 'दीप', खुशीराम जेसवाणी, श्रीमती फूल रोहड़ा आदि सिन्धी भाषियों ने फुटकर हिन्दी काव्य की रचना की है।

साहित्य सुरभि

मेरी यह पुस्तक पत्रिकार मित्र श्री कृष्णलाल बजाज ने सन् १९८६ में प्रकाशित की। इस पुस्तक की भूमिका में श्री कृष्णलाल बजाज ने लिखा है, ''डॉ. दयाल आशा ने विभिन्न निबंधों में अपनी बहुत सी बातें सवांद रूप में उपस्थित करते हैं। निबंधों को ज्ञानवर्धक बनाने के लिये बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. दयाल आशा का प्रयास प्रशंसनीय, अभिनंदनीय है। उनकी निबंध शैली में गंभीरता का आभास मिलता है।

डॉ. दयाल आशा के निबंध संख्या में कम हैं, परन्तु उनके निबंधों में जो भावों का वेग और ओज का प्रकाश है वह हिन्दी के लिए गौरव की वस्तु है। ओज और शक्तिमता की दृष्टि से बेजोड़ हैं। निबंध लेखकों और पाठकों के निकट परिचय का साहित्य है, परन्तु हिन्दी के अधिसंख्य लेखक पाठकों के निकट बहुत कम पहुंचे। सिन्धी भाषी डॉ. 'आशा' ने पाठकों के निकट पहुंचने का विनम्र प्रयास किया है। उनका यह प्रयास आशामय और शुभ जान पड़ता है।

निबंधकार डॉ. दयाल 'आशा' सिन्धी समुदाय में एक लब्ध कीर्ति साहित्य सेवी एवं शिक्षा शास्त्री हैं। भारत सरकार तथा अन्य कई शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संस्थाओं की ओर से आप अपनी कृतियों - रचनाओं पर

पुरस्कार प्राप्त कर सम्मानित हो चुके हैं। आशा है उनकी यह कृति हिन्दी-संसार में समादृत होगी।

सरस्वती माता की असीम अनुकम्पा से इस पुस्तक 'साहित्य सुरभि' के लिए मुझे भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इस निबंध संग्रह का प्रथम निबंध है ''सिन्ध के राष्ट्रीय कवि हूँदराज दुखायल'' कवि दुखायलजी का व्यक्तित्व बहुमुखी है। वे राष्ट्रभक्त, राष्ट्रीय कवि, समाज सेवक, समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी, निर्भीक निष्काम भारत माता के सुपुत्र, उच्च कोटि के गायक, भावक संत, कर्म योगी थे। उन्होंने देश के आज़ादी आंदोलन में पाँच बार जेल यात्रा की। सिन्ध के गाँव गाँव में जाकर अपने देश भक्ति के गीतों द्वारा लोगों में देश भक्ति का संचार किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उन्होंने संत विनोबा भावे के साथ पद यात्रा करते अपने भूदान सम्बंधी गीतों द्वारा भूपतियों को भूमि दान करने के लिए प्रेरित किया। भारत की महान विभूति संत विनोभा भावे ने कवि दुखायल के संबंध में लिखा है, ''दुखायल के हृदय में मानव मात्र के लिए प्रेम भरा हुआ है। उनकी भारत-भक्ति भी उसी व्यापक प्रेम की चिनगारी है। दुखायल तो दुखी दुनिया को दिलासा देने वाले कवि हैं। उनके शब्दों में पांडित्य नहीं है, प्रेम भरा हुआ है। वे केवल शब्दों को नहीं जोड़ते, बल्कि हृदयों को जोड़ने की कोशिश करते हैं।

लोक नायक श्री जयप्रकाश नारायण ने कवि हून्दराज दुखायल जी के सम्बंध में लिखा, ''कवि दुखायल के गीत जिन्होंने सुने होंगे वे ही जानते हैं कि उन में कितनी जान होती है और

किस प्रकार वे अपना पूरा दिल अपनी वाणी में निकाल कर रख देते हैं। जब मैंने पहले पहले उनको 'दे दो अब भूमि अधिकार' गीत सुना तो ऐसा लगा था जैसे विप्लव साक्षात खड़ा होकर ललकार रहा हो। दुखायल के गीतों में भारत की गरीब जनता के दुख दर्द की ऐसी पुकार होती है, जो पत्थर के दिलों को भी द्रवित कर देती है।''

ऐसे महान कवि को भारतीय जनता से परिचित कराने के लिए मैंने इस पुस्तक में संक्षेप में उनका जीवन वृत प्रस्तुत किया है और उनके सिन्धी एवं हिन्दी काव्य का संक्षेप में विवेचन किया है। वे त्याग तपस्या की मूर्ति थे। सिन्धी काव्य में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वे दवेनागरी लिपि के समर्थक थे, इस लिए वे साहित्य अकादमी ने पुरस्कार से वंचित रहे किन्तु दिल्ली सिन्धी अकामदी ने उन्हें ११ लाख रुपये पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया।

उपर्युक्त पुस्तक का दूसरा निबंध, 'भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में शहीद हेमू कालाणी की भूमिका' इस निबंध में पहले मैंने स्वतंत्रता संग्राम का संक्षेप में उल्लेख किया है फिर सिन्ध के भगतसिंघ शहीद हेमू कालाणी की कुर्बानी, निडरता देशभक्ति की भावना का वर्णन किया है। सिन्ध को ऐसे युवा शहीद हेमूँ कालाणी पर गर्व है जिसने आज़ादी के आंदोलन में मुस्कराते मुस्कराते फाँसी को चूमते शहादत का जाम पीया उनका जीवन भी प्रेरणा का स्रोत है।

तीसरा निबंध है 'सिन्धी संतों का सामाजिक दृष्टिकोण'।

सिन्ध प्रदेश में अनेक संत महात्मा उत्पन्न हुए जिन्होंने न केवल सिन्ध भूमि को अपने प्रकाश से आलोकित किया किन्तु विश्व को अपनी ज्योति से आलोकित किया । इन संतों व सूफियों में से कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने आत्मज्ञान के साथ साथ व्यवहारिक जीनव के लिए भी मार्गदर्शन किया । उन्होंने सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए पूर्ण प्रयास किया । जबतक हमारा व्यवहार ठीक नहीं तब तक आध्यात्मिक मार्ग में भी उन्नति असम्भव है । इन संतों ने समाज के उत्थान के लिए भी कार्य किया । कुछ संत व सूफी ऐसे हैं जिन्होंने अपने काव्य द्वारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया ।

चौथा निबंध है "सिन्धी कवियों की हिन्दी में गुरु स्तुति" व्यवहार के क्षेत्र में चाहे आध्यात्मिक मार्ग में गुरू की अत्यन्त आवश्यकता है । गुरू ज्ञान का दाता है । पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञान की उपलब्द्धि होती है । सूफी हो या संत कवि हो सब ही ने अपने काव्य में गुरु की महिमा प्रतिपादित की है । सूफी जिसे मुर्शिद कहते हैं संत उसे गुरू कहते हैं । आदिकाल से गुरू की स्तुति गाई जाती है । सिन्ध के संत एवं सूफी कवियों ने अपने हिन्दी काव्य में गुरू के प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट की है । इस निबंध में मैंने सिन्धी भाषी संत व सूफी कवियों की हिन्दी वाणी में गुरु महिमा उदाहरणों सहित प्रतिपादित की है ।

पाँचवां लेख है, "बच्चों के विकास में बाल साहित्य का योगदान" । मैं करीबन ६५ वर्षों से बच्चों से जुड़ा हुआ हूँ । १९५४ में मैंने हिन्दी शिक्षक सनद् परीक्षा उत्तीर्ण की । विभिन्न स्कूलों में पढ़ाने जाता था । १९५५ शिक्षक नियुक्त हुआ । बाल

मनोविज्ञान का अध्ययन भी किया। साहित्य द्वारा उन में सत् संस्कारों का संचार करता रहा। इस लेख में मैंने उपर्युक्त विषय पर प्रमाणों सहित अपने विचार व्यक्त किये हैं। भूतकाल में दादी माँ बच्चों को कहानियाँ सुनाती थी मनोरंजन के साथ उन कहानियों द्वारा समाजिक शिक्षा देती थी। किन्तु वर्तमान में बाल साहित्य द्वारा गीतों, बाल कहानियों, बाल नाटकों द्वारा बच्चों में सत् संस्कारों का संचार कर सकते हैं। रेडियो या टी.वी द्वारा भी बाल साहित्य का प्रसारण होता है। इस लेख में मैंने बच्चों के विकास में साहित्य का योगदान पर प्रकाश डाला है।

छठा निबंध साहित्यिक निबंध है, "भक्त सूरदास का सिन्धी काव्य पर प्रभाव"। भारत के महान कृष्ण भक्त कवि संत सूरदास के मुख से जो कृष्ण भक्ति काव्य धारा प्रवाहित हुई, वह केवल ब्रज तक सीमित न रही, उनकी इस अमृत तुल्य काव्य धारा ने समस्त भारत वर्ष के विभिन्न भाषा भाषियों को रसास्वादित किया। सिंध की भाव भूमि भी इस से प्रभावित हुई। कई सिन्धी कवियों ने सिन्धी एवं हिन्दी में कृष्ण भक्ति काव्य की रचना की। इन कवियों के कृष्ण भक्ति काव्य का उल्लेख इस निबंध में किया गया है। महाराज बसंतराम ने 'सूर सागर' की भाँति हिन्दी में 'कृष्णायन' की रचना की। मैं उन्हें 'सिन्ध के सूरदास' से सम्बोधित करता हूँ। सिन्ध के वेदान्ती कवि सामी साहिब ने भी कहा :

मधुर मधुर मुरली कान वॼाई मुख सां,
बुधी गोपी ग्वाल जी सामी सुरिति भुली,
अविधा ग्रंढ खुली, ॾिसी मुंहुं महबूब जो।

सातवां निबंध है 'कवि किशनचंद बेवस'। आधुनिक सिन्धी काव्य के प्रतिनिधि कवि किशनचंद बेवसि का जीवन वृत प्रस्तुत करते हुए उनके सिन्धी काव्य का विशलेषण किया गया है। उन्होंने सिन्धी कविता को नया मोड़ दिया। उन्होंने शमअ-परवाने, साकी मैखाने, गुल व बुलबुल इत्यादि बेसूद विषयों को छोड़कर राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयां पर काव्य सृजन किया। वे आस्तक आशावादी, राष्ट्रभक्त, ईश्वर भक्त, गऊ भक्त कवि थे। वे सादगी व नम्रता की मूर्ति थे, उन्होंने बाल गीत भी लिखे। वे यथार्थवादी थे। राष्ट्रीय कवि हूंदराज दुखायल, कवि हरी दिलगीर, श्री गोविन्द भाटिया, प्रो. राम पंजवाणी, श्री नीलकमल कवि बेवस परम्परा के कवि थे। उन्होंने अपने काव्य में अपने युग का चित्र चित्रति किया है।

आठवाँ निबंध है "सिन्ध के कबीर स्वामी टेऊँराम महाराज"। स्तगुरू स्वामी टेऊँराम महाराज सिन्ध की महान विभूति थे। उन्होंने प्रेम प्रका मंडल की स्थापना की। वे न केवल महान आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे किन्तु उच्च कोटि के संत कवि भी थे। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी में काव्य सृजन किया। "श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ" उनकी समस्त वाणी का अमूल्य ग्रंथ है। संक्षेप में उनका जीवन वृत प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य का संक्षेप में निरुपण किया है। मैंने उनकी तुलना संत कबीर से की है। वे युग दृष्टा भी थे तो युग सृष्टा भी थे। उपर्युक्त काव्य में समाहित दार्शनिक विचारों का भी उल्लेख किया है। स्वामी ग्वालानंद महाराज, स्वामी सर्वानंद महाराज, स्वामी गुरमुखदास महाराज, स्वामी बसंतराम महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज, स्वामी भगत प्रकाश महाराज, स्वामी ब्रह्मानंद

महाराज, एवं अन्य संत सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के काव्य परम्परा के कवि हैं ।

नवाँ निबंध है "साधु वासवाणी का बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व" साधु टी.एल वासवाणी महान आध्यात्मिक मार्ग दर्शक, शिक्षा शास्त्री, दार्शनिक, समाज सुधारक, उच्च कोटि के साहित्यकार एवं गरीबों के मसीहा थे । इनकी राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक वेवाओं के कारण भारत सरकार के डाक विभाग ने इनकी पावन स्मृति में २५ नवम्बर १९६९ में डाक टिकट प्रकाशित किया । श्री लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन से भी इनका सम्बंध रहा । उनका संक्षेप में जीवन परिचय प्रस्तुत किया है ।

दसवाँ लेख है, 'सिन्धी काव्य में देशभक्ति' देश के आजादी आंदोलन में सिन्धी कवियों ने अपने काव्य द्वारा सिन्धी समुदाय को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये प्रेरित किया । ये देश भक्ति के गीत आज भी हमारे मन में देश भक्ति का संचार करते हैं । जिन सिन्धी कवियों ने देश भक्ति से ओतप्रोत गीतों - कविताओं की रचना की उनका संदर्भों सहित उलेख किया है । क्रांतिकारी सिन्धी कवियों को जेल की भी यात्रा करनी पड़ी, किन्तु फिर भी वे एकता एवं राष्ट्रीय भक्ति सम्बंधी रचनाएं लिखते रहे । आजादी के पश्चात् जब चीन व पाकस्तान ने देश पर आक्रमण किया तब भी सिन्धी कवि अपनी रचनाओं द्वारा सिन्धी समाज में देश भक्ति व एकता का संचार करते रहे ।

युग पुरुष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज

प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज थे। वे ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मनिष्ठ, महान कर्म योगी संत थे। उनके जीवन में भक्ति ज्ञान व कर्म का सुन्दर समन्वय था। वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक, समाज सुधारक, संत कवि भी थे। उन्होंने अपने सिन्धी हिन्दी काव्य में अपने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के नाम का प्रयोग किया है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि विद्यार्थी जीवन में ही मुझे ऐसी महान विभूति गुरूदेव रूप में प्राप्त हुए। मुझ पर उनकी असीम अनुकम्पा रही। मैंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की है। मुझे कई सम्मान व पुरस्कार मिले हैं उनका श्रेय मेरे गुरूदेव स्वामी शान्तिप्रकाश महारा को है। नौकरी करते हुए कई बार उनके साथ यात्राएं भी की और उनके श्री चरणों में बैठने का मुझे सुअवसर भी मिलां। मेरे बड़े दामाद श्री किशोरलाल चाँडवाणी के पूज्य पिताश्री मोटूमल खेराजमल चाँडवाणी ने मुझे सत्गुरू

स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जीवन चरित्र लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और प्रकाशन की भी व्यवस्था की ।

श्री मोटूमल चाँडवाणी स्वयं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के परम भक्त थे । वे गुरुदेव के आदर्शों अनुसार चलने का प्रयास करते थे । उनके आर्थिक सहयोग से पहले सिन्धी भाषा में फिर हिन्दी भाषा में उपर्युक्त जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ ।

मेरे मित्र श्री मोटूमल चाँडवाणी की आज्ञानुसार उपर्युक्त ग्रन्थ का मूल्य केवा १० रुपया रखा गया । उनकी इच्छा थी कि जन साधारण भी वह ग्रन्थ खरीद कर पढ़ सके । आज के युग में ८४८ पृष्ठों का केवल दस रुपये मूल्य रखना, यह प्रकाशक की उदारता थी ।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का यह जीवन चरित्र एक विशाल चित्रशाला है । बड़ी माता निकलने के कारण बचपन में उनके आखों की रोशनी चली गई । संत हरचूराम की आशीर्वाद एवं सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की असीम अनुकम्पा से उन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई । उन्होंने लाखों लोगों को ज्ञान व प्रेम का प्रकाश प्रदान किया । देश विदेश में जाकर उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडल का यश फहलाया । उनके मन में अपने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के प्रति अनन्य श्रद्धा भावना थी । उनकी आज्ञा श्रोधार्य कर वे स्वयं 'अमरापुर' आस्थान की सेवा भी करते थे तो भक्ति साधना भी करते रहे । उनके मन में मंडल के द्वितीय पीठाधेश्वर स्वामी सर्वानन्द महाराज के प्रति भी वही गुरु भावना थी । वे प्रेम के अवतार थे । वे भगवान

श्री कृष्ण श्याम सुंदर के अनन्य उपासक थे । उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया ।

मैं कालेज में पढ़ाकर शेष समय सत्गुरू महाराज के श्री चरणों में बैठकर सेवा करता था । वे मुझे माता पिता की भाँति प्यार करते थे । उनकी आज्ञा से मैंने दरिद्र नारायन की सेवा आरंभ की और आश्रम में कई उत्सव मनाता था । उनको पता पड़ा कि मैं उनका जीवन चरित्र लिख रहा हूँ । उन्होंने मुझे कहा बेटा प्रेम प्रकाश मंडल में यह प्रथा नहीं कि जीते जी संत का जीवन चरित्र प्रकाशित हो । मैंने प्रार्थना की कि आश्रम की ओर से इस ग्रन्थ का प्रकाशन नहीं होगा । आपके भक्त प्यारे मोटूमल चाँडवाणी व मेरी तीव्र इच्छा है कि आपके सम्बंध में पुस्तक लिखकर प्रकाशित करें । अपने गुरुदेव का यश फैलाना हमारा कर्तव्य है ।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जनता जनार्दन परिषद्, सुंदर शेवक सभा, स्वामी सर्वानंद हास्पीटल, श्री राधेश्याम गौशाला, स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट, स्वर्गधाम शमशान भूमि के अध्यक्ष थे । उनकी प्रेरणा से विभिन्न नगरों में प्रेम प्रकाश मंदिरों का निर्माण हुआ । देश के किसी भी प्रांत में यदि कोई भी प्राकृतिक विपदा आती थी तो स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज शीघ्र ही पीड़ितों की सहायता सेवा के लिए स्वयं घटनास्थलों पर जाते थे और सेवकों को भी सेवा के लिए वहां भेजते थे । कोयना में भूकम्प हुआ, बिहार में अकाल पड़ा, विजयवाड़ा कृष्णा जिले में बाढ़ आई तो सत्गुरु महाराज स्वयं घटना स्थलों पर गये और यथा योग्य पीड़ितों की सहायता

की । स्वराष्ट्र में सोक स्थति थी उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि वहां जाकर बोरंग पम्प लगाकर पानी की व्यवस्था करें । सत्गुरू महाराज की आज्ञा से मैं साथियों सहित वहां गया और सोरठ बंथली जेतपुर, माणवद, बांटवा, कुत्याना में बोरिंग पम्प लगाकर पानी की व्यवस्था की । भोपाल में गैस कांड हुआ, सागर में मार्केट में आग लगी, नौसारी में मार्केट में आग लगी, सूरत में बाढ़ आई तो सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की आज्ञा व प्रेरणा से मैं साथियों सहित पीड़ितों की सहायता के लिए गया ।

स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज समाज सुधारक भी थे । दहेज, मांस-शराब आदि नशीले पदार्थों का परित्याग करने के लिए समाज को प्रेरित किया । उन्होंने जीवदया की ज्योति जगाई, हजारों लोगों ने मांस भक्षण का त्याग किया, वे आजीवन शाकाहारी बने । स्वामीजी पशु पक्षियों को भी प्यार करते थे, वे सदैव गऊ सेवा के लिए प्रेरित करते थे ।

पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सारा जीवन भक्ति साधना करते अज्ञानियों को नाम का अमृत पिलाते हुए मार्गदर्शन करते रहे, वे विभिन्न नगरों में गये और अपने वचनों व्दारा क्या क्या संदेश दिया यह सारा विवरण इस ग्रन्थ में किया है । कई प्रेमी प्रतिदिन यह ग्रन्थ पढ़ते हैं । यह ग्रन्थ अमर साहित्य है । मुझे कई पत्र आये । प्रेमियों ने लिखिा कि यह ग्रन्थ पढ़ने से ही उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आया है । इसी ग्रन्थ में उनके हिन्दी काव्य का भी विश्लेषण किया है । उनके दार्शनिक विचारों का भी निरुपण किया है ।

महान विभूति दादा जशन वासवाणी ने भूमिका में लिखा है :-

परमात्मा अपने प्रतिनिधि संत प्रत्येक देश व जाति में भेजता है। हजारों वर्ष पूर्व भी सिन्ध में संत महात्मा रहते थे। सिन्ध के ऐतिहासिक नगर लाड़काना जिला के डोकड़ी स्टेशन के समीप जब मोहन जो दड़ो की खुदाई की गई तो वहां से कुछ मोहरें (मुद्रा) प्राप्त हुईं। एक मोहर पर एक योगी की मूर्ति थी, जो ध्यान मुद्रा में बैठा था। इस से प्रमाणित होता है कि पांच हजार वर्ष पूर्व भी सिन्ध प्रदेश में योगी, संत-महात्मा रहते थे।

पूज्य दादा साधु टी.एल. वासवाणी समय-समय पर हमें सिन्ध के संतों दरवेशों के सम्बंध में बताते थे। संत वह है जो एकांत व शान्ति में बैठकर आत्मचिन्तन कर साक्षी रूप को पहचानकर, सब प्राणियों में प्रभु का दर्शन कर दुखी लोगों की सेवा करे। दुनिया बहुत दुखी है। "नानक दुखिया सब संसार" संत संसार में आकर दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा करते हैं। ऐसे महापुरुषों में से हमारे संत स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज स्तुति योग्य हैं। उन्होंने आत्म साक्षात्कार कर संसार को प्रेम व शान्ति का प्रकाश दिया।

पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ने लाखों लोगों का मार्ग दर्शन किया। उनके जीवन में स्मरण, सेवा, सत्य, सादगी, स्नेह एवं सहानुभूति की सुगंधि थी। उनके रोम-रोम में पीड़ितों के प्रति हमदर्दी थी।

"वैष्णव जन तो तेणे कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे'

सच्चा संत वह है जो पर पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करता है । कहीं भी यदि प्राकृतिक विपदा आती थी तो स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज न केवल सेवकों को, पीड़ितों की सहायता के लिए वहां भेजते थे किन्तु वे स्वयं भी वहां जाकर पीड़ितों को स्नेह व सहानुभूति देते थे । उनके मन में पशु-पक्षियों के प्रति भी सहानुभूति थी । वे यत्र तत्र मांस भक्षण के विरुद्ध प्रचार करते थे । वे महान विद्वान थे, भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे, भक्त थे, ज्ञानवान थे साथ ही विनम्रता की मूर्ति थे । वे सिन्ध में महान संत परम पूज्य स्वामी टेऊँरामजी महाराज की गादी पर विराजमान होते हुए भी स्वयं को दास कहते थे । उन्होंने अपनी अमृतवाणी में भी अपने सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के नाम का प्रयोग किया है । पूज्य स्वामीजी समाज सुधारक भी थे तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थे ।

संतों महात्माओं के जीवन चरित्र एवं शिक्षाएं अमूल्य निधि हैं । डॉ. दयाल 'आशा' ने अपने गुरुदेव स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का जीवन चरित्र हिन्दी भाषा में लिखकर उत्तम कार्य किया है । इस सुन्दर पुस्तक में न केवल पूज्य स्वामीजी का जीवन विवरण है किन्तु उनके उपदेश एवं शिक्षाएं भी संकलित हैं । इस जीवन चरित्र के पढ़ने से अशान्त लोगों को शान्ति की प्राप्ति होगी, जीवन में परिवर्तन होगा । पाठकों के मन में सद्‌गुणों का समावेश होगा ।

डॉ. दयाल 'आशा' विद्वान हैं, प्रवीण है, उसे कई उपाधियां प्राप्त हुई हैं, किन्तु वह कितना न विनम्र है! वह कितना

न कार्य करता है! एक बड़े कालेज का प्राचार्य है, दीन दुखियों, वृद्धों एवं पशु पक्षियों की सेवा करता रहता है सुंदर पुस्तकें भी लिखता है। उसे कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, शान्ति का अभ्यास करता है, एकांत में बैठकर प्रभु के प्रेम में आंसू बहाता है, प्रेम से पुकारता है, गीत गाता है। ये गीत उसके अन्तःस्थल से निकलते हैं, इसलिए हमारे मन को छूते हैं। सदैव प्यारे दयाल 'आशा' पर परमात्मा, प्यारे दादा साधु वासवाणी एवं पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का आशीर्वाद बना रहे जिससे वह इससे भी अधिक समाज व साहित्य की सेवा करता रहे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराजजी का यह जीवन चरित्र पढ़ने से कई प्रेमियों को नई दिशा मिलेगी और वे लाभान्वित होंगे।

इस ग्रन्थ के सम्बंध में स्वामी देवप्रकाश जी महाराज ने लिखा है :-

"सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का जीवन चरित्र" हिन्दी में लिखकर अपने को कृतार्थ करने वाले प्यारे दयाल 'आशा' हैं। बहुत दिनों से जिज्ञासुओं की अभिलाषा थी कि पूज्य सत्गुरु महाराज जी का जीवन चरित्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो। प्रभु परमात्मा की कृपा से उस कार्य का श्रेय डॉ. दयाल 'आशा' को मिला। मुझे निश्चय है कि भक्तगण इस जीवन चरित्र को पढ़कर, अपना जीवन भी उसी तरह बनाकर मनुष्य जीवन सार्थक करेंगे। सत्गुरु महाराज के जीवन में विशेषताएं थी, जैसे अपने सत्गुरु पूज्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में निष्ठा, गुरुमंत्र निष्ठा, गुरुधाम

(श्री अमरापुर) निष्ठा, गुरुलीला निष्ठा । गुरु को भगवान जैसा महत्त्व देना । जैसा कहना वैसा करना तो कोई पूज्य स्वामीजी से सीखे । संतों की सेवा में सभी कुछ समर्पित करना । समाज सेवा में भी पूज्य सत्गुरु महाराज का बड़ा योगदान रहा । पूज्य सत्गुरु महाराज की बहुमुखी प्रतिभा के आगे सभी नतमस्तक हो जाते थे । वे प्रेम के उमड़ते हुए सागर थे । वे हर दिल में प्रभु प्रेम जगाते थे । उनके गुणों का क्या वर्णन करें! उन्होंने नाम के अनुरूप काम किये । सम्पूर्ण विश्व को शान्ति का संदेश दिया और आध्यात्मिक प्रकाश द्वारा मार्गदर्शन किया एवं अभी भी कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे । सत्गुरु महाराज जैसी विभूति न भूतो न भविष्यति ।

प्यारे दयाल ''आशा'' ने यहां वहां से सद्गुरु महाराज जी का जीवन वृतान्त, प्रयत्न करके एकत्रित कर एक सुन्दर जीवन-चरित्र के रूप में लिखकर अपने को धन्य किया है । सत्गुरु महाराजजी का उन पर सदैव आशीर्वाद रहेगा ।

शेष भगवद् कृपा

आरंभ में सत्गुरु महाराज की आरती भी दी गई है जो श्रद्धालु प्रेमी प्रतिदिन गाते हैं । आरती के साथ सत्गुरु महाराज के सम्बंध में मेरी एक हिन्दी कविता भी है जिस में मैंने सत्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन किया है । उसका प्रथम संस्करण सन् १९९८ में प्रकाशित हुआ था ।

उपहार

नागपुर से प्रकाशित रजनी हिन्दी पत्रिका में समीक्षक श्री राजेंद्र मिश्र ने मेरे हिन्दी काव्य संग्रह "उपहार" की समीक्षा करते हुए लिखा "सरस्वती के वरद पुत्र, लेखनी के धनी, वाणी के आराधक साहित्य के साधक, समाज के बंधु राष्ट्र के प्रेमी डॉ. दयाल 'आशा' के बारे में कुछ भी कहना या लिखना आसान काम नहीं है। उनकी सादगी उनके व्यक्तिगत की पहचान है और उनकी वाणी में साक्षात सरस्वती विराजमान है। उन्होंने मानवता की सेवा कर ईश्वर की सेवा की, एक प्रख्यात कालेज के वे लोकप्रिय प्राचार्य रहे हैं। सरकारी और अर्धसरकारी संस्थाओं ने उनके आदरणीय पुरस्कार इनकी झोली में पड़े हैं। 'उपहार' उनका एक शानदार हिन्दी काव्य संग्रह है, जिस में उन्होंने अपनी गर्जना से सिन्धी और हिन्दी के बीच के सेतु को सुदृढ किया है। समाजों और समुदायों के बीच स्नेह की सरिता बहायी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में ज्ञान, ध्यान, देश सेवा, अध्यात्म के पक्ष को पद्यमय कविता में प्रस्तुत किया है। हम सिन्धी कविता में कवि ने सिन्धी समाज की विशेषताओं और व्यथा कथा दोनों का सहजता से, सरलता से बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है, प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने लिखा है :-

विश्व की प्राचीनतम

सभ्यता

संस्कृति के

उत्तराधिकारी हैं हम

वेदों की रचना हुई

जिस सिन्धु तट पर

उस भूमि के मिट्टी से पैदा हुए हैं हम

हम सिन्ध तथा सिन्धु के प्राणी हैं

तभी तो सिन्धी कहलाते हैं।

डॉ. दयाल आशा ने सामाजिक विसंगतियों पर जहां कटाक्ष किया वहीं समाज का बड़ी कुशलता से मार्गदर्शन भी किया है। बापू कविता की अंतिम पंक्तियां दिल को झंकझोर गई-

तेरे सिद्धांतों को भूल गई अब तेरी संतान,

जागो, चिर नींद से बापू! अपनों ने ही सत्यानाश किया!

कवि ने भक्ति गीत भी लिखे, ग़ज़ल, नई कविताएं भी लिखी हैं। उनकी यह किताब वाकई एक अनूपम कृति हैं, एक अनूपम उपहार हैं। 'उपहार' न केवल पठनीय बल्कि साराहनीय कृति है।''

'उपहार' में मेरे गीत, ग़ज़ल, भक्ति गीत एवं नई कविताएं हैं। मैं स्वयं गीतकार भी हूँ तो गायक भी हूँ, इस लिए

मेरे गीतों में संगीतात्मकता है।

मैं गीत प्यार के गाता हूँ,
यूं अपना दिल बहलाता हूँ।
संगीत का मुझको ज्ञान नहीं,
किसी गायक से पहचान नहीं,
लय ताल से भी अनभिज्ञ हूँ मैं,
हृदय का साज बजाता हूँ,
मैं गीत प्यार का गाता हूँ।

मेरे हिन्दी गीतों से मेरे दार्शनिक विचारों की झलक भी मिलती है।

जीवन है दुख सुख का मिश्रण,
मत घबराओ आए उल्झन,
एक प्रभु का करलो चिन्तन,
मिल जायेगा तुमको सुलझन।

परमात्मा में मेरी पूर्ण निष्ठा और विश्वास है। उनकी असीम अनुकम्पा से कठिन काम आसान हो जाते हैं।

हम अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ बातों में गंवा रहे हैं, हमें श्वासों का सद्उपयोग करना चाहिए।

ये जीवन की घड़ियाँ,
हैं मोतियों की लड़ियाँ।

आकर्षण और आसक्ति के वशीभूत होकर हमें दुख झेलने पड़ते हैं।

फूलों को मत प्यार करो,
कभी काँटे भी चुभ जायेंगे।

मेरे गीत मेरी अनुभूति की उपज हैं:-

एक अपरिचित घर में आया,
मैं उसको पहचान न पाया।
मैं सोया था अवचेतन में,
वह आया मन के आंगन में,
आकर उसने मुझे जगाया,
मैं उसको पहचान न पाया।

शास्त्रों का केवल पाठ पढ़ने से कोई विद्वान या महान नहीं बनता, जो व्यक्ति शास्त्रों की शिक्षा, सिद्धांतों का अनुसरण करता है वह ही महान है। लोग अधिकतर धन के कारण धनवानों को महत्त्व देते हैं, किन्तु कवि उनको महान मानता है जिसके मन में स्नेह सहानुभूति, करुणा की भावना है, दीन दुखियों की सेवा करता है। कवि धनवानों, विद्वानों को सम्बोधित करते हुए कहता है:-

तू ने पढ़ली गीता
मैं ने मन को जीता
कौन बड़ा है भैया? बोलो कौन बड़ा?

तू ने ऊँचे महल बनाये,

मैंने प्रेम के पौधे लगाये,

कौन बड़ा है भैया? कौन बड़ा?

तू धनवान तो मैं हूँ निर्धन,

करुणा सेवा से हूँ संपन्न,

कौन बड़ा है भैया? बोलो कौन बड़ा?

भारत पर जब चीन व पाकस्तान ने आक्रमण किया तब मैंने जवानों को आह्वान किया -

जागो भारत की संतान!

गाओ ऋण भूमि का गान!

दुश्मन ने तुमको ललकारा,

विद्युत बन कर शत्रु पर टूटो

हो शत्रु भूमि श्मशान,

जागो भारत की संतान!

दुश्मन की तू टांग मरोड़ो,

उठ न सके ऐसी हड्डियाँ तोड़ो,

विजय पताका तुम फहराओ,

जय जय जय जय हिन्दुस्तान!

जागो भारत की संतान!

'नवजीवन' गीत में भी कवि प्रेरणा देते हुए आह्वान करते हैं :-

नव जीवन का संचार करो!
निःश्वासों में तू श्वास भरो।
जो डरता है, वह मरता है,
जो साहस से बढ़ता है,
उसको मिलती सफलता है,
मरने से नहीं पहले मरो,
निःश्वासों में तू श्वास भरो।
मानव! प्रभु की तू श्रेष्ठ कृति,
अपनी ऊँची धारो वृत्ति,
प्रथम सच्चा बनो अपने प्रति,
फिर विश्व का तू कल्याण करो,
नव जीवन का संचार करो!

तीस वर्ष पूर्व देश की जो दशा थी उसका चित्र चित्रित करते हुए मैंने कविता में आह्वान किया -

धर्म के रक्षस भक्षक बन गये, देश की करते हानि!
स्वार्थ के वश अंधे बन गये करते हैं क्यों मनमानी!
था चिड़ियों को बाज़ बनाया, वीर निडर निर्भीक बनाया,
भूल गये गुरु गोबिन्द सिंघ को; क्या उनकी कुर्बानी!

भूल गये गुरु तेग़बहादुर की शहादत तू क्यों अब!
भूल गये बलिदान बच्चों का उनकी अमर कहानी!
भूल गये तू बंदा बहादुर, भूले राणा, शिवाजी!
देश धर्म की रक्षा खातिर वीरों की बलदानी!

प्रांतीयता की भावना बढ़ती देखकर मैंने लिखा :-

मां को मत खंडित कर प्यारे, मां के आँखों के तारे!
मां जैसा कोई प्यार न देगा, मत कर तू नादानी!
एक राष्ट्र और एक ध्वज हो, खंडित को तू अखंड करो!
यही ध्येय हो जीवन का यही कार्य है लासानी।
तोड़ फोड़ हड़ताल को छोड़ो, तुम प्रेम का नाता जोड़ो।
प्रांतीयता का भेद मिटाओ, मुश्किल हो आसानी।

भारत की हताश जनता को उत्साहित करते हुए एकता का संदेश दिया :-

अब एक बनो और नेक बनो, भारत का उत्थान करो!
वीरों की तू है संतान, मत भूलो झांसी की रानी।
गौतम, गांधी, बाल, पाल, का स्वप्न तुम साकार करो!
युग युग में 'आशा' गूंजेगी तेरी अमिट कहानी।

'एकता की माला' गीत में भी मैंने राष्ट्रीय एकता का संदेश देते हुए लिखा :-

टूट गई है माला, और बिखर गये हैं मोती!
एक दूसरे को हैं देते, भारत के बेटे चुनौती!
घर का भेदी लंका ढाके क़ौम के पांवों कुल्हाड़ी लगाए,
अपनी खिचड़ी आप पकावे, यह देख देख मां रोती!
नफरत की अब नींद न सोओ,
त्याग प्रेम के बीज तो बोओ,
स्नेह सूत्र में 'आशा' पिरोओ,
ये सब बिखरे मोती!

उपर्युक्त काव्य अंशों से मेरी देश भक्ति व राष्ट्रीय चेतना की झलक मिलती है। पूर्व प्रधान मंत्री नेहरु नंदनी इन्दिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' का जो संदेश दिया, मैंने वह पैग़ाम अपने एक गीत द्वारा दिया :-

गरीबी हटाओ! गरीबी हाटाओ!
गरीबों को अपने गले से लगाओ!
१. कई भाई बहिने हैं भूखे भटकते!
वो मासूम बच्चे तड़पते तड़पते:
वो भूखे, वो नंगे ठंडी से है मरते!
दया क्यों नहीं तू उन पर हो करते!
उठो! प्यास तू भूख उनकी मिटाओ।
गरीबी हटाओ! गरीबी हटाओ!

२. पैग़ाम नेहरु नंदनी का घर घर सुनाओ।
रोटी मकान कपड़ा सब को दिलाओ,
तू धनवान निर्धन का अंतर मिटाओ।
कुरबानी पुरुषार्थ से हिन्द को सजाओ।
नई चेतना के 'आशा' गीत गाओ।
गरीबी हटाओ। गरीबी हटाओ।

पूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए लिखा :-

त्याग तपस्या का प्रतीक,
निपुण निडर नेता निर्भीक।
तू था वामन का अवतार,
तेरे गुण गाता संसार।
तेरा जीवन प्रेरणादायक,
तू था प्यारा जन मन नायक।

मैंने अपने गीतों के सम्बंध लिखा :-

मन के मंथन से,
निकला गीतों का अमृत,
जिस से तृषित तृप्त हुए,
मैं बिना पिये ही अमर हुआ,
हर लब पर मेरा गीत,
मेरे गीत हैं प्यारे मीत।

सन् १९६७ में बिहार में सोक के कारण अकाल पड़ा। संत विनोबा भावे के समन्वय आश्रम बोद्धगया के संचालक श्री द्वारको सुंदराणी ने मेरे सत्गुरु महान कर्मयोगी संत स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को टेलीफोन पर बिहार की दयनीय दशा का उलेख किया। मेरे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जी ने मुझे आज्ञा दी कि शीघ्र ही बोद्धगया जाकर भाई द्वारकों सुंदराणी के सहयोग से सोक पीड़ितों की सहायता सेवा कार्य आरंभ करो। मैं बोद्धगया गया और वहां सेवा कार्य शुरु किया। न केवल मानव सेवा किन्तु पशुओं के चारे की भी व्यवस्था शुरू की। मैंने बिहार का 'आँखों देखा हाल' कविता लिखी।

इसी कविता से प्रभावित होकर बिहार की अकाल स्थिति का उल्लेख किया। इस कविता में करुण रस है।

क्या मैं सुनाऊँ बिहार का भाई आँखों देखा हाल!
हाल देखकर दिल भर आया, वहां नाच रहा था काल।
इन्द्र देवता रूठ गया था, रूठ गया शायद भगवान!
त्राहि! त्राहि! कर भूख में मरते वहाँ लाखों थे इन्सान!
खेत भी सूखे, कुएं भी सूखे! सुमन हृदय का सूख गया!
पंखों वाले उड़ सकते हैं, बे पंखों को ही दर्द भया।
गायें भैंसे अन्य पशु भी भूख प्यास से मरते देखे!
हड़ियाँ उनकी निकल के आईं, मौत से वे भी लड़ते देखे!
ऐसे बिहार के दृश्य देखकर करूणा भी रो पाई!
मैं भावुक रह सकता कैसे? गंगा यमुना बह आई!

लाखों नंगे भूखे मरते बीमारों की बसती बन गई।
जीवन का कोई मूल्य नहीं, मौत वहाँ बस सस्ती बन गई।

उपर्युक्त कविता में मैंने दान दाताओं को आह्वान करते हुए कहा :-

सोए क्यों हो जागो भाई! तुम्हें बुलाए आज बिहार,
दान करो अब अन्न-धन का, भारत माता करे पुकार!

मैंने अपने गीतों के सम्बंध में लिखा :-

'जागो बापू' कविता में मैंने देश की वर्तमान दशा का यथार्थ चित्र चित्रत करते हुए लिखा :

वह गाँव गाँव न रहा, ज़हाँ बापू ने जन्म लिया!
वह देश देश न रहा, जहाँ गांधी ने अहिंसा का संदेश दिया!
आदमी शेर साँप से नहीं, आदमी आदमी से डरता है!
अब यहां हिंसा व आतंक ने राज्य किया!
जहाँ शरीफ लोग शराब से नफरत करते थे,
अब शराब शराब न रही! अमीरों-गरीबों ने अमृत कर पिया!
जिधर देखता हूँ, कंतरी बार, परिमिट रूम! परिमिट रूम!
शराब ने दूध व चाय के दुकानों पर ताला लगा दिया!

कुछ वर्ष पूर्व राजधानी दिल्ली में अशांति एवं आतंक का वातावरण था। उपर्युक्त कविता में मैंने उसका उल्लेख करते हुए लिखा :-

अब शान्ति वन में अशान्ति, शान्ति स्वर्गवास हो गई।

तेरे सिद्धांतों को भूल गई अब तेरी ही संतान।
जागो! चिर नींद से बापू अपनों ने ही सत्यानाश किया!

'उपहार' काव्य संग्रह में मेरी तीन चार गज़लें भी हैं। गज़लों के कुछ शेर पेश हैं :-

अश्क नहीं जिनकी आँखों में, वो इश्क की मस्ती क्या जाने।
ख़ुद को मिटाया जिने नहीं, वो ख़ुद की हस्ती क्या जाने।

तमन्ना है न जीने की तो जीने की ज़रूरत क्या!
मुहब्बत का नशा गरि है, तो पीने की ज़रूरत क्या!
बहाये उमर भर आसूं, जब दिल पै ग़म का डेरा था,
न अरमां है अगर कोई तो, रोने की ज़रूरत क्या!

तू ने मेरे दिल पै बड़ी चोट लगाई है!
क्या ख़ता मैंने की जो नजर मुझसे हटाई है।
मुझको तू भुला सकते हो मैं कैसे भुलाऊँ!
तेरी तस्वीर, मेरी आँखों में समाई है!
रोज़े शब रोती रही मैं तेरे हिजर में।
जब से तू छोड़ गये नींद न आई है।

ग़ज़लों में भाव अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। ग़ज़ल वज़न बहर के आधार पर लिखी जाती है, मैंने वज़न बहर व काफिया का भी अच्छी तरह से प्रयोग किया है।

'उपहार' में मेरी नई कविताएँ भी हैं, इन कविताओं में मेरी विचार धारा एवं वर्तमान युग एवं देश की परिस्थितियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत है :-

''पतन' नई कविता में मानवीय मूल्य की गिरावट दिखाई गई :-

वस्तुओं के मूल्य बढ़ रहे हैं।
जीवन के मूल्य गिर रहे हैं।
विज्ञान ने कितनी न उन्नति की है।
दूरी दूर की बोझा कम किया,
इन्सान की जगह मशीने तेज़ी से काम कर रही हैं।
ब्रह्म की सर्वश्रेष्ठ रचना
मानव दानव होता जा रहा है।
अवनति की ओर अग्रेसर हो रहा है।
मार्यादाहीन! लज्जा हीन!
मां-बाप, दादा-दादी की पहचान नहीं।
बहिनो के साथ बलातकार! अत्याचार!
हाहाकार! अत्याचार!!
एक द्रोपदी के लिये प्रलय हुआ,
आज हजारों द्रोपदियों की इज़्ज़त लूटी जा रही है।
कहां हैं चक्र सुदर्शनधारी, दुष्टों के संहारी?

कहां हैं श्री राम श्रवण जैसे पुत्र आज्ञाकारी!
कहां हैं सीता-सती सावित्री जैसी पतिव्रता नारी!
सभ्यता संस्कृति अपंग हो रही है!
चारों ओर ढकोसला!
हाय कैसी विडम्बना!
जो शराब पीते, पिलाते हैं,
घूस खाते हैं और क्या क्या नहीं खाते!
खून खराबियां करते और कराते हैं,
अशान्ति, आतंक का वातावरण उत्पन्न करते हैं,
अपना उल्लू सीधा करने के लिए,
जनता को उल्लू बनाते हैं!
रक्षक बन गये हैं भक्षक!
महाविद्यालयों में विद्या का विनाश,
मुहब्बत का मैखाना छलकता है!
चलचित्रों चैनल केबल पर प्रतिबंध नहीं!
नेताएं नींद में, नई पीढ़ी जा रही है कहीं!
भविष्य की पीढ़ी कोसेगी!!

प्रदूषण के सम्बंध में 'प्रदूषण' कविता लिखी है, बाह्य प्रदूषण को दूर करने के लिए सरकार बहुत प्रयास कर रही है। वातावरण के प्रदूषण से अधिक भयंकर प्रदूषण है मानसिक

प्रदूषण, इस प्रदूषण को दूर करने के लिए क्या करते हैं?

हवा का प्रदूषण

जल का प्रदूषण

स्वास्थ्य के लिए कितना न हानिकारक।

सरकार उसे दूर करने के लिए

कितना प्रचार करती है?

कितना प्रयास करती है।

फिर भी प्रदूषण का प्रसार।

करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं

बाह्य प्रदूषण को थामने के लिए,

कितने प्रयास किये जाते हैं।

इस प्रदूषण से भी अधिक है

मानसिक प्रदूषण

जो व्यक्ति, परिवार

समाज, देश, दुनिया को दूषित करता है।

इस प्रदूषण को दूर करने के लिए क्या करते हैं।

आतंकवादियों ने कितना आतंक मचाया है, वो देश के, जन-धन की हानि कर अशान्ति व आतंक का वातावरण उत्पन्न कर रहे हैं। आतंकवादी को सम्बोधित करते हुए मैंने लिखा :-

ओ आतंकवादी!
क्यों करते हो
देश की बरबादी!
तुम्हें अपने बच्चे प्यारे,
मेरे भी आंखों के तारे!
तेरी पत्नी मेरी बहिन,
मेरी पत्नी तेरी बहिन,
क्यों उसका सिंदूर लूटते!
तेरा घर वह मेरा घर
क्यों अपने घर को आग लगाते?
बमों की वर्षा बरसाते!
यहां भाँति भाँति के फूल खिले हैं।
क्यों फुलवाड़ी शमशान बनाते?
ओ आतंकवादी!
मत कर तू बरबादी!
तेरे वारिस तुम्हें कोसेंगे!
अब नहीं करो तबाही,
कितने निर्दोषों को मारा!
देश की कितनी सम्पति जलाई?
नहीं करो तबाही!

हम सब भाई भाई ।

अपने आशियां को मत तोड़ो

मानव बन, दिलों को जोड़ो ।

मत बन भक्षक, तू बन रक्षक,

शक्ति का सद्‌उपयोग करो,

प्यार से सब को भरो भरो।

कवि अपने युग का प्रतिनिधि होता है, वह दृष्टा भी होता है और सृष्टा भी होता है । उपर्युक्त कविताओं में मैंने यथार्थ चित्र चित्रित किया है ।

'उपहार' में मेरे कुछ भक्ति गीत भी हैं । इन भक्ति गीतों से भगवान के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा विश्वास की झलक मिलती है । मैं आसतक हूँ और आशावादी हूँ ।

मेरे हिन्दी काव्य में अलंकारों का भी सहज समावेश हुआ है। 'उपहार' का प्रकाशन सन् २००० ई. में मेरी बेटी रिचा (मीना) हरिदयाल अटलाणी ने किया और विमोचन महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विलासराव देशमुख जी ने किया ।

सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज सचित्र जीवन झाँकियां

उपर्युक्त पुस्तक में प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष महान कर्मयोगी संत सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन की कुछ प्रेरणादायक घटनाएं चित्रों सहित प्रस्तुत की गई हैं। यह पुस्तक विशेषकर विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है, परन्तु प्रेमी पाठकगण भी इस पुस्तक पढ़ने से लाभान्वित हो सकते हैं। प्रारंभ में स्वामी देव प्रकाश महाराज ने लिखा है :-

संत महात्मा संसार के कल्याण के लिए अवतार धारण करते हैं। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भी ऐसे महापुरुषों में से थे जिन्होंने कई लोगों का उद्धार किया। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग चित्रों के साथ डॉ. दयाल आशा ने इस सुंदर पुस्तक में प्रस्तुत किये हैं। इस में सत्गुरु महाराज के जीवन की कुछ झाँकियाँ दिखाई गई हैं। इन प्रसंगों व झाँकियों से पाठक प्रेरणा प्राप्त करेंगे। उनके जीवन में नाम स्मरण, स्नेह व सेवा की ज्योति प्रज्ज्वलित होगी।

डॉ. दयाल 'आशा' ने इसके पूर्व सत्गुरु महाराज का

जीवन चरित्र लिखकर उत्तम कार्य किया । मुझे आशा है कि पाठकगण इस पुस्तक से लाभान्वित होंगे । प्यारे कुमार प्रियतमदास डेवनाणी को भी धन्यवाद है जिसने यह हिन्दी संस्कर्ण प्रकाशित किया है ।

विश्व विभूति दादा जशन वासवाणी ने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए लिखा है:-

संतों सत्पुरुषों के जीवन चरित्र सदैव हमारा मार्ग दर्शन करते हैं । उनका पावन परोपकारी जीवन प्रेरणा का स्रोत होता है । ऐसे महापुरुषों में से हमारे संत स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज भी स्तुति योग्य हैं । उन्होंने आत्म साक्षात्कार कर संसार को प्रेम व शान्ति का प्रकाश दिया । स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने लाखों लोगों का मार्गदशन किया । उनके जीवन में स्मरण, सेवा, सत्य, सादगी, स्नेह, एवं सहानुभूति की सुरभि थी, उनके रोम रोम में पीड़ितों के प्रति सहानुभूति थी ।

वैष्णव जन तो तेणे कहिए जो पीड़ पराई जाणे रे ।

सच्चा संत वह है जो दूसरों की पीड़ा को स्व पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करता है । कहीं भी यदि कोई प्राकृतिक विपदा आती थी तो स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज न केवल सेवकों को पीड़ितों की सेवा-सहायता के लिए भेजते थे किन्तु वे स्वयं भी वहाँ जाकर पीड़ितों को स्नेह सहायता व सहानुभूति देते थे । उनके मन में पशु पक्षियों के प्रति भी प्रेम था । वे सदैव माँस भक्षण के विरुद्ध प्रचार करते थे ।

स्वामी शान्तिप्रकाश विद्वान थे, ज्ञानवान थे, भगवान श्री कृष्ण के अनन्य उपासक थे। वे विनम्रता की मूर्ति थे। वे सिन्ध के महान संत स्वामी टेऊँराम महाराज की गदी पर विराजमान होते हुए भी स्वयं को दास समझते थे।

मेरे प्यारे डॉ. दयाल 'आशा' ने अपने गुरुदेव स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग व झाँकियां इस सुंदर पुस्तक में प्रस्तुत की हैं। ये प्रसंग कई लोगों को नई दिशा प्रदान करेंगे। प्यारे दयाल आशा के मन में अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा है। इसके पूर्व दयाल 'आशा' ने अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जीवन चरित्र सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में लिखकर अपनी अनन्य गुरु भक्ति भावना प्रकट की है। प्यारे दयाल आशा पर सदैव ईश्वर की अनुकंपा चमकती रहेगी।

इस पुस्तक में पहले महान कर्मयोगी सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का संक्षेप में जीवन परिचय लिखा है, तत्पश्चात उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सचित्र प्रस्तुत किये हैं, जैसे दूसरों के सुख की चिन्ता, जेल में कैदियों को प्यार, जीव दया, पक्षियों के प्रति सहानुभूति, पशु पक्षियों को जीवनदान, बीमारों की सेवा, दूसरों को खुश रखना, अपाहिजों की सेवा, गरीबों के मित्र, बच्चों को प्यार, पीड़ितों की सहायता, देशभक्त, ईश्वर भक्त, उदार चित्त, वचन पर दृढ़, विनम्रता की मूर्ति, समाज सुधारक, स्त्री उत्थान आदि प्रसंग प्रस्तुत किये गए हैं। स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जीवन संतों व साधकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

विश्व की महान विभूति
दादा जशन वासवाणी

मेरा सौभाग्य है कि उपर्युक्त ग्रन्थ के लिए मुझे सन् २००१ में महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी की ओर से 'काका कालेलकर' २५ हजार रुपये का पुरस्कार तत्कालीन महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री विलासराव देशमुख ने प्रदान किया। इस ग्रन्थ की भूमिका भारत के तत्कालीन विधि मंत्री श्री राम जेठमलाणी ने लिखी है। उन्होंने लिखा है :-

"मैं सिंधी भाषा और लिपि, जिसमें यह पिछले तीन सौ वर्षों से लिखी जा रही है, की समृद्ध परम्परा से प्रेम करता हूँ। मैं मानता हूं कि इस भाषा में देश के विभिन्न हिस्सों में रचे जा रहे समस्त साहित्य को पढ़ने का समय नहीं निकाल पाता हूँ, लेकिन जिन लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों की समय-समय पर प्रकाशित कृतियों को मैं बड़ी उत्सुकता से पढ़ता हूँ, उनमें प्रो. "आशा" दयाल भी हैं।

हमारी महान सिन्धी विभूतियों शाह अब्दुल लतीफ़, सचल सरमस्त और अपेक्षाकृत आधुनिक "बेवस" के साहित्य

को जो भी पढ़ेगा वह निश्चित ही ईश्वर, धर्म और आत्मा की उच्चतर भावभूमि की ओर उठ जाएगा। वह सभी पंथों की तात्विक एकता और सभी मनुष्यों के बीच आधारभूत बन्धुत्व को समझने में चूक नहीं करेगा।

सौभाग्य से मेरे मित्र आशा भी इसके अपवाद सिद्ध नहीं हुए हैं। ''दादा जशन'' में उन्होंने एक अध्यात्मिक विभूति और सिंधी संस्कृति, जिसका प्रमुख रंग सूफियाना है, के एक महान व्याख्याता के जीवनचरित का वर्णन किया है। मेरा विचार है कि उन्होंने ''दादा'' के ज्ञान भंडार की अपनी गहरी समझ और उनके सूक्ष्म दार्शनिक विचारों को सरल सुन्दर और प्रवाहमयी भाषा में व्यक्त कर सकने की अपनी क्षमता के बल पर अथक परिश्रम करके दादा के जीवनचरित के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ स्वान्तः सुखाय का सृजन किया है। उन्होंने इसे सिंधी में लिखा। मेरा विश्वास है कि इस महान ग्रन्थ को अब तक कई लोगों ने पढ़ा है और अपने जीवन को अधिक सार्थक और समृद्ध बनाया है।

स्वभाविक है कि अभी तक यह ग्रन्थ सिंधी भाषियों तक ही सीमित था। मैं अच्छी तरह समझता हूँ और आशा की इस सदिच्छा की प्रशंसा करता हूँ कि इस महान ग्रन्थ को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाने के लिए इसे हिन्दी में भी उपलब्ध कराया जाए। मैं इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ। इससे न केवल हमारी साहित्यिक विभूतियों का बल्कि सिंधी संस्कृति की सम्पदा का भी परिचय एक बड़े पाठक वर्ग से हो सकेगा।

राम जेठमलाणी

यह ग्रन्थ विदेश में रहने वाले दादा जशन वासवाणी के श्रद्‌ालु भक्त श्री चन्द्रु सखराणी ने प्रकाशित किया। उनके सहयोग के कारण ८४८ पृष्ठों के इस ग्रन्थ का मूल्य केवल ५०/ रुपये रखा गया, जैसे जन साधारण इस ग्रन्थ का लाभ प्राप्त कर सके। इस ग्रन्थ में मैंने वर्तमान युग की महान विभूति प्यारे दादा जशन वासवाणी का बच्चपन से लेकर सन् २००० तक जीवन वृत प्रस्तुत करते हुए उनके प्रेरणादायक प्रसंग भी दिये हैं। वे सिन्ध के विवेकान्द हैं। उन्होंने देश विदेश में शान्ति व प्रेम का प्रचार किया है। अब भी १०० वर्ष की आयु में वे अपने प्रवचनों व रचनाओं द्वारा स्नेह सहानुभूति सेवा सत्य सादगी का संदेश सुना रहे हैं। इस लिए आमरीका में उन्हें ऊथांट शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे अंतराष्ट्रीय संत न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिये किन्तु व्यवहार की प्रगति के लिए भी मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे उच्च कोटि के संत साहित्यकार भी हैं तो शिक्षा शास्त्री, दार्शनिक व दीन दुखियों के मसीहा भी हैं। मैं भागयशाली हूं कि ऐसे महान संत का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ है। वे मेरे लिये प्रेरणा के स्रोत्र हैं। वे मेरी आँखों के तारे हैं। उनकी असीम अनुकम्पा से मैंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की है। वे सदैव मेरा मार्गदर्शन करते, प्रोत्साहित करते रहते हैं। इस श्रद्धा भावना से मैंने उनका यह जीवन चरित्र लिखा है। इस ग्रन्थ प्रकाशित होने के बाद कुछ प्रेमियों ने मुझे पत्र लिखे कि इस ग्रन्थ के पढ़ने के पश्चात उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आ गया है। पूज्य दादा जशन वासवाणी जीव दया का अभियान चला रहे हैं। वे कहते हैं जैसे किसी मनुष्य की हत्या करना गुनाह है वैसे पशु पक्षियों को मारना भी बड़ा गुनाह है। सरकार

को ऐसा कानून बनाना चाहिए। ये पशु पक्षी भी प्रभु की मूक संतान हैं।

इस ग्रन्थ में उनके दार्शनिक विचारों का भी निरुपण किया गया है।

कई श्रद्धालु इस ग्रन्थ का बड़ी श्रद्धा व निष्ठा के साथ अध्ययन करते हैं।

आज का विचार

महान विभूति दादा जशन वासवाणी के ३६५ अमूल्य सिन्धी विचार संग्रह का मैंने हिन्दी में अनुवाद किया है। श्रद्धालु प्रेमी प्रतिदिन एक वचन पढ़कर चिन्तन करते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि इस पुस्तक के चार संस्करण प्रकाशित हुए हैं। इस संग्रह में मैंने दादा जशन वासवाणी का संक्षेप में जीवन परिचय दिया है, तत्पश्चात प्रतिदिन के लिए अलग अलग विचार प्रस्तुत किये हैं। दादा जशन वासवाणी के ये विचार अनुभव की वाणी है। ये विचार गागर में सागर हैं, प्रेमी पाठकों का मार्गदर्शन करते हैं। इस संग्रह का प्रकाशन उल्हासनगर के श्रद्धालू प्रेमी श्री विशनदास हरिगुनदास गंगवाणी ने किया।

विश्व विख्यात युग पुरुष
दादा साधु टी.एल वासवाणी

पहले मैंने महान विभूति साधु टी.एल. वासवाणी के सम्बंध में ''भारत के महापुरुष साधु वासवाणी'' पुस्तक लिखी थी। उस में संक्षेप में साधु वासवाणी जी का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया था। फिर २००१ में मेरे प्यारे मित्र चन्द्रू सखरणी ने उपर्युक्त पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में साधु टी.एल. वासवाणी का विस्तार से वर्णन किया है। साधु दादा वासवाणी बहुमुखी प्रतिभा के धनि थे। वे शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, उच्च कोटि के संत साहित्यकार, गरीबों के मसीहा थे। उनके जीवन में भक्ति ज्ञान व कर्म का सुंदर समन्वय था। वे अंग्रेजी व सिन्धी के विद्वान थे। वे भारतीय संस्कृति सभ्यता के संदेश वाहक थे। अंग्रेजी व सिन्धी में उनकी अनेक ज्ञान ग्रभित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने देश के आज़ादी आंदोलन में भी भाग लिया। महात्मा गांधी भी उनकी विचार धारा से प्रभावित थे। उन्होंने जब अंग्रेजी में 'यंग इंडिया' पत्रिका सम्पादित की तब उन्होंने 'यंग इंडिया' के प्रथम अंक के प्रथम पृष्ठ पर साधु वासवाणी का लेख प्रकाशित किया। भारत सरकार के डाक विभाग ने साधु वासवाणी की सामाजिक, शैक्षणिक सेवाओं के कारण उनकी पावन स्मृति में

डाक टिकट प्रकाशित किया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन एक बार उनका दर्शन करने के लिए मीरा भूमि पुणे में पधारे। साधु वासवाणी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् जब वे मीरा भूमि में पधारे तब उन्होंने अपने भाषण में कहा कि साधु वासवाणी का यह स्थान मेरे लिए एक तीर्थस्थल है, मैं यहां एक यात्री के रूप में आया हूँ।''

मैंने इस पुस्तक में साधु वासवाणी का जीवन प्रस्तुत करते हुए उनके सिन्धी हिन्दी काव्य का भी मूल्यांकन किया है। श्री 'नूरी ग्रन्थ' में उनकी सिन्धी एवं हिन्दी वाणी संग्रहीत है। सिन्धी संत काव्य का यह अमूल्य ग्रन्थ है। श्रद्धालु प्रेमी प्रति दिन इस ग्रन्थ का पाठ पढ़ते हैं। इस पुस्तक का आमुख उनके उत्तराधिकारी पूज्य दादा जशन वासवाणी ने लिखा है। वे लिखते हैं :-

कई बार जब मैं दादा (साधु वासवाणी) के समीप आया तब मुझे ऐसा लगता था कि उनके वस्त्रों के छोर को छूने से परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। उनका जीवन गुलाब के फूल की महक और चहकते हुए पक्षी का आशीर्वाद था।

एक समय था जब वे देश के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। उन दिनों उनका नाम रविबाबू एवं महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं के साथ जुड़ा हुआ था। उन्होंने स्वयं को निष्काम भाव से गरीबों की सेवा में अर्पित कर दिया। सदैव उन के हृदय से दया की धारा प्रवाहित होती रहती थी। कभी भी उन्होंने किसी दुखी व्यक्ति को निराश नहीं किया।

दरिद्रनारायण की सेवा ही उनके लिए प्रभु की उपासना थी। प्रतिदिन दादा वृक्षों की छाया में बैठकर दीन-दुखियों अपाहिजों

को पैसा देते थे, इन्हें खाना खिलाते थे, उनमें वस्त्र बाँटते थे; इससे अधिक वे उन्हें अपना हार्दिक आशीर्वाद देते थे ।

जीवन के अंतिम दिवस तक वे गरीबों की सेवा करते रहे । दादा ने उन दुखियों-दरिद्रों में प्रभु का दर्शन किया । उनकी दृष्टी में प्रत्येक प्राणी परमात्मा की प्रतिमा थी । भूखों और पीड़ितों के जीवन में आनंद का संचार करना उनके जीवन की अभिलाषा थी ।

एक दिन एक व्यक्ति दादाजी के पास आया और उसने रूपयों की थैली दादाजी को देते हुए कहा, ये रूपये आप के मंदिर के लिए हैं । दादाजी ने क्या किया? उन्होंने वे पैसे गरीबों को खाना खिलाने में खर्च किये और कहा कि गरीब जिस को खाना मिलता है और वह नाम का स्मरण करता है उसका दिल ही भगवान का पवित्र मंदिर है ।

एक दिन हम दादाजी के साथ मीरा कॉलेज के प्रांगण में वृक्षों की छाया में बैठे थे, तो कुछ सन्यासी लोग दादाजी के साथ मिलने आये । उन्होंने जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने की बातें कही । उनके जाने के पश्चात् दादा ने कहा, मुझे मुक्ति की आकांक्षा नहीं । मैं तो परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे बार-बार इस दुखमय दुनिया में पैदा करें, ताकि मैं भगवान का हथियार बनकर दुखियों का दुख दूर करने में सहायक बनूँ ।

जेब की खर्ची भी गरीबों के लिए : दादाजी बचपन में ही अन्य बच्चों से भिन्न थे । उनको जो प्रतिदिन खर्ची मिलती थी उस में से बचाकर आटा खरीदकर चपातियाँ बनाकर रास्ते में बैठे हुए लंगड़ों, गूगों, सूरदासों को खिलाते थे, और प्रसन्न

चित्त देखते थे । वे जानते थे कि गरीबों, अपाहिजों की सेवा ही प्रभु की भक्ति है । जब वे खाना खाने के लिये बैठते तब भी अगर किसी फकीर की पुकार सुनते तो उठकर अपना खाना उसे खिला देते थे । बचपन से ही वे दया व करूणा की मूर्ति थे ।

पहले से ही दादाजी का मन प्रभुप्रेम से ओत-प्रोत था । वे परमात्मा और परमात्मा की संतति की सेवा में जीवन समर्पित करना चाहते थे । उन्होंने अपने सामने एक फकीर का आदर्श रखा । उन्होंने सांसारिक पदार्थों का परित्याग कर प्रभु की शरण ली, परन्तु अपनी माताजी को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने नौकरी भी की, विभिन्न कॉलेजों के प्राचार्य के पद पर रहे । उनका भविष्य अत्यंत उज्जवल था परन्तु उन्हें पद की कोई लालसा नहीं थी । वे विद्यार्थियों के लिए एक महान् आदर्श थे । उन्होंने माताजी के देहांत के बाद नौकरी का भी त्याग किया । वे भारतीय संस्कृति एवं भारतीय ऋषियों का संदेश संसार को देना चाहते थे ।

दादाजी ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया । वे महात्मा गांधी के समर्थक थे । महात्मा गांधी ने जब "यंग इंडिया" पत्रिका का संपादन किया तब "यंग इंडिया" के प्रथम अंक के मुख पृष्ठ पर दादाजी का लेख प्रकाशित किया । भारतीयों में स्वदेश-प्रेम और आज़ादी के प्रति चेतना लाने के लिए दादाजी ने अंग्रेजी में कई पुस्तकें लिखी, जिन में मुख्य हैं, 'मेरी मातृभूमि', 'हिन्दुस्तान जाग उठा', 'जागो युवा भारत', 'एशिया का रहस्य' इत्यादि ।

दादाजी ने जाति को शक्तिशाली बनाने के लिए युवा केन्द्र स्थापित किये । जहाँ जवानों के चरित्र निर्माण और शारीरिक

शक्ति के विकास पर बल दिया जाता था। उन्होंने राजपुर में शक्ति आश्रम की स्थापना की। दादाजी कहते थे कि ये नौजवान नये भारत के निर्माता और नेता होंगे। उन्हें ऐसा प्रशिक्षण मिलना चाहिये जैसे वे देश की बागडोर अच्छी तरह संभालें।

दादाजी के विचारों के अनुसार आधुनिक विद्यालय एवं विश्व विद्यालय जेल की कोठड़ियाँ थीं जहां विद्यार्थियों को भारतीय आदर्शों एवं भारतीय संस्कृति से दूर रखा जाता है। इस लिये दादाजी ने महसूस किया कि नयी विद्या की अत्यंत आवश्यकता है। 'नयी विद्या' सम्बंधी विचारों को कार्यान्वित करने के लिए दादाजी ने सन १९३३ में 'मीरा हलचल' आरंभ की, जिस द्वारा हजारों विद्यार्थियों को भारतीय सिद्धांतों भारतीय संस्कृति, एवं अध्यात्म का ज्ञान दिया जाता था। भारत की राजनैतिक एवं सामाजिक मुक्ति के लिये ऐसी विद्या की अत्यंत आवश्यकता थी। दादाजी के सिद्धांतोनुसार विद्या और ज्ञान का ध्येय गरीबों की, पीड़ितों की सेवा थी।

दादाजी का सिद्धांत था कि जीवन देने के लिये है नहीं लेने के लिये। गरीबों को खिलाओ, पिलाओ और उन्हें अपना प्यार दो। भगवान कहीं एकांत स्थल पर विराजमान नहीं, वह तो जीवन के संघर्ष, दुखियों की झोपड़ियों में मिलेगा।

दादाजी आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे। हज़ारों लोग, जो अज्ञान एवं माया की आसक्ति के कारण दुखमय जीवन बिता रहे थे, दादाजी ने उन्हें आध्यात्मिक प्रकाश देकर उनके जीवन में सुख का संचार किया। 'नाम' का मंत्र देकर उनके जीवन की नैया इस भवसागर से पार लगाई। दादाजी का यही संदेश था

कि प्रतिदिन प्रभु के प्यार में आँसू बहाओ। उनका स्मरण करो और दुखियों की सेवा करो। इस में ही मानव जीवन का रहस्य एवं सफलता है।

दादाजी उन गूंगों की ज़बान थे, जिनको प्रतिदिन कत्ल किया जाता है। उनके मन में न केवल मानव मात्र के लिए, परन्तु सभी प्राणियों के प्रति प्यार था। इसलिए उन्होंने जीवदया की ज्योति जगाई। दादाजी के इस विचारधार से प्रभावित होकर कई लोगों ने मांस-भक्षण का परित्याग किया।

दादाजी विनम्रता के अवतार थे। उनके आचार और विचार से नम्रता झलकती थीं। वे राष्ट्र के महापुरुष होते हुए एक महान दार्शनिक एवं ओजस्वी लेखक होते हुए भी साधारण व्यक्तियों से भी ऐसा नम्रता के साथ व्यवहार करते थे कि उनकी नम्रता देखकर आँसू आ जाते थे। एक बार जब बम्बई के पत्रकारों ने दादाजी की प्रशंसा करते हुए लिखा कि उनकी आँखों में आध्यात्मिक चमक है, वे महान तत्त्वज्ञानी एवं प्रतिभा संपन्न कवि हैं। तब दादाने नम्रता के साथ कहा कि इन लोगों ने मुझे नहीं समझा, मुझ में तो ऐसा एक भी गुण नहीं है, मैं तो प्रभु का भक्त होना चाहता हूँ। उसी समय दादाजी ने कहा, छोटा बनो, विनम्र बनो, अहंकार का त्याग करो तब तुम प्रभु के नजदीक आ सकते हो। विनम्रता जीवन का आभूषण है।

मुझे प्रसन्नता है कि प्रो. दयाल 'आशा' द्वारा लिखित युग पुरूष दादा साधु वासवाणी'' पुस्तक मेरे प्यारे चन्द्र सखराणी पूज्य माता पिता एवं भ्राता की पावन स्मृति में प्रकाशित कर रहे हैं। यह जीवन चरित्र पढ़कर पाठक गण अवश्य ही लाभान्वित

होंगे । आशा है कि हजारों पाठक इस संजीवनी सदृश जीवनी से प्रेरणा प्राप्त कर लाभान्वित होंगे ।

मेरे प्यारे डॉ. दयाल आशा विद्वान हैं किन्तु विनम्र हैं । वे दादा वासवाणी के भक्त हैं उन्हें विभिन्न पुस्तकों पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । वे संतों महात्माओं के संदेश वाहक हैं । मुझे आशा है कि दयाल आशा और भी ऐसी पुस्तकें लिखेगा, जो मानव मात्र का मार्गदशन करेंगी ।''

महान कर्मयोगी संत स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने इस पुस्तक के लिये शुभ मंगल कामनाएं देते हुए लिखा है :-

''संतों का जीवनचरित्र पावन गंगा सरीका है, जिसके पढ़ने, श्रवण, चिंतन एवं मनन करने से मन निर्मल होता है, भटके हुए जीव को मार्गदशन मिलता है ।

दादा साधु वासवाणी न केवल सिंध के किन्तु भारत के महान संत थे । उनकी ख्याति सारे विश्व में फैल गई । वे आधुनिक युग के ऋषि थे, महापुरूष थे, जिन्होंने दरिद्रनारायण में प्रभु का साक्षात्कार किया । वासवाणी अर्थात् जिकी वाणी वास अर्थात् सुगंधयुक्त हो । उनकी वाणी सुनकर प्रेमी मंत्रमुग्ध हो जाते थे । उन्होंने अपने नाम को चरितार्थ किया । ऐसे महापुरूष को कोटि-क्रोटि प्रणाम ।

स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज

सिन्धी संत

सिन्ध भूमी ऋषि मुनियों की पावन भूमि है। वहां वैदिक संस्कृति पलवित पुष्पित हुई। वहां अनेक संतों व सूफियों ने जन्म लिया। पहले यह पुस्तक करीबन १०० पृष्ठों की थीं, जिस में मैंने ७० सिन्धी संतों का संक्षेप में वर्णन किया था। उनके जीवनवृत्त प्रस्तुत करते हुए विचार धारा का भी विवेचन किया। कुछ वर्षों के पश्चात् सूरत निवासी मेरे मित्र श्री मोरंदमल डासवाणी ने सिन्धी संत पुस्तक द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया, जिसमें सिन्ध प्रदेश के १५० संतों सूफियूं का उल्लेख किया गया है। इन संतों में कुछ सूफी व कुछ कृष्ण भक्त श्री राम भक्त कुछ वेदांती संत हैं। कुछ संत कर्म योगी हैं। उन्होंने नाम के साथ नाता जोड़कर कई परोपकार एवं लोक कल्याण के कार्य किये। उन्होंने मानव मात्र की सेवा भी की तो पशु पक्षियों की सेवा व सुरक्षा की। वे जलचर, थलचर और नभचर के संरक्षक थे, इन संतों ने परमार्थ एवं व्यवहार के लिये मार्ग दर्शन किया, जीने की सच्ची राह बताई। इस पुस्तक में कुछ आधुनिक युवा सिन्धी संतों का भी संक्षेप में उल्लेख किया गया है।

श्री साधुबेला महंत आचार्य स्वामी गणेशदास महाराज ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी है । उन्होंने लिखा है :-

डॉ. दयाल आशा द्वारा लिखित "सिन्धी संत" पुस्तक की भूमिका लिखने में मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है । देश-विदेश में प्रसिद्ध श्री साधुबेला आश्रम की मूल स्थापना जिस सिन्धु नदीके बीच अवस्थित द्वीप - खण्ड पर हुई थी, उस सिन्ध देश ने जहाँ एक ओर मन्त्र द्रष्टा वैदिक ऋषियों को मन्त्रों का साक्षात्कार कराया, वहीं उस पुण्य प्रदेश ने उन्हीं ऋषियों की पावन परम्परा में अनेक महात्माओं, साधुओं, सन्तों और महापुरुषों को जन्म दिया जिन्होंने अपने लोक मंगलकारी कार्यों और उपदेशों से समस्त मानव-मात्र के कल्याण की कामना की और उदात्त मानव- जीवन का उपदेश दिया ।

उन्हीं अनेक सन्तों और महापुरुषों में से कुछ का संक्षिप्त जीवन चरित्र डॉ. दयाल आशा ने "सिन्धी संत" नामक इस ग्रन्थ में "गागर में सागर" ला भरा है । सभी भारतीय संस्कृति के प्रेमियों, विशेषत: सिन्ध के निवासियों को इस पुस्तक में जहाँ अपने मूल देश के संतों का दिव्य परिचय मिलेगा, वहीं जीवन के अभ्युदय के लिये सात्विक प्रेरणा भी मिलेगी ।

सिन्ध देश ने हिन्दू जाति को और हिन्द देश को नाम देकर तो धन्य किया ही है, समस्त मानव-जातिको पवित्र और सात्विक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा भी दी है । इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम श्री उडेरोलाल जी की कथा है जो केवल एक सामान्य संत या महापुरुष ही नहीं, वरन् साक्षात् वरुण देव के अवतार थे । समस्त वैदिक वाङमय और पुराणों में वरुण को इन्द्र के

समान ही अत्यन्त सन्माननीय माना गया है। वैदिक साहित्य में तो ये आकाश के देवता माने गए किन्तु वैदिकोत्त्तर साहित्य में इन्हें समुद्र का प्रतीक माना गया है और पौराणिक साहित्य में जल के देवता बताए गए। ऋग्वेद में इनके स्वरुप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि ये अग्नि के समान तेजस्वी हैं और सूर्य के सहस्त्र नेत्रों से समस्त मानव-जाति के कार्यों का अवलोकन करते रहते हैं। ऋग्वेद में ही बताया गया है कि इनका रथ सूर्य के समान ही चमचमाता हुआ है जिसमें खाभों के बदले नध्रियां (चमड़े की पट्टिया) लगी हुई हैं। शतपथ ब्राह्मण में इनका रंग गोरा, सिर घटा हुआ और नेत्र पीले बताये गये हैं। ये द्युलोक (स्वर्ग) में एक सहस्त्र द्वार वाले भवन में एक सहस्त्र पायों वाले आसन पर बैठकर सारी सृष्टि को देखते रहते हैं। इनके गुप्तचर द्युलोक से उतरकर संसार में घुमते रहते हैं और सब कुछ देखकर वरुण को जा बताते रहते हैं।

वरुण को देवताओं का, मनुष्यों का और संसार का राजा कहा गया क्योंकि ये ही पृथ्वी पर रात और दिन का निर्माण करके उनका नियमन करते हैं। इन्हीं वरुण देव ने श्री उडेरोलाल के रूप में सिन्ध में अवतार लिया था।

इनके अतिरिक्त शाह अब्दुल लतीफ, दीवान सूरत सिंह, साईं पारु शाह, सचल सरमस्त, साईं वसण शाह आदि और भी अनेक प्रसिद्ध सन्त हुए हैं, जिन्की जीवनियों का भी समावेश इस ग्रन्थ में हुआ है। सन्त रोहल बहुत बड़े सूफी सन्त हो चुके हैं जिन पर सन्त रोहल की वाणी शीर्षक ग्रन्थ लिखकर डॉ. दशरथ राज आसनानी ने पी.एच्.डी की उपाधि प्राप्त की है।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से डॉ. दयाल आशा को उनकी कुछ सिन्धी एवं हिन्दी पुस्तकों पर सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । वे अपने सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के भी विशेष कृपा पात्र रहे । डॉ. दयाल साहित्यिक, सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में सदैव सक्रिय रहे हैं ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन से मुझे हार्दिक हर्ष हुआ है । मैं लेखक को चिरजीवन और चिरकीर्तिका आशीर्वाद देते हुए विश्वास व्यक्त करता हूँ कि केवल सिन्धी-समाज ही नहीं, समस्त मानव-समाज इसके अनुशीलन, परिशीलन और अध्ययन से अपना जीवन सफल करेगा ।

संतों के जीवन चरित्र पढ़ने से हमारे जीवन में परिवर्तन आ सकता है । हम आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं और हमारा व्यवहार भी सुधर जायेगा ।

संतों का संग है सुखदाई,

कल्प वृक्ष भांति है फलदाई ।

दादा जशन वासवाणी के जीवन की सचित्र झलकियां

यह पुस्तक श्री चन्द्रलाल कन्हैयालाल मोरयाणी ने २ अगस्त सन् २००२ में अपने अग्रज ब्रह्मलीन भ्राता श्री इन्द्रलाल कन्हैयालाल मोरयाणी की पावन स्मृति में प्रकाशित किया और मुफ्त वितरण किया। इस पुस्तक में मैंने दादा जशन वासवाणी के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग चित्रों सहित प्रस्तुत किये हैं। पुस्तक के आरंभ में साधु टी.एल. वासवाणी के प्यारे दादा जशन वासवाणी के लिए आशीर्वाद वचन दिये हैं। वे प्यारे जशन वासवाणी को आशीर्वाद देते हुए कहते हैं :-

"मैं यद्यपि आयु में बड़ा हूँ, किन्तु आध्यात्मिक शक्ति में प्यारा जशन बड़ा है, इसलिए आज मैं इस से आशीर्वाद लेता हूँ। यदि मैं इसके सम्बंध में बातें बताऊँ तो आपके आँखों में आँसू आ जायेंगे। इस में बहुत ही गुण हैं, कई शक्तियां हैं। आप और मैं उन शक्तियों का लाभ उठायें। यह केवल सिन्धियों का नहीं किन्तु सभी क़ौमों का है। यह मेरे आँसुओं और प्रार्थना का बालक है। आप को पता नहीं कि मैं इस का आशीर्वाद लेता हूँ। मुझे जानकारी है कि शीघ्र ही मुझे इस संसार से प्रस्थान

करना है, इस लिए आज प्यारे जशन से कहना चाहता हूँ कि भारत भूमि मुझे कितनी न प्यारी है! अब यह पावन भूमि टूटी हुई है। अब तक भारत पूरा स्वतंत्र नहीं है। भारत में प्रांतीयता की भावना बढ़ गई है, चारों ओर तोड़ फोड़ व शोर है! कई भारतवासी दुखी हैं! बहुत से लोगों को रहने के लिए मकान नहीं, खाने के लिये अनाज नहीं, पहनने के लिए वस्त्र नहीं! उनकी दयनीय दशा देखकर मेरा मन भर आता है। प्यारे जशन तुम दीन दुखियों की जितनी सेवा कर सको वह मेरी सेवा समझो। उनके प्रति सहानुभूति रखो। पशु पक्षियों, सभी प्राणियों को अपना स्नेह देते रहना। पूज्य पिताश्री से तुम्हें दया की निधि मिली, उस निधि को बढ़ाते जाओ। दया तुम्हारे जीवन का आदर्श होना चाहिए। दया धर्म का मूल है। दया गंगा समान है। आज विश्व को दया रूपी गंगा की आवश्यकता है। तुम अपने जीवन में दया की गंगा प्रवाहित करते रहो, प्यासियों की प्यास बुझाते जाओ। तप्त हृदयों को शीतल बनाते जाओ। जितना हो सके असहायों की सहायता करते रहो! भारत के ऋषि मुनियों का आदर्श अपने सामने रखकर भारत की शान ऊँची करना।''

साधु वासवाणी स्वयं से अधिक महत्त्व अपेन भतीजे प्यारे श्री जशन वासवाणी को देते थे। उनके मन में प्यारे भतीजे जशन के प्रति कितना स्नेह था, यह उपर्युक्त आशीर्वाद वचनों से प्रतिभासित होता है। दादा जशन वासवाणी कितने न भाग्यशाली हैं कि उनके गुरुदेव साधु वासवाणी ने उन्हें भरपूर आशीर्वाद दिया।

आशीर्वाद वचनों के पश्चात् संक्षेप में दादा जशन का जीवन परिचय देते हुए उनके जीवन की कुछ झलकियाँ चित्रों सहित प्रस्तुत की हैं । यह पुस्तक बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है ।

मैंने विभिन्न शीर्षकों से ये यथार्थ घटनाएँ प्रस्तुत की हैं । दयालु बालक जशन, दया की मूर्ति दादा जशन, महान अध्ययन शील, बाढ़ पीड़ितों की सेवा, अपाहिजों की सेवा, कुष्ठ रोगियों की सेवा, खटमंडू में सेवा, हरिजनों को प्यार, बीमारों की देखभाल व सेवा, भूखों को खिलाना, क़ैदियों के प्रति स्नेह, महान भूमि बड़ोदा जेल में, पीड़ित सिन्धी समाज को सांतवना, दूसरों के दुख की चिंता, सब को स्नेह सम्मान, दरिद्रनारायण की सेवा, दादा समाज सुधारक, दादाजी नम्रता की मूर्ति, प्रेमियों की देखभाल, अपाहिज की सहायता, कचरा ढूंढती बुढ़िया को प्यार, स्वर्ण भी सेवा के लिए, स्वयं को सज़ा, दूसरों को सिखाना, बूढ़ों के लिए स्नेह सन्मान, जीव दया - मुर्गियों को मुक्त, पक्षियों के प्रति प्यार, हार्दिक परिवर्तन, कुत्ते पर दया, सूकरों को स्नेह, गुरु भक्त, मछलियों को मुक्त करना, बिल्ली के मरने का अफसोस, माता-पिता भक्त, दादा देश भक्त, दादा ईश्वर भक्त, प्रकृति के प्रति प्रेम, विश्व शान्ति के उपासक ।

इस पुस्तक पढ़ने से न केवल बालक परन्तु बड़े भी लाभान्वित हो सकते हैं । दादा जशन के उपर्युक्त प्रसंगों से हम प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं । वे महान होते हुए भी कितने न विनम्र हैं, सेवा स्नेह सहानुभूति सादगी के स्वरूप हैं ।

स्वर्ण विचार

प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष ब्रह्मलीन ब्रह्मज्ञानी सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज महान कर्मयोगी संत थे। देश विदेश के विभिन्न नगरों में उन्होंने हजारों प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। उनके जीवन में भक्ति ज्ञान व कर्म का सुंदर समन्वय था। मुझे ऐसी महान विभूति के श्री चरणों में बैठने का अवसर मिला। उनकी असीम अनुकम्पा से ही मैं ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की, कई बार उनके साथ विभिन्न नगरों में गया। प्रतिदिन उनके प्रवचन श्रवण करता था। उनके मुख से जो वाणी की अमृत धारा प्रवाहित होती थी, वह मेरी प्यास बुझाती थी। वे मुझे सदैव उत्साहित व प्रेरित करते आशीर्वाद देते थे। उनका सिन्धी व हिन्दी भाषा में जीवन चरित्र लिखा। उनके स्वर्ण सम विचार संग्रह कर उनके इन वचनों को हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद किया और 'स्वर्ण विचार' (Golden Thoughts) पुस्तक रुप में प्रकाशित की। उपर्युक्त कृति चार बार, करीबन बीस हज़ार प्रतियां प्रकाशित हुई हैं। हजारों प्रेमी प्रतिदिन इस पुस्तक का पाठ करते हैं। इस 'स्वर्ण विचार' से वचन पढ़कर अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं।

यह कृति लोकप्रिय हुई है। सुनामी पीड़ितों की सहायता के लिए मैं मद्रास गया। वहां एक प्रेमी ने मुझे १५००० रुपये देते हुए कहा कि मुझे इस पुस्तक की कृपया एक हजार प्रतियां भेजें। मैं बाँटना चाहता हूँ।

महान विभूति पूज्य दादा जशन वासवाणी ने इस पुस्तक की भूमिका अंग्रेजी में लिखी है। उन्होंने आमुख में लिखा है :-

Swami Shanti Prakash there is a fragrance in his name and music in his memory. It is the fragrance of a life which was utterly dedicated to the service of God and His suffering children. And God's children are, also, birds and animals. In this faith, he worked on, day after day, giving solace to those who were in need of comfort and bringing joy into the lives of the joyless ones.

His heart was a home of longing and love-longing for the Lord and for all who dwelt in the house of sorrow. He surrendered his all to the One Life. This is what made his life truely beautiful. And out of him the joy of the Lord flowed out to many.

He taught, preached, bore witness to the truth that not by intellect but by sympathy and service may man attain to the Highest.

He was simple-in dress, in diet, in daily living. Our community needs piteously the message of the simple life. So many of us seem to have forgotten the truth that in simplicity is strength, as in imitation is weakness. And simplicity flowers into sacrifice.

Swami Shanti Prakash's was a sacrificial life. He never thought of his own comfort but of the happiness which

we could bring to others. He had compassion on the poor and served them with humility and love. He had compassion on birds and animals, on creatures that fly or walk or crawl.

To be truly great is to be humble. To be humble is to renounce to be humble is to realise one's nothingness. "One act of true humility," said St. Teresa, "is of more worth to God than all the knowledge in the whole world." And Swami Shanti Prakash was a man of humility. When he succeeded the Guru, he said to the disciples. "I, too, am a fellow-disciple." "To be humble." in the words of Sadhu Vaswani, "is to kindle a light that never fades." Swami Shanti Prakash has kindled a light which will continue to enlighten the path of many, in days to come.

One of his learned disciples - Prof. Dr. Dayal "Asha" - has brought together in this volume some of the practical teachings of his Guru - a teaching for a everday of the year. The teachings are given in three languages - Sindhi, Hindi and English. Prof. Dr. Dayal "Asha" is a man of sympathy and service. He believes profoundly that the modern world, groping in darkness, needs the light of the wisdom of the Saints. In this age of intellectual confusion and moral chaos, he is one of those who believes in and seek to build their lives in moral and spiritual values. He is a lover of silence. He is a man of peace. He practises meditation. And, everyday, he finds time to serve the poor, befriend the lonely and tend the sick. He is a worthy disciple of a worthy master and wishes to spread his message, far and wide.

The thoughts collected together in this volume are rich in practical wisdom.

Here are some of them chosen at random.

This New Year's Day kindle within your hearts.

Little lamps of loVe, sympathy, compassion!

(Jan 1)

In the crematorium, the bodies of princess and peasants alike are burnt on the same platform.

Why, then, all this distinction?

(Jan 17)

Life is uncertain. Whatever good you wish to do, do it now!

Do not defer it till tomorrow, for tomorrow may never come!

(Jan 19)

The desire for worldly goods is insatiable.

Let the heart yearn alone for the Lotus Feet of the Lord.

(Feb. 1)

The foot may silp at any time. Therefore walk wisely and well, with care and caution.

So may you reach with safety the Eternal Goal!

(Feb. 2)

Food belongs to the Lord, but the ignorant man regards it as his own.

Share your food with the hungry!

(Feb. 15)

Beholding the image of the Eternal in every creature, go forth to serve them selflessly.

The happiness you give to others will come back to you. (March 1)

May the simple message of this humble, holy man of God reach many and draw them closer to the Spirit of Truth, Beauty, Goodness, Purity and Perfection. Satyam, Shivam

Sunderam, Pavitram, Poornam.

The Name of the God was on the lips and in the heart of Swami Shanti Prakash. And his hands were ever busy in giving succour to those in need. His eyes lacked sight: but he was a man of insight.

Today, as the winds and storms sweep over our ancient, unhappy land. I think of this simple man who renournced pleasures and possessions and power and adored the One Eternal. His pure, simple, gentle, love-filled life has a message for us :-

Sing the Name!

O, sing the Name!

For mortal man

There's no other way

Than to sing the Name

And serve the poor

And save innocent creatures

From being slain,

Day after day!

J.P. Vaswani

उपर्युक्त पुस्तक के प्रकाशक आचार्य स्वामी देवप्रकाश महाराज ने लिखा है :-

"यह संसार ज़हरीला वृक्ष है, जिसमें दो अमृत के फल हैं। वे हैं सुभाषित वचन तथा सज्जन पुरुषों की संगति। हम आप जीवित हैं इन दो के आधार पर, यदि ये न मिले होते तो हम जीवित नहीं रहते। सन्तों के वचन सब के हित के लिये होते हैं

सत्य होते हैं। मीठे भी लगते हैं। उन महापुरुषों में से हैं एक हमारे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, जिन्होंने अपने हृदय में छिपाये अमृत कणों को भक्तों के कल्याणार्थ वितरित किया। ये अनुभूत वचन वेद के मन्त्रों से कम नहीं हैं। उन वचनों को संग्रह करने तथा अनुवाद करने का अवसर प्यारे डॉ. दयाल "आशा" को मिला, जो पुस्तिका के रूप में आपके हाथों में है। हम आप सभी का कर्तव्य है उन वचनों को हृदय में धारण करें, अनुसरण करें ताकि हमारा जीवन सफल हो। महापुरुषों की अमृतमयी वाणी का लाभ प्राप्त करें इस आशा से यह पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं। महापुरुषों ने संसार को असार समझकर त्याग किया। उसमें से सार वस्तु को ग्रहण किया। उस सार वस्तु को भक्तों पर अनुग्रह करने हेतु वाणी द्वारा प्रकाशित किया, जिस वाणी को हम पढ़कर, श्रवण कर तथा मनन कर, आचरण में लाने का प्रयास करेंगे तो इस से जीवन सफल होगा। वह वाणी महापुरुषों से आचरित होने से असर करती है। उसमें सिर्फ हमारी श्रद्धा तथा विश्वास ही अटूट होना चाहिये।

स्वामी देव प्रकाश

मुझे संतोष व प्रसन्नता है कि हजारों प्रेमी इस 'स्वर्ण विचार' का अध्ययन करते हैं। प्रति दिन के लिए अलग अलग विचार दिये हैं। ईश्वर की असीम अनुकम्पा एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के आशीर्वाद से यह मेरा प्रयास फलीभूत हुआ है।

सिन्ध के कबीर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं उनकी परम्परा के अन्य संत कवि

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक थे। वे सिन्ध प्रदेश की महान विभूति थे। उनका व्यक्तित्व आध्यात्मिक मार्गदर्शक, एक भक्त कवि, दार्शनिक, समाज सुधारक के रूप में मुखरित हुआ। वे स्वतंत्र तथा सात्त्विक जीवन के प्रबल समर्थक थे। उनकी साधना स्वानुभूति तथा सदाचार से सम्बंध रखती थी। उनका जन्म सिन्ध प्रदेश के खंडू गांव में श्री चेलाराम आसनदास क्षत्रिय के घर में हुआ। उनकी माता कृष्णादेवी ईश्वर आराधिका थी। परिवार के भक्तिमय वातावरण में उनका पालन पोषण हुआ। अब उनकी ख्याति देश विदेश में फैली हुई है। उनके लाखों श्रद्धालू प्रेमी अनुयाई हैं। उन्होंने श्री सत्नाम साक्षी का मंत्र देकर हजारों अज्ञानी लोगों का व्यवहार व परमार्थ के लिए मार्गदर्शन किया।

आचार्य स्वामी टेऊँराम महाराज अपने युग के महान संत कवि थे। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में काव्य रचना

की। उनकी अमूल्य वाणी प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में संग्रहित है। उनका काव्य स्वानुभूति का सृजन है। आज भी हजारों श्रद्धालु प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ पढ़ते हैं। उनकी वाणी आज भी व्यवहार एवं परमार्थ की प्रगति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। उपर्युक्त पुस्तक में मैंने पहले उनके प्रेरणादायक जीवन का संक्षेप में उल्लेख किया है, फिर उनके हिन्दी काव्य का मूल्यांकन किया है। उनके दार्शनिक विचारों का विवेचन किया है। संत कबीर एवं अन्य संत कवियों की भांति स्वामी टेऊँराम महाराज ने गुरु का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए लिखा है :-

सत्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे, कहे टेऊँ सत् मान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति होवे, कहते वेद पुरान।
प्रथम वंदू गुर पारब्रह्म शिवरूप,
जिहं प्रसादे पाइया आत्म ब्रह्म स्वरूप,
सत्गुर हरि की देह है यां में संशय नाहिं,
कह टेऊँ गुर ध्यान धर, हरि देखो तिहं माहिं।

स्वामी टेऊँराम महाराज गुरु-मंत्र की महत्ता प्रतिपादित करते हुए जिज्ञासू से कहते हैं :-

सत्गुर के सत् शब्द का करले निशदिन जाप।
कह टेऊँ जिस जाप से मिटे सकल संताप।।

सत्गुरु भगवान के रूप हैं, उनका स्थान स्वर्ग के समान है और उनके चरणों का स्पर्श जल गंगा जल के समान है।

गुरू चरनामृत जल, वैकुण्ठ गुरु स्थान।

सत्गुरु विष्णु स्वरूप है, कहते वेद पुरान ।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज संत एवं कवि के साथ-साथ दार्शनिक भी थे । मैंने उनके दार्शनिक विचारों का विवेचन भी किया है । उन्होंने अपने हिन्दी काव्य में ब्रह्म जीव, जगत्, माया, मुक्ति सम्बंधी विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने अद्वैत सिद्धांत का समर्थन किया है ।

ब्रह्म अखंड अद्वैत अनामय सत्चित्त आनंद राशि है ।
कहे टेऊँ सो प्रत्यक्ष जानो साक्षी स्वयं प्रकाशी है ।।

'एको ब्रह्म द्वितीय नास्ति' वेदान्त सूत्र का समर्थन करते हुए स्वामी टेऊँराम महाराज कहते हैं :-

साक्षी चेतन ब्रह्म का सब घट मैं है वास ।
कह टेऊँ शशि सूर्य मैं तांका है प्रकाश ।।
साक्षी चेतन रम रहा जल थल पुनि आकाश ।
कह टेऊँ तिहं जानके पाओ सुख अविनाश ।।

स्वामी टेऊँराम महाराज ने निर्गुण ब्रह्म के साथ सगुण ब्रह्म का भी अपने काव्य में उल्लेख किया । वे भगवान श्री कृष्ण एवं उनकी बाँसुरी व रास लीला का वर्णन करते हुए अपनी मनोदशा भी व्यक्त करते हैं :-

वृन्दावन मैं बीन बजाए मोहन मुझको मोह लिया है,
सुनकर मुरली भयी मस्तानी, छूट गई कुल की सब बानी,
रास रचाए मौज मचाए, हरि ने हमको मस्त किया है ।

प्रीति प्रभु से जब ही लागी तब ही मन की सुध सब भागी ।

नींद न आवे कछु न भावे, पल पल आता याद पिया है ।

कवि स्वामी टेऊँराम महाराज राम नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

राम नाम का जाप करे तुम जन्म जन्म के पाप हरो।

राम नाम की निर्मल बानी, राम नाम है सब सुख दानी ।

राम नाम को स्मरे प्रानी, तन मन के संताप हरो ।

सब ही संत कवियों ने सत्संग की महिमा गाई है । स्वामी टेऊँराम महाराज भी सत्संग का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहते हैं :-

सत्संग तीर्थ रूप है सत्संग मोक्ष द्वार,

कहे टेऊँ तज कुसंग को सत्संग कर निर्धार ।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग,

कह टेऊँ इनके किये होवे भव दुख भंग ।।

प्रेम की प्रधानता प्रतिपादित करते हुए कवि कहते हैं :-

धन विद्या गुण रूप बल, भावत ना भगवान ।

टेऊँ हरि को भावहीं प्रेम एक प्रधान ।

स्वामी जी ने अपने काव्य में योग साधना का भी उल्लेख किया है । वे साधक से कहते हैं :-

गुर मंत्र में सुरति समाओ जग में होत निराला रे ।

नाभ कमल में प्राण उठाये दसम द्वार कर आला रे ।

नान अनाहद में बाजत ताहीं सुनिये शब्द रसाला रे ।
नाड़ि कुण्डलनी को जगाए खोलो अनुभव ताला रे ।
कोटि रवि शशि आदि ज्योति का तांहि उज्याला रे ।
कहे टेऊँ तहं चलकर देखो, आत्म पुरुष अकाला रे ।

संत कबीर एवं अन्य निर्गुण संत कवियों की भांति स्वामी टेऊँराम महाराज ने भी उलटवासी पदों की रचना की है । प्रस्तुत है उनका एक उलटवासी पद, जिस से स्वामी जी की आध्यात्मिक ऊँचाई का भास होता है ।

यह साधो शक हमारी, उत्तर देह विचारी,
एक नार के तीन पुत्र हैं, तांकी बहुत कन्याएं,
आपस में नित झगड़ा करती, किस की हो जयकारी,
पुरुष निपुसंक, नारि बांझ को उभय रूप सुत जन्मिया,
हाथ पांव बिन कहो कौन जो जीते सृष्टि सारी,
एक पुरुष को बहुत कुटम्ब है, तीन लोक में छाए,
कहे टेऊँ सुत कौन उसी में, जिह निज जाति संहारी ।

यहां नारि माया के रूप में, एवं उनके तीन पुत्र सतो, रजो, तमो के रूप में प्रस्तुत हुए हैं । पुरुष निपुसंक ब्रह्म का प्रतीक है ।

स्वामी टेऊँराम महाराज संत कबीर, श्री गुरू नानक देव महाराज एवं अन्य संत कवियों की वाणी से प्रभावित हैं । उन पर तत्कालीन सूफियों का प्रभाव भी है । वे एक गज़ल में कहते हैं :-

अगर तुम इश्क को चाहो, दुनिया को छोड़ देवाना,
तजे तुम आस जगतर की, जिसम का तोड़ अभिमाना।
कहे टेऊँ लजा तोड़े, इश्क की राह पर चलना।
बढ़ाओ कदम हो निर्भय, मरन से नाहिं घबराना।

स्वामी जी का सुधारवादी दृष्टिकोण भी उनके काव्य से प्रतिभासित होता है। उनके काव्य में जीवन उपयोगी शिक्षाएं भी हैं :-

पर के दोष न देखिये, देखो अपना दोष,
क्रोध न कीजे और पर मन पर कीजे रोष।

समय का अति कदर करना, खोइये न कुसंग में,
जो बचे व्यवहार से सो सफल कर सत्संग में।

काम करो विचार से नाम जपो मन लाय।
दान करो दिल खोल के कह टेऊँ सुख पाय।।

घृणा किस से ना करो, है हरि सब का मूल।
कह टेऊँ हरि अंश लख, हो सब के अनकूल।।

त्याग तप सत्य सादगी प्रार्थना विश्वास।
कह टेऊँ ये साधके पाओ सुख अविनाश।।

स्वामीजी के शान्ति के दोहे व सोलह शिक्षाएं यदि हम जीवन में अपनायें तो हमारा जीवन सफल हो जाए। 'प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' एक मानसरोवर है, कोई हंस मोती चुगे। इस ग्रन्थ की वाणी आज भी व्यवहार एवं परमार्थ के लिये हमारा मार्गदर्शन करती है। स्वामीजी के काव्य में शांत रस प्रधान है और वियोग श्रृंगार गौण है। सत्गुरु महाराज ने भारतीय छन्द शास्त्र एवं भारतीय राग रागनियों के आधार पर काव्य रचना की है। दोहे, सवैये, पद आदि लिखे हैं। उनके काव्य में उपमालंकार, रूपक अलंकार, उदाहरण व दृष्टांत अलंकारों और शब्द अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है।

सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज के धर्मपीठ के उत्तराधिकारी, प्रेम प्रकाश मंडल के द्वितीय अध्यक्ष सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज आध्यात्मिक मार्गदर्शक के साथ संत कवि भी थे। स्वामी सर्वानन्द महाराज ने परम्परा से प्रभावित होकर काव्य रचना की है। स्वामी सर्वानन्द महाराज के सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज महान संत कवि थे। उनके सम्पर्क में रहने के कारण स्वामी सर्वानन्द महाराज ने भक्ति साधना के साथ साथ काव्य साधना भी की। उन्होंने स्वरचित काव्य में अपने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के नाम का प्रयोग किया है। उन्होंने सिन्धी व हिन्दी में काव्य रचना की। उनके तीन हिन्दी खंड काव्य प्रकाशित हुए हैं।

१) **वामन - बलि :** स्वामी सर्वानन्द महाराज ने वामन-बलि की कथा हिन्दी खंड काव्य में लिखी है। यह कथा श्रीमद् भागवत के आठवें स्कंध से ली गई है। स्वामी सर्वानन्द

महाराज ने यह कथा राधेश्याम तरज़ पर सरल सुगम काव्य में प्रस्तुत की है। मैंने इस खंड काव्य का उपर्युक्त पुस्तक में मूल्यांकन किया है। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के दार्शनिक विचारों का भी निरुपण किया है।

२) यमराज और नचिकेता की कथा (खंड काव्य)

यह मूल संस्कृत कथा यजुर्वेद के कठोपनिषद में है। जब सत्गुरु सर्वानन्द महाराज ने उपर्युक्त कथा का अध्ययन किया तब उनके मन में विचार आया कि सिन्धी लोगों को यह वेदान्तिक कथा समझ में नहीं आयेगी। इस विचार से उन्होंने उपर्युक्त कथा सरल सबोध हिन्दी भाषा में खंड काव्य के रूप में लिखी।

स्वामी जी ने यह कथा राधेश्याम लावणी में लिखकर इसे संगीतमय बना दिया। इस में दोहा छंद का भी प्रयोग हुआ है। यह कथा दुखों से निवृत्ति करने वाली, ज्ञान ग्रभित है, मोक्ष दायनी है। आत्म साक्षात्कार करने के लिये यह कथा ज्ञान दीपिका है। उपर्युक्त पुस्तक में मैंने इस खंड काव्य की समालोचना प्रस्तुत की है, सर्वेक्षण किया है।

३) कथा राजा शिखर ध्वज और चूड़ाला रानी की (खंड काव्य) :

इस काव्य में वर्णित विषय मनन एवं निधिध्यासन करने योग्य हैं। व्यवहार चाहे परमार्थ के लिये यह काव्य हमारा मार्गदर्शन करता है। इसमें पतिव्रत्य धर्म पालन करने का विशद वर्णन किया गया है। रानी चूड़ाला अपने पति राजा शिखर ध्वज के कल्याण एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिये अनेक कष्टों

कठिनाईयों को झेलती है। इस काव्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि अनेक पदार्थों के होते हुए भी वास्तविक आनंद की प्राप्ति नहीं होती है। राजा शिखर ध्वज के यहां राज्य के सारे वैभव पदार्थ विद्यमान थे फिर भी उसे शान्ति की प्राप्ति नहीं हुई। उसने इन सबका परित्याग करके जंगल में जाकर भगवद् स्मरण द्वारा ज्ञान व शान्ति की प्राप्ति की। इस काव्य में ब्रह्म ज्ञान, वैराग्य, एवं योग कला आदि विषयों का विशेष वर्णन किया गया है।

मैंने उपर्युक्त खंड काव्यों का साहित्यिक मूल्यांकन किया है। स्वामी सर्वानन्द महाराज के दार्शनिक विचारों का विवेचन करते हुए इस खंड काव्य के कला पक्ष पर भी प्रकाश डाला है।

स्वामी ग्वालानन्द महाराज :

स्वामी ग्वालानन्द महाराज प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के अनुज थे। उनका जन्म खंडू गांव में व्यास पूजा के पावन दिन सन् १८९८ ई. में हुआ।

परम्परा के प्रभाव एवं भगवद् भक्ति की तन्मयता तल्लीनता के कारण स्वामी ग्वालानंद महाराज के मुख से काव्य मंदाकनी प्रवाहित हुई। उनके अग्रज संत स्वामी टेऊँराम महाराज तत्कालीन समय के एक महान सिन्धी एवं हिन्दी कवि थे जिनका हम उल्लेख पूर्व कर आये हैं। स्वामी ग्वालानंद महाराज अधिकांश समय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के सम्पर्क एवं सेवा में रहे। उनके सान्निध्य में रहने के कारण एवं घर के भक्तिमय वातावरण के कारण स्वामी ग्वालानंद के मन में प्रभु के प्रति अगाध श्रद्धा विश्वास उत्पन्न हुआ। उन्हें अपने

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के प्रति भी अटूट श्रद्धा एवं निष्ठा थी। उन्होंने भारतीय राग रागनियों एवं छंद शास्त्र के आधार पर काव्य रचना की है। 'आत्म प्रकाश', 'ग्वाल श्लोकावली', 'ग्वाल भजन मुक्तावली', 'ग्वाल अमृत सागर', 'ग्वाल छपयावली', 'पंच अमृत निधि' काव्य कृतियां प्रकाशित हुई हैं। तत्पश्चात् उनकी सारी वाणी का संकलन 'श्री ग्वालानंद ग्रन्थ' रूप में प्रकाशित हुआ।

उपर्युक्त पुस्तक में मैंने स्वामी ग्वालानंद के जीवन का संक्षेप में उल्लेख करते हुए उनके हिन्दी काव्य का साहित्यिक मूलांकन किया है। 'श्री ग्वालानंद ग्रंथ' में समाहित कवि के दार्शनिक एवं काव्य कलात्मिक विशेषताओं का वर्णन भी किया है।

स्वामी गुरुमुखदास महाराज :

स्वामी गुरुमुखदास महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के वयोवृद्ध संत थे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज उनके मामा भी तो सत्गुरु भी थे। वे स्वामी टेऊँराम महाराज की परम्परा के संत थे उन्होंने अपनी वाणी व व्यवहार से अपने नाम को सार्थक किया। उन्होंने हिन्दी एवं सिन्धी में काव्य सृजन किया। वे मधुर गायक भी थे। वे इकतारा पर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं अपनी बाणी ऊँचे स्वर में गाते थे। उपर्युक्त पुस्तक में मैंने उनके जीवन का संक्षेप में उल्लेख करते हुए उनके हिन्दी काव्य का साहित्यिक मूल्यांकन किया है। वे भी परम्परा से प्रभावित रहे उनके दोहे शिक्षाप्रद हैं। उन्होंने भारती छंद शास्त्र के अनुकूल एवं भारती राग रागनियों के आधार पर काव्य सृजन किया है।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज :

प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज कवि हृदय थे। भक्ति साधना करते करते उनके मुख से काव्य धारा भी प्रवाहित हुई। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में काव्य रचना की। वे संगीत के मर्मज्ञ थे। उन्होंने अधिकतर भारतीय राग रागनियों के आधार पर काव्य रचना की। इसके कारण उनके काव्य में संगीतात्मिकता है, लय ताल है, इस लिए आजकल कई संत एवं सिन्धी गायक उनकी मधुर वाणी गाते हैं। भारतीय संत कवियों की परम्परानुसार उन्होंने अपने सत्गुरू की महिमा गाई है। भगवान श्रीकृष्ण उनके इष्ट थे। रसेश्वर श्यामसुंदर के सम्बंध में भी स्वामीजी ने प्रेमा भक्ति से ओत-प्रोत पद लिखे हैं। उन्होंने अपने काव्य में अपने नाम का प्रयोग न कर गुरूदेव स्वामी टेऊँराम महाराज के नाम का प्रयोग किया है। उनकी वाणी अनुभव की वाणी है।

स्वामीजी का सिन्धी काव्य 'भजन बहार' में संग्रहीत है और उनका हिन्दी काव्य "स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का व्यक्तित्व एवं हिन्दी काव्य" में संग्रहीत है।

उपर्युक्त पुस्तक में मैंने पहले संक्षेप में सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जीवन परिचय देते हुए उनके हिन्दी काव्य पर प्रकाश डाला है। प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी उन्होंने हजारों प्रेमियों को ज्ञान का प्रकाश दिया। उनकी वाणी आज भी हमारा मार्ग दर्शन करती है। वे महान कर्मयोगी विभूति थे।

स्वामी बसंतराम महाराजा :

स्वामी बसंतराम महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के प्रकांड पंडित विद्वान संत थे।

स्वामी बसंतरामजी ने भी परम्परानुसार अपने काव्य में गुरु की स्तुति गाई है। उन्होंने गुरु को पूर्ण ब्रह्म के रूप में स्वीकार किया है। गुरु ही देवन के देव हैं। उनकी सेवा करने से जीव अपने आत्मस्वरूप का साक्षात्कार कर सकता है।

सत्गुरु पूरन ब्रह्म हैं, सत्गुरु देवन देव।
बसंत गुरु की सेव कर, पाय निजातम भेव।।

गुरु की महत्ता प्रदर्शित करते हुए कवि कहते हैं कि इस संसार में एक गुरु ही समर्थ हैं जो जीव को इस भवसागर से पार लगा सकते हैं :-

बसंत जग में एक हैं, समर्थ सत्गुरु देव।
पार करत भव सिन्धु से, दे निज आतम भेव।।

भव सिन्धु गहर गम्भीर है, गुरु बिन तरियो न जात।
करणाधार गुरुदेव ही, बसंत पार लगात।।

जैसे चक्षुहीन किसी भी पदार्थ को देख नहीं सकता उसी प्रकार मनुष्य भी गुरू उपदेश बिना आत्मज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता है :-

जैसे नैन विहीन को होत न रूप विज्ञान।
गुरू उपदेश बिन होत न तैसे आत्म ज्ञान।।

मैंने उपर्युक्त पुस्तक में स्वामी बसंतराम महाराज के दार्शनिक विचारों एवं अन्य विषयों पर प्रकाश डालते हुए साहित्यिक मूल्यांकन किया है। उनके हिन्दी दोहे शिक्षाप्रद व ज्ञान ग्रभित हैं। उनकी वाणी हमारा मार्गदर्शन करती है।

प्रेम प्रकाश मंडल के चतुर्थ उत्तराधिकारी स्वामी हरिदासराम महाराज एवं प्रेम प्रकाश मंडल सम्बंधित अन्य संत कवि संत भजन दास, पंडित शीतलदास, डॉ. परमानंद बदलाणी, संत भक्त प्रकाश (चावला), संत वासुदेव, का संक्षेप में जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके हिन्दी काव्य का उल्लेख किया है।

प्रेम प्रकाश मंडल के वर्तमान अध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश, संत ब्रह्मानंद, स्वामी रामकृष्ण महाराज, संत वेद प्रकाश, संत मनोहरलाल, संत चेतन कृष्ण, संत प्रभदास प्रेम प्रकाशी, डॉ. दयाल आशा ने भी हिन्दी में काव्य रचना की है।

वर्णित संत एवं सद्गृस्ती भारतीय संत काव्य परम्परा से प्रभावित एवं जुड़े हुए हैं।

परिगुंठित पुष्प

यह मेरा निबंध संग्रह है जिस में मेरे साहित्यिक समालोचनात्मक, खोजनात्मक एवं जीवनी निबंध है। आरंभ में श्री साधुबेला महन्त आचार्य स्वामी गणेशदास जी महाराज का आशीर्वाद पत्र है। यह पत्र महत्त्वपूर्ण व उलेखनीय है।

प्रियवर डॉ. दयाल ''आशा'' जी,

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली ने आपको नैशनल सिन्धी कौंसिल का सदस्य चुना है, आज ''दोपहर'' समाचार पत्र में यह समाचार पढ़कर मुझे महती प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

सिन्धी समाज एवं सिन्धी साहित्य के प्रति आपके योगदान का आंकलन करके ही केन्द्रीय प्रशासन ने यह सम्मान आपको प्रदान किया है। इससे हरेक सिन्धी भाई का मस्तक गर्व से ऊंचा उठा है।

साहित्य का सृजन तो लोग करते ही रहते हैं मगर स्त्तरीय सृजन कम ही लोग कर पाते हैं। आपका साहित्य समाज के लिये वह आइना है जो समाज को बहुत कुछ दिखा देता है,

सिखा देता है। स्तरीय साहित्य के प्रति आपका रुझान इसी तरह बना रहे, मेरी कामना है। साहित्य के अतिरिक्त समाज के हर वर्ग के लिये आपने अत्यंत उपयोगी कार्य किए हैं जिसकी चर्चा यत्र तत्र होती रहती है। एक उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री के नाते भी आपने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक श्रेयस्कर कार्य किए हैं और अनवरत् किए जा रहे हैं।

नाम और यश पाकर कई लोग अहंकार और मद में चूर हो जाते हैं मगर आप के अन्दर जरा भी अहंकार नहीं। सरलता एवं सादगी आपके आभूषण हैं जो हरेक को अपनी ओर आकृष्ट किए रहते हैं। संतों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा एक श्रेष्ठ गुणको परिलक्षित करती है। भविषय में भी आपका सक्रिय योगदान सिन्धी समाज एवं साहित्य को मिलता रहे, अनवरत शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका अपनाते रहें तथा सर्वत्र नाम एवं यश पाते रहें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, आपका अपना।

आचार्य स्वामी गणेशदास

इस पुस्तक का प्रथम निबंध सिन्ध के सर्वश्रेष्ठ कवि शाह लतीफ, सामी साहिब एवं सचल सरमस्त के सम्बंध में है। इन तीनों कवियों का संक्षेप में जीवन वृत्त प्रस्तुत करते हुए उनके सिन्धी काव्य का साहित्यिक मूल्यांकन किया है, उनके दार्शनिक विचारों का भी विवेचन किया है।

दूसरा निबंध है "सिन्धी भाषी रचनाकारों द्वारा हिन्दी सेवा"। सिन्धी भाषी होते हुए इन रचनाकारों ने हिन्दी में साहित्य सृजन किया है, उनकी रचनाओं का संक्षेप में उल्लेख किया है। यह खोजनात्मक निबंध है।

तीसरा लेख सिन्ध के अवतार श्री अमर उडेरोलाल के सम्बंध में है। वे वरुण देवता के अवतार थे। उन्होंने हिन्दुओं की धर्म रक्षा के लिए अवतार धारण किया। सिन्धी समाज उन्हें अपना इष्ट मानती है।

चौथा लेख 'सिन्धी भाषा और देवनागरी लिपि सम्बंध अटूट' विषय पर है। यह भी खोजनात्मक लेख है। इस निबंध में सिन्धी भाषा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सिन्धी भाषा या देवनागरी लिपि से अटूट संबंध रहा है, उसका इतिहास साक्षी है।

पाँचवा निबंध साहित्यिक खोजनात्मक है "सिन्ध के कृष्ण भक्त हिन्दी कवि"। सिन्धी भाषी कवि जिन्होंने हिन्दी में कृष्ण भक्ति काव्य का सृजन किया है, उनका मूल्यांकन किया है।

छठा निबंध है 'सिन्धी में भक्ति काव्य, स्वरूप व प्रभाव' मेरा यह साहित्यिक एवं खोजनात्मक निबंध है।

सातवां साहित्यिक निबंध है 'सिन्ध के कबीर संत रोहल'। इस लेख में मैंने संत रोहल की तुलना संत कबीरदास से की है।

आठवां लेख है 'साम्प्रदायिक सौहार्द सहिष्णुता' मेरी यह रेडियो वार्त पहले आकाशवाणी के विविध भारती केन्द्र से प्रसारित हुई। इस वार्ता द्वारा मैंने राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। यह लेख नवभारत टाइम्स में भी प्रकाशित हुआ।

उपर्युक्त पुस्तक में ९वां निबंध है 'दादा साधु टी.एल.

वासवाणी का साहित्य में योगदान'। साधु टी.एल वासवाणी महान विभूति थे। वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक, समाज सुधारक, दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री अपने युग के महान संत कवि भी थे। इस निबंध में मैंने उनके साहित्य के सम्बंध में विचार व्यक्त किये हैं। मेरी यह वार्ता आकाशवाणी के पुणे केन्द्र से प्रसारित हुई थी।

इस पुस्तक का दसवां लेख है 'सिन्धी संतों का भारत में शिक्षा एवं सेवा में योगदान'। कुछ सिन्धी संतों ने आध्यात्मिक उन्नति के लिये मार्गदर्शन करते हुए सेवा एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान दिया है। उनके सम्बंध में मैंने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

ग्यारहवां निबंध है 'अमन एकता के अवतार श्री गुरु नानक देवजी महाराज'। इस लेख में मैंने कल्युग के अवतार श्री गुरू नानक देव महाराज का संक्षेप में जीवन वृत्त प्रस्तुत करते लिखा है कि आज भी उनकी वाणी व विचार हमें शान्ति का संदेश देते हैं।

बारहवां लेख 'अमर शहीद कंवरराम के सम्बंध में है। वे परोपकारी पुण्य आत्मा थे।

तेरहवां निबंध है 'गुरू गोबिन्द दोनों खड़े काके लागौ पाय'' । इस लेख में मैंने गुरू की महिमा उजागर की है। विभिन्न संतों की वाणी के उदाहरण देते हुए गुरू महिमा प्रतिप्रदित की है। गुरू ज्ञान का दाता है, जो प्रभु से मिलता है। मैंने अपने विचार व्यक्त करते हुए गोबिंद की अर्थात् भगवान को महत्त्व दिया है क्योंकि गुरू भी ईश्वर की ही उपासना करता है।

१५वां निबंध मैंने अपने ब्रह्मलीन, ब्रह्मनिष्ठ, महान कर्मयोगी संत सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के सम्बंध में लिखा है। प्रज्ञा चक्षु होते हुए भी उन्होंने लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कई परोपकार के कार्य किये। वे न केवल महान संत थे किन्तु समाज सुधारक, दीन दुखियों के मसीहा थे, गऊ रक्षक थे, संत कवि थे। प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष थे। उनकी असीम अनुकम्पा से मैंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की है। वे करूणा व प्रेम के अवतार थे।

अंतिम निबंध विश्व विख्यात संत दादा जशन वासवाणी के सम्बंध में है। वे महान विभूति आध्यात्मिक मार्गदर्शक, शिक्षा शास्त्री, दार्शनिक, परोपकारी, पुण्य आत्मा हैं। वे प्रेम और दया के अवतार हैं। अब उनकी जन्मशताब्दी मनाई जा रही है। व्यस्त होते हुए भी वे न केवल भारत के विभिन्न नगरों किन्तु विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर शान्ति व प्रेम का संदेश देते हैं। वे ऊथांट शान्ति सम्मान से सम्मानित हुए हैं। उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत है।

आओ मिलकर गाएं

'आओ मिलकर गाएं' मेरे हिन्दी बाल गीतों का संग्रह है। इस पुस्तक का आरंभ सरस्वती वंदना से किया गया है। प्रति एक बालक को सरस्वती वंदना गानी चाहिए। सरस्वती माता की स्तुति गाने से विद्या की प्राप्ति होती है। प्रार्थना गीत में प्रभु को प्रार्थना करते हुए मैंने लिखा है :-

दया करो भगवान हम पर दया करो।

बुरा न देखे बुरा न बोलें, बुरा सुने ना, दो सत् ज्ञान,

दया करो भगवान हम पर दया करो।

दीन दुखियों की सेवा करें हम, पर हित जीवन दान,

दया करो भगवान हम पर दया करो।

पर पीड़ा में हम मुरझायें, स्व पीड़ा में दो मुस्कान,

दया करो भगवान हम पर दया करो।

उपर्युक्त गीत में महात्मा गांधी के आदर्शों का समावेश है। 'भारत वर्ष महान' एवं 'भारत जननी' गीतों द्वारा मैंने भारत देश की महिमा गाते हुए बच्चों में देश भक्ति का संचार किया है। 'वर्षा रानी' गीत में मैंने वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए लिखा कि वर्षा में बच्चे कितने न प्रफुलित होकर खेलते हैं।

आजकल कई बहिनें नौकरी करती हैं। 'मेरी मैया' गीत में एक बालक माता के आने की प्रतिक्षा करते हुए कहता है :-

मेरी मैया आयेगी,
मोटर गाड़ी लायेगी।
पपा ने है झूला लाया,
झूले में झूलायेगी।
मधुर मधुर गाकर लोरी,
मैया मेरी सुलाएगी - मैया मेरी आयेगी।
पढ़ी लिखी है मेरी मैया,
मुझे भी खूब पढ़ायेगी, मेरी मैया आयेगी।

इस संग्रह में मैंने, महात्मा गांधी, श्री लाल बहादुर शास्त्री, शहीद प्रेम रामचंदाणी के सम्बंध में भी गीत लिखे हैं। महात्मा गांधी के सम्बंध में लिखा :-

आओ अहिंसा के अवतार!
करता याद तुम्हें संसार!
सत्य स्नेह की ज्योति जगाई।
लाखों को तू ने राह बताई।
हो गई क़ौम की किश्ती पार।
आओ अहिंसा के अवतार!
तूने किया भारत आज़ाद।
हम करेंगे शाद आबाद।
होगा तेरा स्वप्न साकार।
आओ अहिंसा के अवतार!

प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के सम्बंध में लिखा:-

त्याग तपस्या के प्रतीक,
तू निपुण नेता निर्भीक,
तू था वामन का अवतार,
तेरा गुण गाता संसार,
तेरा जीवन प्रेरणादायक,
तू था प्यारा जन मन नायक।

शहीद प्रेम रामचंदाणी की कुरबानी का उल्लेख करते हुए लिखा :-

वतन के लिये दे दी तू ने जवानी,
रहेगी सदा याद तेरी कहानी,
तू ने मां के दूध की कीमत चुकाई,
शहादत है तेरी अमर अब निशानी,

इन गीतों द्वारा मैंने देश भक्ति का संदेश दिया।

माताओं को लोरी द्वारा संतान में शुभ संस्कारों का संचार करना चाहिए। 'लोरी' गीत की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं :-

सोजा सोजा राज दुलारा।
सोजा आँखों का तू तारा।
वीर तू बनना, धीर तू बनना।
सत्य सेवा के पथ पर चलना।
दीन दुखियों का बनना सहारा।

सोजा सोजा राज दुलारा!
कड़ी लता की भाँति बढ़ना ।
वंश का ऊँचा नाम तू करना ।
तू है मुझे सब से प्यारा ।
सोजा सोजा राज दुलारा!

एक गीत में मैंने गाय माता की महिमा गाई है । गऊ हमारी माता है, देश धर्म का नाता है ।

श्री कृष्ण की बाँसुरी सुनकर तू दौड़ दौड़ आती,
सब ही देवता निवास हैं करते, तू है सुख दाता,
जय जय गऊ माता! जय जय गऊ माता ।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष को मैया तू देती,
दुख हरती तेरे द्वार पर 'आशा' श्रद्धा से आता ।
जय जय गऊ माता! जय जय गऊ माता ।

मैंने एक गीत द्वारा जीव दया का संदेश देते लिखा है :

लाखों लोग मांसाहारी हैं । हम मानव हैं दानव नहीं । मानव होकर हमें मांस भक्षण का परित्याग करना चाहिए ।

जीव दया की ज्योति जगाओ!
मानव जीवन सफल बनाओ ।

'प्रेम' गीत द्वारा मैंने प्रेम का पैग़ाम देते हुए कहा :-

मधुर बचन तू मुख से बोलो,
सब को प्रेम से गले लगाओ,

प्रेम अमृत की धारा सम है,
तू भी पीओ और जग को पिलाओ,
प्रेम से पशु पक्षी वश होते,
प्रेम की प्यारे बीन बजाओ ।
वचन विचार से प्रेम ही झलके,
कभी किसी का दिल न दुखाओ,
द्वैत-द्वेष की आग जलाती,
प्रेम के पानी से तू बुझाओ ।
प्रेम ही है जीवन का सार,
प्रेम से जीवन सफल बनाओ ।

आज के युग में प्रेम की अत्यंत आवश्यकता है । बच्चपन में ही बालकों में भाईचारे की भावना उत्पन्न करें ।

इस बाल गीत संग्रह में प्रभु श्री राम, भगवान श्री कृष्ण, जगदम्बा माता, श्री हनुमान, अमर उडेरोलाल की स्तुति भी गाई है तो सिन्ध के महान संतों साधु टी.एल वासवाणी, आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, कर्मयोगी संत स्वामी शान्तिप्रकाश महारा, प्यारे दादा जशन वासवाणी की महिमा भी गाई है ।

'जो' गीत में कुछ शिक्षाएं देते हुए कहा है :-

जो क्षमा करे वह इन्सान है,
जो घमंड करे वह नादान है ।

जो दूध में ज़हर मिलाता है,
वह तो बड़ा शैतान है ।
केवल अपना पेट भरे जो,
वह मनुष्य नहीं हैवान है ।
दुखियों के जो आंसू पोंछे,
वही तो संत सुजान है ।
जो मालिक बनकर दास बने,
वह व्यक्ति बड़ा महान है ।
निर्बल की जो रक्षा करता,
वही सच्चा बलवान है ।
दरिद्र नारायण की सेवा करे,
वही सच्चा धनवान है ।
जो सब प्राणियों को प्यार करे,
वह 'आशा' स्वयं भगवान है ।

मेरे बाल गीतों में मनोरंजन कम, शिक्षा अधिक है । आज कल के दूषित वातावरण में शुभ संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है, इसलिए मैंने बाल गीतों द्वारा शुभ संस्कारों का संचार करने का प्रयत्न किया है ।

मेरे बाल गीतों में गेयत्व है इस लिए गीत अच्छी तरह गाए जा सकते हैं ।

स्वामी देवप्रकाश महाराज

(जीवन चरित्र)

महान कर्मयोगी संत सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के उत्तराधिकारी आचार्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज कर्मठ संत हैं। उनके जीवन में भक्ति, ज्ञान व कर्म का सुंदर समन्वय है। वे सादगी एवं विनम्रता की मूर्ति हैं। उन्होंने अपने गुरुदेव सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकशा महाराज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया है। उन्होंने हरिद्वार में स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा आश्रम का निर्माण किया। हजारों यात्री उसका लाभ उठा रहे हैं। वहाँ यात्रियों के मुफ्त रहने व भोजन की व्यवस्था है, हर प्रकार की सुविधा है। स्वामी देव प्रकाश महाराज ने यात्रियों की सुविधा के लिए ब्रजभूमि में भी स्वामी शान्तिप्रकाश धाम का निर्माण किया है। स्वामी देवप्रकाश जी महाराज स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम ट्रस्ट, जनता जनार्दन परिषद, श्री राधेश्याम गौशाला, सुंदर सेवक सभा, स्वामी सर्वानन्द हास्पीटल, स्वामी शान्तिप्रकाश योगा एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, स्वामी शान्तिप्रकाश विद्या संस्थान, स्वर्गधाम शमशान भूमि एवं अन्य कई संस्थाओं के अध्यक्ष हैं। वे विद्वान आचार्य

हैं किन्तु विनम्रता व सादगी के स्वरूप हैं। वे देश विदेश में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज की ज्योति प्रज्ज्वलित कर रहे हैं।

राष्ट्रीय संत मुरारी बापू ने आचार्य स्वामी देवप्रकाश महाराज के सम्बंध में लिखा है :-

इस पूरी परोपकारी संस्था के संत परम्परा को मेरा प्रणाम।

स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के जन्म शताब्दी के मंगल उत्सव पर मुझे आने का मौका मिला। स्वामीजी का शुभ संकल्प था कि उल्हासनगर में कथा हो। प्रारब्ध वश पूज्य महाराज अपना संकल्प रख करके पांच भौतिक रूप से विदा हो गये लेकिन चेतना रूप से पूज्य देव प्रकाशजी महाराज में समाये हुए हैं। वैसे तो सद्गुरु की कई प्रकार की समाधियाँ होती हैं, लेकिन एक स्थूल स्मरण है कि सद्गुरु की समाधि उनका अधिकारी और योग्य शिष्य ही होता है। उद्धार सत्गुरु के अधिकारी शिष्य चलती फिरती उनकी समाधि हुआ करती है। संत पुरुष अपने जीवन में सरल होते हैं। मैंने स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज में सरलता के दर्शन किये, और वही सरलता अब पूज्य स्वामी देव प्रकाशजी महाराज में भी विद्यमान है। अब तो महाराज जी गादी पर बैठे हैं तो सब जानते हैं अकेले घूमने निकलें तो ये संस्कृत में आचार्य हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त हैं, इतने पढ़े लिखे हैं। कौन जाने? ये सिंधी नहीं पर ज्ञान भक्ति और वैराग्य के सिंधू हैं। ये एक बहुत अच्छे श्रोता हैं। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त कर रहा हूँ। मैं व्यासपीठ की ओर से बाबाजी के

जन्म दिन के अवसर पर बधाई दे रहा हूँ। मैं मेरी खुशी व्यक्त करते हुए प्रणाम करता हूँ कि स्वामीजी हमको बहुत वर्षों तक आशीर्वाद देते रहें भक्तों को जीवन प्राप्त होता रहे। आपकी सेवा से आपके स्मरण से -

तुम्हें और क्या दूँ, मैं दिल के सिवाय,

तुमको हमारी उम्र लग जाय।

संत मुरारी बापू

प्रसिद्ध संत रमेश भाई ओझा ने स्वामी देवप्रकाश महाराज के सम्बंध में कहा :-

पूज्य महाराजजी और उपस्थित वन्दनीय संत वृन्द और आप सभी भक्तजन आप लोगों के लिये जितने आनन्द की बात है और उतना ही मेरे लिये प्रसन्नता की बात है।

पूज्य महाराजजी के शताब्दी महोत्सव में भी भागवत कथा के माध्यम से उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आज जब १०१वाँ महोत्सव मना रहे हैं जन्म जयन्ती का तो उस अवसर पर भी पुन: एक बार पूज्य स्वामीजी के प्रेम ने और आप सभी के स्नेह ने खींच लिया, लेकिन महापुरुषों का प्रभाव आज भी उतना ही है जो खींचकर पकड़के हमको ले आता है। उसका क्या कारण है? अभी वहाँ बैठे थे और पूज्य महाराजजी से चर्चा कर रहे थे। मैंने कहा महाराजजी कितने दिन तक विदेश में विचरण हुआ, बोले ४० दिन तक। महाराजजी ने कहा हमको तो बोलना आता नहीं प्रवचन करना आता नहीं लेकिन जाते हैं और लोगों से मिल ही आते हैं। गुरु महाराजजी की खेती है

और जरा देख के आते हैं । मैंने कहा महाराजजी प्रवचन कोई मायिना नहीं रखता प्रेम की बात ही पकड़ती है । देखिये कितनी महाराजजी की सरलता ।

समर्थ सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का प्रादुर्भाव दिवस और उनका लीला संवरण दिवस बीच में उनकी चेतना के रुप में प्रगट स्वामी देव प्रकाश जी महाराज । जैसे पुत्र को देखकर पिता का परिचय मिलता है और शिष्य को देखकर गुरु का परिचय मिलता है । मैं सरल संत स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को देख रहा हूँ तो स्वाभाविक रुप से स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की याद आ रही है । ऐसे सद्‌गुरु का सान्निध्य जिसने प्राप्त किया, जब शिष्य इतने सरल संत हैं, तो स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज कितने सरल सहज और सुलभ होंगे ।

संत रमेशभाई ओझा

इस पुस्तक में मैंने स्वामी देवप्रकाश महाराज का बचपन से सन् २००७ तक जीवन चरित्र चित्रत किया है । स्वामी देवप्रकाश महाराज एक व्यक्ति नहीं स्वयं एक संस्था हैं । उनका कर्मयोगी जीवन आज के संतों के लिए प्रेरणा का स्रोत है । वे मेरे सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी हैं । मुझे स्नेह व सम्मान देते हैं । सेवा कार्यों में मेरा उत्साह बढ़ाते हैं, उसी श्रद्धा व निष्ठा के साथ मैंने उनका यह जीवन चरित्र लिखा है । इस हिन्दी पुस्तक का विमोचन १ जनवरी २००८ स्वामी देव प्रकाश महाराज के जन्मदिन, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष श्री नंद किशोर नौटियाल जी ने किया ।

वंदना के स्वर

वंदना के स्वर मेरे भक्ति गीतों का संग्रह है। कुछ वर्ष पूर्व 'वंदना के स्वर' का प्रथम छोटा संग्रह प्रकाशित हुआ। इस भक्ति काव्य संग्रह के आमुख में डॉ. सी एल प्रभात लिखते हैं :

डॉ. दयाल 'आशा' एक कर्मठ विद्वान और प्रख्यात शिक्षा शास्त्री हैं। विश्व विद्यालय की बड़ी से बड़ी उपाधियां उनके नाम को अलंकृत करती हैं। एक बड़े कॉलेज के ये एक लोकप्रिय प्रिंसिपल रहे हैं। अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् भी मुम्बई विश्वविद्यालय के सिंधी के शोध-निर्देशक हैं। सरकारी और अर्द्ध सरकारी संस्थानों के अनेक आदरणीय पुरस्कार इनकी झोली में पड़े हैं। पर, आशाजी मूलतः एक भक्त हैं। ईश्वर ने इन्हें मधुर स्वर और कोमल स्वभाव दिया है, जिसकी सहायता से ये 'लोक-सेवा' के कार्य को पूजा की पवित्रता और साधक की निस्पृहता के साथ करते हैं। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा 'विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृह। निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम् अधिगच्छति।' (जो पुरुष संपूर्ण कामनाओं को त्यागकर, ममता रहित, निरहंकार और निःस्पृह होकर कार्य करता है, वह शान्ति को प्राप्त होता है) यह एक दैवी संयोग है कि दयाल आशा स्वामी श्री शान्तिप्रकाशजी के प्रिय शिष्य और

साधु वास्वाणीजी के परम भक्त ही नहीं हैं, स्वयं शान्ति और भक्ति के प्रतिरूप भी हैं। इसलिए इनकी कविता की मूल भावभूमि भक्ति की है। वास्तव में भक्ति के आवेश में जब ये गाते हैं, तो इनका मधुर स्वर उसे गीत बना देता है। कविता तो एक प्रकार से इनके भक्तिभाव की बाइ प्राडक्ट मात्र है।

दयालजी का यह नया काव्य संग्रह भक्ति के साथ ही साथ राष्ट्रीयता की भावना से भी ओतप्रोत है। स्वामी शान्ति प्रकाश जी का मंत्र था 'जय श्री कृष्ण' (जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण श्रेष्ठ मंत्र वे जपते थे) दयाल आशा भी यही कहते हैं : मीरा सूर की भाँत तू / गान गाओ इक कान्हा का / 'श्याम सुंदर तू दरस दिखाजाः' (आदि)। गांधीजी से भी इनकी कविता प्रभावित है, जो इन्हें अपने युग परिवेश से जोड़ती है। ये कहते हैं बुरा न देखें, बुरा न बोलें, बुरा सुने ना, दो सत् ज्ञान 'दीन दुखियों की सेवा करें हम करें परहित जीवन दान।' वास्तव में यह इनके जीवन का मूल मंत्र है। सेवा के अतिरिक्त गहरी आध्यात्मिक चेतना की भाव व्यंजना करनेवाले कुछ मार्मिक गीत भी इस संकलन में हैं।

एक अपरिचित घर में आया, मैं उसको पहचान न पाया।

मैं सोया था अवचेतन में, वह आया मन के आँगन में।

आकर उसने मुझे जगाया, मैं उसको पहचान न पाया।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ दयाल 'आशा' एक कर्मठ लोक सेवी भावुक भक्त हैं। बहुत व्यस्त हैं, पर बिल्कुल अस्त - व्यस्त नहीं हैं। बहुत व्यवस्थित हैं। कभी कभी तो आश्चर्य

होता है कि वे इतना लिख-पढ़ कैसे लेते हैं? इन्हें समय कब मिलता है? पर, वे लिखते हैं और छपाते हैं। यह ईश्वर की कृपा है। जब वे अपने भक्ति गीत गाते हैं, तो इनके गीतों की प्रति उदासीनता रख पाना सामान्य श्रोता के वश की बात नहीं रहती। लोग मंत्र मुग्ध होकर सुनते हैं और भावावेश में अन्त में एक स्वर में पंडाल गूँज उठता है - 'बोलो श्रद्धा से झूलेलाल!' कई कैसेटें भी इनके गीतों की तैयार हुई हैं, जो भक्तों में बहुत लोकप्रिय हैं। आशा है कि इनकी भावी जीवनयात्रा एक लोकार्पित कवि भक्त के रूप में अवश्य आदरणीय होगी।

स्व: डॉ.सी.ए.प्रभात

आचार्य स्वामी देव प्रकाश जी महाराज ने उपर्युक्त पुस्तक के लिए शुभ मंगल कामनाएं देते हुए लिखा :-

परम पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के प्यारे डॉ. दयाल 'आशा' समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री होने के साथ साथ लेखक, कवि, गायक एवं भक्त हृदय भी हैं। उनके अन्त:करण से निकली वाणी मन को छू जाती है। इनकी कृतियाँ पढ़ने, समझने योग्य हैं। मुझे प्रसन्नता है कि इनका भक्ति काव्य 'वंदना के स्वर' प्रकाशित होने जा रहा है। इस काव्य संग्रह के भजन अन्त:करण के अलौकिक भाव से भरे हैं। 'सरस्वती वंदना' तो सचमुच वंदनीय व गायनीय है। भगवान श्री कृष्ण, प्रभु श्री राम, भगवान श्री शंकर, श्री दुर्गा माता, 'सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश' के संबंध में लिखी रचनाएं भी प्रशंसनीय हैं। ज्ञान, प्रेमा भक्ति, जीव दया, जगत् की नश्वरता, विरह आदि संबंधी भजन पढ़कर पाठक विमुग्ध हो जाते हैं। डॉ. दयाल

'आशा' पर गुरुदेव स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की विशेष कृपा रही है और रहेगी ।

स्वामी देवप्रकाश

मैं सरस्वती सुपुत्र हूँ । उनकी असीम अनुकम्पा से मैंने सिन्धी, हिन्दी व अंग्रेजी में करीबन ८० पुस्तकें लिखी हैं, कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं । इस लिये 'वंदना के स्वर' का प्रथम गीत सरस्वती वंदना है । मां सरस्वती देवी की महिमा गाते हुए प्रार्थना की है । यह गीत बहुत ही प्रसिद्ध हुआ है और विद्यालयों में और कई कार्यक्रमों में गाया जाता है ।

सरस्वती माता! विद्या का दान दो ।
अपने चरणों की भक्ति और ज्ञान दो ।

१) लालसा के मोती हैं बिखरे पड़े,
सत्य के मार्ग चलूँ पहचान दो ।
सरस्वती माता! विद्या का दान दो ।

२) वीणा वादनी माँ तेरी है जय जयकार,
वंदना माता करूँ वरदान दो ।
सरस्वती माता! विद्या का दान दो ।

३) तू विद्या की देवी तुझको नमस्कार,
मैं अज्ञानी तेरा बालक भान दो ।
सरस्वती माता! विद्या का दान दो ।

४) शक्ति दो जीवन में नहीं बनूँ मैं निराश,
मॉं! मुझे फूलों जैसी मुस्कान दो।
सरस्वती माता! विद्या का दान दो।

५) मॉं! तेरे दर्शन की 'आशा' है मुझे,
अपने चरणों का मुझे तू ध्यान दो।
सरस्वती माता! विद्या का दान दो।

उपर्युक्त काव्य संग्रह में मेरे २ राष्ट्रीय गीत हैं। उन से मेरी देश भक्ति की भावना झलकती है। ये गीत भी सी.डी में भरे हैं और गाये जाते हैं -

भारत जननी तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।
तेरी गोद में जन्में हैं श्याम सुंदर प्रभु राम।
जय हो ज्योतिर्मय हो देश हमारा हिन्दुस्तान।
स्वर्णमय हो मंगल मय हो भारत वर्ष महान।

उपर्युक्त पुस्तक में मेरे ५८ दोहे और १०० भक्ति गीत हैं। मेरे दोहे भक्ति रस से भरपूर भी हैं तो शिक्षाप्रद, जीवन उपयोगी हैं। सत्गुरु की महिमा गाते हुए मैंने लिखा :-

सत्गुर की कृपा भई, दूर हुआ अज्ञान।
देखा सब में एक ही, घट घट में भगवान।।
सत्गुर की कृपा भई, हुआ प्रेम प्रकाश।
दीया तले अंधेरा था, हुआ उसका विनाश।।

प्रभु जो कुछ करता है, उस में हमारी भलाई है।

जो कुछ करता राम है, तेरे हित में जान।
तेरा ज्ञान सीमित है, चिन्ता कर न अजान।।

माया व मन के सम्बंध में लिखा :-

मन माया की उत्पत्ति, है माया सम चंचल।
जिस ने मन को वश में किया, सूरा सच्चा सबल।।

नाम की महिमा प्रतिपादित करते हुए लिखा :-

मधुर मधुर हरि नाम है, फीके जग के काम।
काम जगत् के छोड़कर, स्मरो हरि का नाम।।
नाम की नौका में चढ़ो, तो भवसिन्धु से पार।
पूर्ण तेरा सत्गुरु, नैया खेवन हार।।

जगत् के सम्बंध में लिखा :-

भूल भुलैया यह जगत्, मत भूलो इन्सान।
भूलो भूलो स्वयं को, तो मिल जाये भगवान।
यह जग यात्री भवन है, मत हो तू आसक्त।
अपने घर जाना तुम्हें, तू रहो अनासक्त।।

ब्रह्म के सम्बंध में लिखा :

जीवन के चलचित्र का निर्माता है एक।
निर्देशक, दर्शक वही, दृश्य उसके अनेक।।
ईश्वर दीन दयाल है, सब का पालनहार।
व्यापक है कण कण में, साक्षी सृजनहार।।

यदि हम प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं तो उन्हें आँसुओं का उपहार भेंट करें :

प्रभु को तू भेंट कर, आँसू का उपहार।

दर्शन देने आयेंगे, प्रभु तेरे द्वार।।

प्रस्तुत हैं मेरे कुछ शिक्षाप्रद दोहे :-

१. स्मरण सेवा सादगी, सत्य स्नेह गुण पांच।
जिसमें ये गुण हैं सदा, लगे न उसको आंच।।

२. कड़वा कभी न बोलिए, सब में रमता राम।
मधुर बोल तू बोलिए, गले लगाये श्याम।।

३. बांवर करो न बांवरा, तू तो जल की फेन।
जो कुछ तेरे पास है, वह दाता की देन।।

४. माया का विस्तार ही, देता बहुत ही दुख।
राम नाम धन सदा, देता सच्चा सुख।।

५. क्रोधी क्रोध न कीजिए, क्रोध काल का रूप।
तन मन धन की हानि हो, हो सुंदर छवि कुरुप।।

६. घमंड गिराता जीव को, मत कर तू अभिमान।
तेरी हस्ती कुछ नहीं, प्रभु शक्तिवान।।

७. सेवा से सद्भाव मिले, कर तू सब की सेव।
सेवा से जीवन सफल, जय जय करते देव।।

८. मात पिता की सेव कर, मन में श्रद्धा धार।
पालन आज्ञा का करो, जीवन नैया पार।।

९. जिसके मन में प्रेम है, वह है भाग्यवान।
प्रेम की पूंजी है यदि निर्धन है धनवान।।
१०. करुणा की चाबी से खुलता मोक्ष द्वार।
जिसके मन में है दया, उसका होत उद्धार।।
११. 'आशा' भोग रोग को देत है, करो भोग का त्याग।
प्रभु मिलन की प्यास है, छोड़ो द्वेष व राग।।

दोहों में मात्राओं व अन्तयानुप्रास का अच्छी तरह निखार किया गया है।

मैंने जग जननी शक्ति, जगदम्बे देवी माता के सम्बंध में कई गीत लिखे हैं। उनके प्रति मेरे मन जो श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा है, वह मेरे इन गीतों से प्रतिभासित होती है। ये गीत मेरे अंतर आत्मा की आवाज़ हैं। मां को सम्बोधित करते हुए नवरात्रों में रात के १२ बजे निम्न गीत की रचना हुई :-

जब तेरी स्मृति आती है,
सुप्त आशाओं को जगाती है।
१. तेरा चिन्तन करते करते माँ!
नींद नेत्रों से खो जाती है।
२. मैं स्व को खो कर तुझको पाऊँ।
और चीज न मन को भाती है।
३. ये दुनिया है दुख की नगरी,
माया की लहर लहराती है।

४. इस लहर से कोई लाल बचे,
जिस को न कोई आसक्ति है।
५. स्थूल का कोई अस्तित्व नहीं,
अशक्त हूँ तू मेरी शक्ति है।
६. तेरा ही निरन्तर ध्यान रहे,
माँ! तेरी स्मृति भक्ति है।

मैंने एक बालक के रूप में माता जगदम्बा की शरण लेते हुए पुकारा :-

आया तेरी शरण में माँ!
मेरी बिगड़ी बनादे तू माँ!
१. उपहार मेरे आँसू,
स्वीकार तू कर दे माँ!
२. मेरी डूब रही नैया,
उसे पार लगा दे माँ!
३. मैं जन्मों से तृषित,
तू सुधा पिला दे माँ!
४. आती नींद नहीं मुझको,
तू गोद सुला दे माँ!
५. 'आशा' प्यासी दर्शन का,
तू दरस दिखादे माँ!

देवी माता के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए मैंने उनकी स्तुति गाई और अपनी अभिलाषा प्रकट की है। मुझे एक ही आस और एक ही प्यास है, केवल दर्शन की -

जग जननी जय अम्बे माता तेरा गाऊँ गान
तेरी लीला अपरम्पार, तेरा सर्वोपरि स्थान

१. सरस्वती तू वैष्णवदेवी, काली माता लाटां वाली
अनन्त रूप तुम्हारे हैं, कर न सकूं मैं बखान

२. भाग्यहीन का भाग्य बनाती, ज्ञान प्रेम की राह दिखाती
आदि शक्ति तू हो माता, विधि का बदलती विधान

३. शुंभ निशुम्भ को तूने मारा, किया दुष्टों का संहार
भक्तों की तू रक्षा करती, माँ तू ही हो भगवान

४. जो भी तेरे द्वार पै आया, वह हो गया मालामाल
कष्ट क्लेश तू हरती, उसकी मुश्किल हो आसान

५. अगणित हैं उपकार तुम्हारे, क्या दूँ मैं उपहार
प्रेम के पुष्प चढ़ाऊं माता, दो भक्ति का वरदान

६. "आशा" को अभिलाषा तेरी, और न जग की आस
दया दृष्टि कर तू माता, मैं बालक हूँ अनजान

मेरे मन में श्री श्याम सुंदर भगवान श्री कृष्ण के दर्शन की भी प्यास है। उनके विरह में निम्न गीत लिखा :-

कब दर्शन दोगे मुरारी?
मैं बिरह की मारी मारी!

१. रो रो के मैं आँखें बिछाऊँ,
मन मंदिर में तुम्हें ध्याऊँ,
स्वास स्वास से तुम्हें ध्याऊँ,
यूं बीती है जीवन सारी,
कब दर्शन दोगे मुरारी।
२. जल बिन तड़पत मीन है जैसे,
तुझ बिन व्यथित प्रियतम वैसे,
तृषित की तू प्यास बुझाओ,
अब आन मिलो गिरिधारी;
कब दर्शन दोगे मुरारी।
३. जीवन ज्योति बुझ जायेगी,
करूणा तुम्हें क्या तब आयेगी?
मैं न रहूँगी मेरी भस्म मिलेगी,
तू लौट जाओगे बिहारी,
कब दर्शन दोगे मुरारी।
४. 'आशा' के उपवन में आओ,
आकर स्नेह सुधा बरसाओ।
तेरी अनुकम्पा से होगी,
पल्लवित पुष्पित, कियारी।
कब दर्शन दोगे मुरारी।

भगवान श्री कृष्ण के प्रति मेरी कितनी निष्ठा है, मैं कितना भावक हूँ, अपनी मनो दशा का चित्र चित्रित करते हुए लिखा :

भीगे भीगे नयन हैं मेरे ।
आतुर हैं दर्शन के तेरे ।
१.दिन को तेरी राह निहारूँ,
रात को रो रो कर मैं पुकारूँ,
आयेगा क्या सुबह सबेरे?
भीगे भीगे नयन हैं मेरे!
२.कब आओगे कृष्ण मुरारी?
श्याम सुंदर तू ब्रज बिहारी,
तू भक्तों के, भक्त हैं तेरे,
भीगे भीगे नयन हैं मेरे!
३.तेरी छबि आँखों में समाऊँ,
और न किसका ध्यान ध्याऊँ,
उत्सुक 'आशा' तेरे घनेरे,
भीगे भीगे नयन हैं मेरे!

मैं सगुण उपासक हूँ। प्रभु श्री राम के प्रति भी मेरी वही निष्ठा है जो योगेश्वर श्री कृष्ण के प्रति है, प्रभु श्री राम की आराधना करते हुए उनकी महिमा गाई :-

सियाराम जपो मन प्यारे,
जो सगले दुख निवारे ।

१. रात अमावस की हैं अंधेरी,
डूब रही है नैया मेरी,
राम ही भव सिन्धु से तारे,
सियाराम जपो मन प्यारे।

२. राम का नाम अमूल्य मोती,
राम का नाम अनूपम ज्योति,
अंदर बाहर हो उज्यारे,
सियाराम जपो मन प्यारे।

३. राम के नाम से पत्थर तर गये,
खाली झोली 'आशा' भर गये,
जो आया उनके द्वारे,
सियाराम जपो मन प्यारे।

दूसरे एक गीत में भी मैंने प्रभु श्री राम की स्तुति गाते हुए लिखा :-

तू हो मेरे रक्षक राम
सब से बड़ा है तेरा नाम।

१. सूली से तू कांटा बनाता,
काँटो में तू फूल खिलाता,
तू डूबी नैया पार लगाता,
सम्भव करता असम्भव काम,
तू ही हो मेरे रक्षक राम!

२. शबरी को तू ने गले लगाया,
झूठे बेर तूने प्रेम से खाया,
शबरी चरण सर साफ बनाया,
तब ऋषियों ने पाया विश्राम,
तू ही हो मेरे रक्षक राम।
३. जो भी तेरी शरण में आता,
मन वाँछित फल वह है पाता,
भव सिन्धु से तर वह जाता,
"आशा" चरणों में चारों धाम।
तू ही हो मेरे रक्षक राम।
रघुपति राघव राजा राम।
पतित पावन सीताराम।।

उपर्युक्त गीतों से मेरी आस्तकता एवं आस्था प्रतिभासित होती है।

जब मैं चाँदीबाई मन्सुखाणी कालेज के पद पर अपने कार्यालय में बैठा था, तब एक दिन मेरी अंतर आत्मा बोल उठीः-

धन की धुन में मन की धुन में,
भूल गये क्यों राम को?
जन्म लिया जिस कारण जग में,
भूल गये उस काम को!

१. काल नगारा बाज रहा है,
तू बहरा बन क्यों बैठा?
मोह नींद से जाग प्यारे,
चलना है हरि धाम को।
भूल गये क्यों राम को।
२. दीन दुखियों की सेवा कर तू,
दीनों में भगवान है,
ऊठत बैठत सोवत जागत,
जपले तू हरिनाम को।
भूल गये क्यों राम को।
3. जन्म जन्म से प्यासी 'आशा'
बहुत जन्म तू खोये,
अब तो पी ले पी ले प्यारे,
प्रेमा अमृत जाम को।
भूल गये क्यों राम को।

मैंने उपर्युक्त पुस्तक में कुछ विभूतियों साधु टी.एल. वासवाणी, प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज व दादा जशन वासवाणी के सम्बंधति कविताएं लिखी हैं। उनके कर्मयोगी परोपकारी जीवन का काव्य में वर्णन किया है।

प्रभात के समय उठकर गुरु मंत्र का जाप करना चाहिए।

साधक को सम्बोधित करते मैंने लिखा :-

सोने का अब समय नहीं है,
ऋषियों ने यह बात कही है ।
१. ब्रह्म मुहूर्त अमृत वेला,
भजन करो तुम बैठ अकेला,
सुरति शब्द की करो सगाई,
शास्त्रों की यह बात सही है,
सोने का अब समय नहीं है ।
२. श्वासों के मत हीरे गंवाओ,
स्मरण में तू सफल बनाओ,
जो सोया उसने है खोया,
जीवन बीती जाती रही है,
सोने का अब समय नहीं है ।

साधु टी.एल. वासवाणी, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज एवं दादा जी.पी. वासवाणी की प्रेरणा से मैं स्वयं शाकाहारी बना और अब हजारों विद्यार्थियों एवं भाई बहिनों को मैंने शाकाहारी बनाया है । जीव दया की ज्योति जगाने के लिए मैंने निम्न गीत की रचना की । यह गीत गाते हुए मैं जीव दया का प्रचार करता हूँ ।

जीव दया की ज्याति जगाओ!
मानव जीवन सफल बनाओ ।

१. सब प्राणी हैं, रूप प्रभु के,
तू सब को गले लगाओ ।
२. मानव दानव मत बन तू,
तू स्नेह सुधा बरसाओ ।
३. यह तन है मंदिर मालिक का,
तू मांस कभी नहीं खाओ ।
४. जो बोएंगे वह पाएंगे,
तू सच्चे कर्म कमाओ ।
५. घट में दया नहीं मरघट है,
तू रूप दया का बन जाओ ।
६. जो तुझ में वह सारे जग में,
'आशा' कभी न किसको सताओ ।

'भला करो' गीत में मैंने सब का भला करने का संदेश देते हुए और भी जीवन उपयोगी शिक्षा दी है :-

भला करो तू भला करो,
जग सारे का भला करो।
१. घृणा कभी न किससे करना,
मत द्वेष की आग में जला करो।
भला करो तू भला करो।

२. मत बन कैंची किसको काटो,
सुई की भाँति सिला करो।
भला करो तू भला करो।

३. भला करेगा भला ही होगा,
सब को प्यार से भरा करो।
भला करो तू भला करो।

४. कष्ट कंटकों के काँटों में,
गुलाब की भाँति खिला करो।
भला करो तू भला करो।

५. निंदा न सुनना, निंदा न करना,
तू पर निंदा से टला करो।
भला करो तू भला करो।

६. सब को रूप प्रभु का समझकर,
प्रेम से 'आशा' मिला करो।
भला करो तू भला करो।

परमात्मा सर्वव्यापी है, वह विभिन्न रूपों में हमारे पास आता है, किन्तु हम उसे पहचानते नहीं, लौटा देते हैं। दीन दुखी अपाहिज, सब ही प्राणी प्रभु के रूप हैं :-

बार बार प्रभु है आया।
किन्तु तुमने उसे लौटाया।

१. कभी भूख मिटाने आता है,
कभी प्यास बुझाने आता है।
उसने आकर अलख जगाया,
किन्तु तुमने उसे लौटाया।
२. कभी सूरदास बन आता है,
और मधुर स्वर में गाता है।
प्रेमा भक्ति जाम पिलाया,
किन्तु तुमने उसे लौटाया।
३. कभी अपाहिज, तो कभी अनाथ।
किन्तु वह नाथों का नाथ।
है सब में एक समाया,
किन्तु तुमने उसे लौटाया।
४. पशु पक्षियों में ज्योति उसीकी,
जलचर नभचर शक्ति उसीकी।
काट काटकर उनको खाया,
किन्तु तुमने उसे लौटाया।
५. बहुत जन्म से तू है सोया,
सोते सोते बहुत है खोया।
जागो ईश उपहार है लाया।
किन्तु तुमने उसे लौटाया।

६. कभी न किसका करा तिरस्कार।
'आशा' सब से करो प्यार।
प्रियतम तेरे द्वार पै आया।
किन्तु तुमने उसे लौटाया।

ब्रज भूमि में बाढ़ आयी तब मैं अपने साथियों के साथ बाढ़ पीड़ितों को सहायता करने के लिए ब्रज में गया था। साक्षी गोपाल मंदिर में गया, एक मिनट पहले पुजारी ने पटल बंद किया। मैंने पुजारी से विनती की कृपया मुझे दर्शन करने दो, मुझे लौट जाना है। पुजारी ने सुनी अनसुनी कर दी, मैं श्री बाँके बिहारी का दर्शन नहीं कर सका, तब पुजारी को सम्बोधित करते निम्न गीत की रचना हो गई :-

पुजारी! खोलो प्रभुका द्वार!
अब छोड़ो माया का व्यवहार!
१. प्रभु तो है भाव का भूखा,
जूठे बेर किये स्वीकार,
पुजारी! खोलो प्रभु का द्वार!
२. दूर से आया दर्शन के हित,
मत लौटाओ मैं करूँ दीदार,
पुजारी! खोलो प्रभु का द्वार!
३. प्रेम से जिसने प्रभु को पुकारा,
उसका करता बेड़ा पार,
पुजारी! खोलो प्रभु का द्वार!

४. पुष्पों में भी सुरभि नहीं है,
भैंट करूँ आँसू का हार,
पुजारी! खोलो प्रभु का द्वार!

५. श्याम छबि नयनों में बसत है,
गाऊँ लीला उसकी अपार,
पुजारी! खोलो प्रभु का द्वार!

६. विश्व व्यापक प्रभु 'आशा',
खड़ी की तू ने क्यों दीवार?
पुजारी! खोलो प्रभु का द्वार!

आज कल लोगों को भगवान का भय नहीं, वे भगवान को भी भूल गये हैं, ऐसे लोगों को सचेत करते हुए मैंने कहा :-

भजन करो भगवान का,
तू काम करो ईमान का।

१. घर में है अज्ञान अंधेरा,
तू दीप जगाओ ज्ञान का।

२. मीरा सूर की भांति तू,
गान गाओ इक कान का।

३. राख भयेगी सुंदर काया!
तू त्याग करो अभिमान का।

४. तू है मानव, मत बन दानव,
मत काम करो शैतान का!
५. पशु की भांति मत तू विचरो,
तू काम करो इन्सान का।
६. यह जग 'आशा' मरुस्थल है!
तू ख़्याल करो शमशान का!

मैं दरिद्र नारायण की सेवा करता हूँ। इसलिए अपने गीतों द्वारा स्नेह, सेवा, सहानुभूति, सत्य व शान्ति का संदेश दिया हैः-

गुण गोविन्द के गाओ! गोओ!
अपना जीवन सफल बनाओ।
१. मानव जीवन दुर्लभ जीवन,
व्यर्थ उसको नहीं गंवाओ।
अपना जीवन सफल बनाओ।
२. दीन दुखी संतान प्रभु की,
उनकी पीड़ा दर्द मिटाओ,
अपना जीवन सफल बनाओ।
३. चारों ओर अशान्ति अंधेरा,
तू प्रेम की ज्योति जगाओ।
अपना जीवन सफल बनाओ।

४. क्रोध विरोध करते हैं हानि,

सदा स्नेह सुधा बरसाओ।

अपना जीवन सफल बनाओ।

५. घृणा ईर्ष्या द्वेष त्याग कर,

'आशा' सब को गले लगाओ।

अपना जीवन सफल बनाओ।

इस काव्य संग्रह में मैंने गाय की महिमा गाते आरती लिखी, उस में गाय के दूध व मूत्र का महत्त्व भी बताया। गीतों के साथ कुछ काव्य बद्ध विचार भी व्यक्त किये हैं।

कुछ विचार प्रस्तुत हैं :-

१. काम जीव को अंधा बनाता।

क्रोधी अपनी नींद गंवाता।

२. जिसका नाम में है विश्वास।

वह परीक्षा में होगा पास।

३. लोभ कुत्ते के साथ खिलाता।

जन्म जन्म में मोह भटकाता।

४. साधक करो तू साधना।

मन में करो आराधना।

५. मन वचन व कर्म से सब का भला करो।

सत्य के मार्ग चलो, काहू से ना डरो।

६. शबरी के घर आये राम।

प्रेम के वश हैं सुंदर श्याम।

७. परछाई के पीछे मत दौड़ो।

गिर जाओगे संभल चलो।

प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ो।

८. जगत् पदार्थ दुःख देते हैं।

नाम पदार्थ सुख देते हैं।

९. जिसके मन में इश्क है, वह खुशनसीब है।

वह इन्सान फरिश्ता है, खुदा के करीब है।

मेरे भक्ति गीतों में शान्त रस प्रधान है और व्योग श्रृंगार गौण है। मैं स्वयं रचनाकार भी हूँ तो गायक भी हूँ। इस लिये मेरे भक्ति गीतों में संगीतात्मिकता है। मेरे इन गीतों में शब्द अलंकारों एवं अर्थ अलंकारों, रूपक उपमा उदाहरण आदि अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है। मेरे ये भक्ति गीत मेरी अंतर आत्मा की आवाज़ हैं। मेरे कुछ गीत मेरी आवाज़ में आकाशवाणी, विवध भारती एवं आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित होते हैं।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति सरदार ज्ञानी जायलसिंघ डॉक्टर दयाल ''आशा'' के शोध ग्रन्थ सिंधी कवियों की हिंदी साधना का अवलोकन करते डाक्टर दयाल ''आशा'' से पूछ रहे हैं।



२००१ में उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से लखनऊ में मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महावीर भाई डाक्टर दयाल ''आशा'' को सौहृद पुरस्कार प्रदान करते हुए साथ में खड़े श्री केंसरी नाथ त्रिपाठी।



हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से अध्यक्ष श्री श्रीधर शास्त्री डाक्टर दयाल ''आशा'' को उनके हिंदी साहित्य में योगदान के लिए विद्या वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित करते हुए।



केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से केंद्रीय शिक्षा
श्री शाही दिल्ली में डाक्टर दयाल ''आशा'
उनकी पुस्तक 'साहित्य सुरभि' के लिए पुरस्कार
करते हुए।



सन् २००१ में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकाद
ओर से महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री विल
देशमुख डॉ. दयाल ''आशा'' को उनकी कृति '
की महान विभूति दादा जशन वासवाणी'' के
काका काललेकर पुरस्कार प्रदान करते हुए साथ मे
शिक्षा मंत्री।

